



আস-সুলাই ইসলামী দা'ওয়া সেন্টার পোঃ বক্স নং ১৪১৯, রিয়াদ ১১৪৩১

ফোনঃ ২৪১০৬১৫, ২৪১৪৪৮৮ ফ্যাক্সঃ Ext. ২৩২ সাউদী আরব

মহান আল্লাহর মা'রিফাত

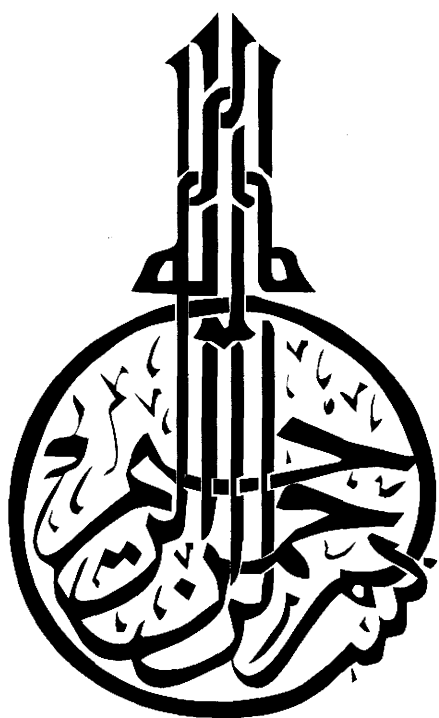
(কুরআন ও সুন্নাহর আলোকে)



লেখক
মুহাম্মাদ হারুণ হুসাইন

মহান আল্লাহর মাহিফাত

(কুরআন ও সুন্নাহর আলোকে)



كلمة المراجع

الحمد لله رب العالمين ، والعاقبة للمتقين ، والصلاة والسلام على رسوله
الأمين ، وعلى آله وصحبه أجمعين ، أما بعد...

لقد قرأت كتاب 'معرفة الله تعالى من الكتاب والسنة على فهم سلف الأمة
لمؤلفه (محمد هارون حسين) فسرني كثيراً ، ومن دواعي السرور أن مثل هذا
الكتاب المدلل في المعرفة يأتي في الأسواق بعد فترة من الزمن ، والجدير بأن هذا
الكتاب قد تناول رد على بعض المعتقدات الفاسدة في أسماء الله الحسنى وصفاته
العليا بالبراهين الواضحة ، وأنا أرى ان على علمائنا ان يطلعوا على هذا الكتاب ،
كما يُشكرفضيلة المؤلف بأنه أجاد و أفاد في جمع المواد العلمية حول هذا الموضوع
الدقيق،

معرفة الله تعالى موضوع مهم ودقيق ، ولا يخفى أن يُحتمل اظهار الشرك
والكفر في حالة التعدي عن الضوابط الشرعية في ذلك الموضوع الحساس ، وأنا
أعتقد أن هذا الكتاب لمؤله الفاضل تناول حلاً سلمياً في كثير من القضايا المتناولة
حول ذلك إن شاء الله تعالى ،

الله أسأل أن يمدد المؤلف بحياة طيبة و يعينه لمسيره إلى المستقبل المزهـر
والنجاح في الدارين .

مشرف حسين أخند

مترجم صحيح البخاري

والمرشد الديني في قناة (إ ، تي ، ين) بنغالة

كلمة المراجع

بسم الله والصلاة والسلام على رسول الله، وعلى آله وأصحابه ومن نهج على أثره واقداه . أما بعد ...

لقد قرأت كتاب "معرفة الله تعالى من الكتاب والسنة على فهم سلف الأمة" والذي قام بإعداده الأخ/ محمد هارون حسين الداعية باللغة البنغالية في المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بمحافظه الطائف، فوجدته كتاباً مفيداً في بابه، نافعاً في معرفة ذات الله وأسمائه الحسني وصفاته العلى، ومعرفة مذهب سلف الأمة بالأدلة، كما تناول الكتاب الرد على الصوفية والفرق الضالة الأخرى التي تنهج منهجاً يخالف الكتاب والسنة ومنهج سلف الأمة.

أسأل الله لنا وللمؤلف التوفيق لما يحبه ويرضاه، وأن يجعلنا جميعاً هداة مهتدين، وأن يوفقنا لخدمة دينه وإعلاء كلمته، إنه خير مسؤول.

وصل الله علي محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين .

أخوكم

أبو سلمان عبد الحميد الفيضي

الداعية بمكتب الدعوة بمحافظه المجمعة

مقدمة المؤلف

الحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله وعلى آله أصحابه ومن والاه . أما بعد..
 هذا الكتاب عبارة عن بيان توحيد المعرفة والإثبات، الذي هو احد قسمي التوحيد (المعرفة والإثبات والطلب والقصد). وإني قد ركزتُ في تأليف هذا الكتاب على ركن هام وهو البحث في الأسماء والصفات، والذي ينحرف فيه كثير من الناس، وخاصةً في القارة الهندية حيث أن معظم الناس يعتقدون في الأسماء والصفات اعتقاد الأشاعرة والماتريدية والمعتزلة، ويعتقدون في علو الله وفوقيته اعتقاد الحلولية أو أهل وحدة الوجود، وسبب انحرافهم بأنهم قدموا العقل على النقل واعتمدوا على آراء شيوخهم، ولاشك أن معرفة أسماء الله وصفاته توقيفية لا مجال للعقل فيها ، ولذا قد رتبْتُ هذا الكتاب على منهج أهل السنة والجماعة مستدلاً من الكتاب والسنة الصحيحة ونقلًا من كتب السلف، وبالأخص الكتب التالية :

- (١) مجموع فتاوى لشيخ الإسلام الإمام ابن تيمية (في الأسماء والصفات).
- (٢) الفوائد للإمام ابن القيم الجوزية .
- (٣) شرح العقيدة الواسطية لمحمد خليل هراس.
- (٤) شرح العقيدة الواسطية للشيخ محمد الصالح العثيمين .
- (٥) شرح العقيدة الواسطية للشيخ د. صالح بن فوزان الفوزان .
- (٦) شرح العقيدة الطحاوية لابن أبي العز الدمشقي .
- (٧) الجواب الكافي للإمام ابن القيم الجوزية .
- (٨) القواعد المثلى في صفات الله وأسمائه الحسنی للشيخ محمد الصالح العثيمين .

٩) كتاب أصول الإيمان في ضوء الكتاب والسنة، إعداد نخبة من العلماء - الشئون العلمية لمجمع الملك فهد لطباعة المصحب الشريف بالمدينة المنورة .

١٠) العقيدة الإسلامية للسيد سابق .

١١) وما يتعلق في الفرق والأديان :

-الفصل في الملل والأهواء والنحل للإمام ابن حزم الظاهري وبهوامشه الملل والنحل للشهرستاني .

-فرق معاصرة تنسب إلى الإسلام وبيان موقف الإسلام منها لغالبي بن علي عواجي .

-الموسوعة الميسرة في الأديان والمذاهب والأحزاب المعاصرة ، دار الندوة للطباعة والنشر والتوزيع - تحت إشراف د. مانع بن حماد الجهني .

١٢) وما يتعلق في التفسير :

- تفسير القرآن العظيم لحافظ ابن كثير .

- تفسير الطبري لابن جرير الطبري .

١٣) وما يتعلق في نقل الحديث إعتمدت علي الصحيحين وفي السنن ما حققه الألباني رحمه الله تعالى.

أسأل الله العلي القدير أن يتقبل هذا العمل المتواضع لوجهه الكريم ، ويرزقني الإخلاص فيه ويعمّ بنفعه المسلمين. وصلى الله على نبينا محمدٍ وعلى آله وصحابه أجمعين.

المؤلف

محمد هارون حسين

محتويات الكتاب

الباب الأول : المعرفة

- المعرفة لغةً وإصطلاحاً.
- المراد بالمعرفة.
- معرفة الله توقيفية.
- وسيلة معرفة الله تعالى.
- المعرفة عند الصوفية.

الباب الثاني : الأسماء والصفات

- هل الإنسان يدرك ذات الله تعالى.
- تعريف بأسماء الله الحسنی وصفاته العليا.

الباب الثالث : الفرق الضالة في الأسماء والصفات

- الجهمية : تعريف وبيان موقفهم في الأسماء والصفات.
- المعتزلة : تعريف وبيان موقفهم في الأسماء والصفات.
- الأشاعرة : تعريف وبيان موقفهم في الأسماء والصفات.
- الماتريدية : تعريف وبيان موقفهم في الأسماء والصفات.
- المشبهة : تعريف وبيان موقفهم في الأسماء والصفات.

الباب الرابع : القواعد في الأسماء والصفات عند أهل السنة والجماعة

- أسماء الله كلها حسنى وصفاته العليا.
- أسماء الله وصفاته توقيفية، لا مجال للعقل فيها.
- إثبات ما أثبت الله لنفسه وما أثبت له رسوله ﷺ .
- أسماء الله تعالى غير محصورة بعدد معين.
- أسماء الله الحسنى في القرآن الكريم.
- أسماء الله تعالى في الحديث النبوي ﷺ .

الباب الخامس : بعض الأمثلة في صفات الله من القرآن والسنة

- إثبات الإرادة لله سبحانه وتعالى والردّ على من أنكرها.
- إثبات الكلام لله سبحانه وتعالى على ما يليق بجلاله.
- إثبات الوجه لله سبحانه وتعالى على ما يليق بجلاله.
- إثبات العينين لله سبحانه وتعالى على ما يليق بجلاله.
- إثبات اليدين لله سبحانه وتعالى على ما يليق بجلاله.
- إثبات الرجل أو القدم لله سبحانه وتعالى على ما يليق بجلاله.

الباب السادس : رؤية الله تعالى

- هل الإنسان يرى الله تعالى في الدنيا؟
- هل محمد ﷺ رأى ربه حينما عُرض به؟
- رؤية المؤمنين ربهم في اليوم الآخر.
- هل الكفار يرون ربهم في عرصات يوم القيامة؟

الباب السابع : علو الله وفوقيته سبحانه وتعالى

- أين الله سبحانه؟
- وحدة الوجود والردّ عليهم.
- الحلولية والردّ عليهم.
- استواء الله سبحانه على عرشه كما يليق بجلاله.
- العرش والكرسي.
- نزول الله إلى سماء الدنيا كما يليق بجلاله.
- شرح معية الله سبحانه وتعالى.

الخاتمة : لب الكتاب

- ثمرات الإيمان بأسماء الله الحسنى وصفاته العليا.
- خلاصة الكتاب.

লেখকের আরজ

আল-হামদুলিল্লাহ! মহান আল্লাহর মা'রিফাত নিয়ে কিছু লিখা আমার অনেক দিনের ভাবনা। আজ আল্লাহর ফযলে তা বাস্তবায়িত হল। বিষয়টি অতি গুরুত্বপূর্ণ ও জটিল। এটা ইসলামী আক্বীদার প্রথম ও প্রধান রুকন-এর অন্তর্গত। যার সঠিক বিশ্বাসের উপর ঈমান ও 'আমলের গ্রহণযোগ্যতা নির্ভরশীল। কিন্তু যুক্তি ও দর্শন আমাদেরকে বিভ্রান্তিতে ফেলে রেখেছে। অনেক জ্ঞানী-গুণী ব্যক্তি এতদসম্পর্কিত বিভ্রান্তি থেকে মুক্ত থাকতে পারেন নি। কারণ, দলীলের উপর নিজ বিবেককে অগ্রাধিকার দেয়া।

ঈমান বাঁচাবার তাগিদে এ গ্রন্থ রচনা। সম্মানিত পাঠকদের ধৈর্য্যের প্রতি লক্ষ্য রেখে সংক্ষেপে লিখতে হলো। ফলে চাহিদা থাকা সত্ত্বেও অনেক তথ্য সংযোজন সম্ভব হয় নি। গুরুত্বপূর্ণ বিষয়কে সংক্ষেপে প্রকাশ করা বড়ই কঠিন কাজ। আমাহেন অভাজন সে কাজে কতখানি সফল হয়েছি, তা মহান আল্লাহই ভাল জানেন। অতঃপর বিদ্বন্ধ পাঠক মহলের সুচিন্তিত অভিমততো রইলোই। আশাকরি 'ওলামায়ে কেরাম তাঁদের অভিজ্ঞতালব্ধ মতামত জানিয়ে বাধিত করবেন।

মহান আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে ভ্রান্তির অবসান হোক, এটাই আমাদের প্রত্যাশা। আল্লাহ গ্রন্থটিকে সেভাবেই কবুল করুন! আমীন!!

গ্রন্থকার

মুহাম্মাদ হারুণ হুসাইন

২রা রামাযান/১৪২৫ হিঃ

অভিমত পত্র-১

الحمد لله رب العالمين ، والصلاة والسلام على رسوله الأمين ، أما بعد....

লেখকের মহান আল্লাহর মা'রিফাত বইখানা আমি আদ্যোপান্ত পাঠ করে খুশী হলাম। দীর্ঘদিন পর বাজারে মা'রিফাতবিষয়ক একটি তথ্যনির্ভর বই চালু হতে যাচ্ছে, এটা সত্যিই আমাকে পুলকিত করেছে। বক্ষমান বইটি মা'রিফাতবিষয়ক অনেক ভ্রান্ত চিন্তা-চেতনার দালীলিক প্রতিবাদ এনেছে। সমাজের 'আলেম শ্রেণীর জন্যে বইখানা অধ্যয়ণ একান্ত আবশ্যক বলে আমি মনে করছি। সম্মানিত লেখক উক্ত বিষয়ে গবেষণামূলক সুচিন্তিত যেসব আলোচনার এক বিচিত্র সমাহারের উপস্থাপন করেছেন, তা সত্যিই প্রশংসার দাবী রাখে।

মহান আল্লাহর মা'রিফাত বিষয়টি একটি সূক্ষ্ম বিষয়। সুতরাং উক্ত স্পর্শকাতর বিষয়ে সীমালঙ্ঘনের কারণে শির্ক ও কুফুরের আশংকা দেখা দেয়। লেখকের বইটি পড়ে সমস্যার সমাধান হবে বলে প্রবলভাবেই আশা করছি। আল্লাহ তা'আলা লেখকের কুসুমাস্তীর্ণ ভবিষ্যৎ, দীর্ঘায়ু এবং ইহ ও পারলৌকিক সাফল্য দান করুন। আমীন!

মোশাররফ হুসাইন আকন

সহীহুল বুখারীর অন্যতম (বাংলা) ব্যাখ্যাকার
ও এটিএন বাংলার ধর্মবিষয়ক ভাষ্যকার।

অভিমত পত্র-২

بِسْمِ اللَّهِ وَالصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ، و عَلَى آلِهِ وَ أَصْحَابِهِ وَمَنْ نَحَجَّ عَلَى أَثَرِهِ وَاقْتَدَاهُ . أَمَا بَعْدُ...

তায়্যেফ ইসলামিক এ্যাডুকেশন ফাউন্ডেশন, সউদী আরব-এ ইনস্ট্রাক্টর পদে কর্মরত ভাই মুহাম্মাদ হারুণ হুসাইন কর্তৃক প্রণীত “মহান আল্লাহর মা'রিফাত” গ্রন্থখানা পাঠ করেছি। এটিকে মা'রিফাত সম্পর্কে একটি উপকারী ও জরুরী গ্রন্থ হিসেবে পেয়েছি। এ গ্রন্থটি মহান আল্লাহর জাত, সুন্দর সুন্দর নামসমূহ ও সু-মহান গুণরাজির বিষয়ে যথেষ্ট উপকার দেবে। অনুরূপভাবে মা'রিফাত সম্পর্কে কুরআন ও সহীহ হাদীছের আলোকে এ উম্মাতের পূর্বসূরী ওলামাদের গৃহীত পথ জানতে গ্রন্থখানা সহায়ক হবে। উল্লেখ্য যে, কুরআন, সুন্নাহ ও সালাফে সালাহীনদের অনুসৃত পথ হতে বিচ্যুত সূফীবাদসহ অন্যান্য ভ্রান্ত ফিরকাসমূহের প্রামাণ্য জবাব এ গ্রন্থটিতে সন্নিবেশিত হয়েছে।

আল্লাহর কাছে আমাদের জন্যে ও লেখকের জন্যে তাঁর পছন্দ ও সন্তুষ্টি বিষয়ে তাওফীক কামনা করছি। তিনি আমাদের সকলকে হিদায়ত প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত করুন এবং আমাদেরকে তাঁর দ্বীনের খিদমত করার ও তাঁর কালিমা বুলন্দ করার তাওফীক দিন! নিশ্চয়ই তিনি উত্তম যিস্মাদার।

মুহাম্মাদ, তাঁর পরিবার ও সকল সাহাবীর উপর রহমত বর্ষিত হোক!

আপনাদের ভাই
আবু সালামান আব্দুল হামীদ আল-ফায়যী
ইনস্ট্রাক্টর, মাজমা'আ ইসলামিক সেন্টার
সউদী আরব।

সূচিপত্র

১. লেখকের আরজ	3
২. অভিমত পত্র	4
৩. প্রারম্ভিকা	7

প্রথম অধ্যায় : মা'রিফাত পরিচিতি

৪. মা'রিফাত কি?	8
৫. আল্লাহর মা'রিফাত দ্বারা উদ্দেশ্য	
৬. আল্লাহর মা'রিফাত তাওকীফি	
৭. মা'রিফাত লাভের উপায়	9
৮. সুফীবাদের নিকট মা'রিফাত	

দ্বিতীয় অধ্যায় : মহান আল্লাহর পরিচিতি

৯. আল্লাহর জাত-সত্ত্বা প্রসঙ্গ	16
১০. আল্লাহর নাম ও সিফাত পরিচিতি	18

তৃতীয় অধ্যায় : ভ্রান্ত ফেরকাসমূহ প্রসঙ্গ

১১. জাহমিয়া মতবাদ	20
১২. মু'তাযিলা মতবাদ	21
১৩. আশা'আরী মতবাদ	22
১৪. মাতুরীদিয়্যাহ মতবাদ,	23
১৫. মুশাক্বাহা মতবাদ,	24

চতুর্থ অধ্যায় : আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী প্রসঙ্গ

১৬. আল্লাহর নামসমূহ অতি সুন্দর ও সুমহান	
১৭. আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী তাওকীফি	
১৮. কুরআন ও সহীহ হাদীছে বর্ণিত আল্লাহর নাম ও গুণাবলীর প্রতি ছব্ব্ব বিশ্বাস	
১৯. আল্লাহর নামসমূহ কোন সংখ্যায় সীমিত নয়	

২০. আল-কুরআনে বর্ণিত আল্লাহর সুন্দর নামসমূহ	34
২১. হাদীছে বর্ণিত আল্লাহর নামসমূহ।	36

পঞ্চম অধ্যায় : আল্লাহর জাতি সিফাত বা গুণাবলী প্রসঙ্গ

২২. ইরাদা বা ইচ্ছা শক্তি,	39
২৩. কালাম বা কথা বলা,	41
২৪. ওয়াজ্হ বা মুখমণ্ডল,	42
২৫. আইনান বা চক্ষুদ্বয়,	44
২৬. ইয়াদাইন বা হস্তদ্বয়,	47
২৭. কদম বা পা,	

ষষ্ঠ অধ্যায় : আল্লাহর দীদার প্রসঙ্গ

২৮. মানুষ কি আল্লাহকে দুনিয়ায় দেখতে পারে?	53
২৯. মুহাম্মাদ ﷺ কি আল্লাহকে দেখেছেন?	57
৩০. মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক আখিরাতে আল্লাহর দীদার প্রসঙ্গ,	64
৩১. কাফিররা কি আখিরাতে আল্লাহকে দেখতে পাবে?	72

সপ্তম অধ্যায় : আল্লাহ কোথায়?

৩২. আল্লাহ ﷻ কোথায়?	73
৩৩. ওয়াহদাতুল উজূদ বা অদ্বৈতবাদ,	75
৩৪. আল-হুন্লিয়াহ বা অনুপ্রবেশবাদ,	78
৩৫. আল্লাহ সর্বোচ্চে সু-মহান,	79
৩৬. 'আরশ ও কুরসী পরিচিতি,	85
৩৭. আল্লাহর দুনিয়ার আকাশে অবতরণ প্রসঙ্গ,	88
৩৮. আল্লাহ তাঁর সৃষ্টির সাথে থাকা প্রসঙ্গ,	90

পরিশিষ্টাংশ :

৩৯. মা'রিফাতের ফলাফল	
৪০. সার-সংক্ষেপ	94

মহান আল্লাহর মা'রিফাত (কুরআন ও সুন্নাহর আলোকে)

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على أشرف الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد وعلى آله وأصحابه أجمعين، أما بعد

একজন মুসলিমের উপর সর্বপ্রধান কর্তব্য হলো ‘আল্লাহর মা'রিফাত’ হাসিল করা। এতদ্ব্যতীত তার সকল সাধনা মূল্যহীন। কিন্তু আবশ্যিকীয় এ মা'রিফাত হাসিলের উপায় কী? আর মানুষের জ্ঞানচক্ষুই বা কতখানি তা আঁচ করতে পারে? না কি মানুষের জ্ঞান এক্ষেত্রে সীমিত?

মহান আল্লাহতো যথার্থই বলেছেন:

﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾ الأنعام: ৯১ والزمر ১৭

“তারা আল্লাহকে যথার্থরূপে বোঝেনি...।” -আন'আম/৯১ ও যুমা/৬৯

আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে মানুষের জ্ঞানের সীমাবদ্ধতা উল্লেখ করে এরশাদ ফরমান:

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ الأنعام: ১০৩

“দৃষ্টিসমূহ তাঁকে আয়ত্ত্ব করতে পারে না এবং তিনি দৃষ্টিসমূহকে আয়ত্ত্ব করতে পারেন। আর তিনি সূক্ষ্মদর্শী ও সর্বান্তর্যামী।” -আল-আন'আম/১০৩

তাহলে মানুষ কিভাবে আল্লাহর মা'রিফাত লাভ করবে? অথচ আল্লাহ সম্পর্কে সহীহ জ্ঞান ও সে অনুযায়ী ‘আমল ব্যতীত মানুষের নাজাত বা মুক্তি অসম্ভব। বিষয়টি অতি গুরুত্বপূর্ণ বিবেচনা করে আমরা কুরআন ও সুন্নাহ থেকে গৃহীত সালাফে সালেহীনের সঠিক আকীদার আলোকে এর একটি সুস্পষ্ট জ্ঞান সংক্ষিপ্তাকারে আলোচনা করতে প্রয়াস পাবো।

মা'রিফাত কি?

মা'রিফাত 'معرفة' শব্দটি আরবী, অর্থ- কোন ব্যক্তি বা বস্তু সম্পর্কে পরিচয় লাভ করা বা জানা।^১ আর শব্দটি যখন কারো অপরাধের ক্ষেত্রে ব্যবহৃত হবে, তখন অর্থ হবে স্বীকার করা।^২ নি'য়ামতের পরিচয় ও স্বীকৃতি প্রদান করার বেলায়ও এ শব্দটি প্রয়োগ হয়। যেমন হাদীছে বর্ণিত আছে যে, রোজ ক্বিয়ামতে আল্লাহ তাঁর বান্দাহকে নিজ নি'য়ামতের কথা স্মরণ করিয়ে দেবেন এবং তারা তখন তা স্বীকার করবে। হাদীছের ভাষা এই: (فَعَرَفَهُ نِعْمَةً فَعَرَفَهَا) অর্থাৎ “বান্দাহকে আল্লাহ তাঁর নি'য়ামতের কথা স্মরণ করিয়ে দেবেন; অতঃপর সে তা স্বীকার করবে।”^৩

কারো পরিচয় লাভ করা অর্থে এ শব্দটি প্রয়োগ হয়ে থাকে। যেমন হাদীছে জিব্রীলে এসেছে: (وَلَا يَعْرِفُهُ مِنَّا أَحَدٌ) “আমাদের কেউ তাকে চিনেন না।”^৪

‘হক্ব’ জানার উদ্দেশ্যেও শব্দটির প্রয়োগ লক্ষ্য করা যায়। যেমন হাদীছে এসেছে: (فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَقُّ) অর্থাৎ “আমি জানলাম যে, এটিই ‘হক্ব’।”^৫ দেখা যায় যে, মূল ধাতু হতে গৃহীত শব্দটি একাধিক অর্থে ব্যবহৃত হয়। মোট কথা, কোন ব্যক্তি, বস্তু বা স্বত্তা সম্পর্কে যথাসম্ভব তাত্ত্বিক জ্ঞান লাভ করাকে ‘মা'রিফাত’ বলা হয়। আর যেহেতু অধিকাংশ ক্ষেত্রে শব্দটি মহিমাম্বিত নাম ‘আল্লাহ’-এর সাথে সংযুক্ত হয়ে ব্যবহৃত হয়, সেহেতু তা অধিক স্পষ্ট যে, এখানে ‘মা'রিফাত’ দ্বারা মহান আল্লাহ সম্পর্কে দলীল-প্রমাণ জানা ও যথাসম্ভব গভীর জ্ঞান অর্জন করা বুঝাবে। এক্ষেত্রে মনে রাখতে হবে যে, মহান আল্লাহর জাত-সত্তাকে আয়ত্ত্ব করা কোন সৃষ্টির পক্ষে সম্ভব নয়।

^১) মিসাবুল্ল লুগাত (উর্দু) খলীলিয়া কুতুবখানা-ঢাকা (عَرَفَ) অনুচ্ছেদ/৫৪৫ পৃ: ১।

^২) প্রাণ্ড-৫৪৫ পৃ:

^৩) সহীহ মুসলিম (كتاب الإمامة) হা/১৫২, আহমদ ২/২২৫, মু'আত্তা হা/২৫২।

^৪) সহীহ মুসলিম (كتاب الإمامة) হা/৮, নাসায়ী (كتاب الإمامة) ৮/৯৭, তিরমিযী (كتاب الإمامة) হা/২৭৩৮, আবু দাউদ (كتاب الإمامة) হা/৪৬৯৫।

^৫) সহীহ সুনান নাসায়ী লিল আল-বানী (كتاب الزكاة) হা/২২৯১।

অভিধানবিদগণ বলেন: আসলে 'معرفة' শব্দটি গভীর জ্ঞান বা পরিপূর্ণ জ্ঞানের অর্থ দেয় না। কেননা, মূলতঃ শব্দটি অপূর্ণ অর্থজ্ঞাপক। আল্লামাহ রাগেব ইফাহানী (রাহি:) বলেন:

(المعرفة والعرفان إدراك الشيء بتفكير و تدبر لآثره)

অর্থ: “মা'রিফাত ও ইরফান হল- কোন বস্তুকে তার চিন্হ বা নিদর্শনের সাহায্যে চিন্তা ও গবেষণা দ্বারা আয়ত্ত্ব করা।”* আর আল্লাহর মা'রিফাত বলতে দলিল-প্রমাণ দিয়ে এবং তাঁর নিদর্শনাদী নিয়ে চিন্তা-ভাবনা করে যথাসম্ভব তাঁকে জানা ও তাঁর প্রতি প্রবল বিশ্বাস সৃষ্টি করাকে বুঝায়। কাজেই দলিল-প্রমাণ ছাড়া আল্লাহর মা'রিফাত হাসিল করার চেষ্টা অনর্থক। কেননা, মা'রিফাত মৌলিক অর্থেই ইলমে নাক্বেস বা অপূর্ণ অর্থজ্ঞাপক শব্দ। যে বা যারা কুরআন ও সহীহ হাদীছের জ্ঞান ছাড়া তথাকথিত মা'রিফাত লাভের বৃথা চেষ্টা করবেন, তারা বিভ্রান্ত হবেন। সে জন্যে আমরা ইতোপূর্বে বলেছি যে, দলিল-প্রমাণসহ যথাসম্ভব মহান আল্লাহকে জানো। অতএব, আমাদের সংজ্ঞায়ণ ও অভিধানবিদদের প্রদত্ত সংজ্ঞায় আর কোন বিরোধ রইল না।

আল্লাহর মা'রিফাত কি?

মা'রিফাত হল আল্লাহ্ তা'আলার অস্তিত্ব, একত্ববাদ ও তাঁর সুন্দর নামসমূহ এবং গুণাবলী সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান লাভ করা। তাঁর কুদরত, মহত্ব ও অসীম ক্ষমতা সম্পর্কে যৎসম্ভব প্রামাণ্য জ্ঞান ও অনুভূতি লাভ করা।^১ সহজ করে বলা যায় যে, মহান আল্লাহর অসীম কুদরত ও মহত্ব সম্পর্কে সুস্পষ্ট ধারণা বান্দাহ এ মর্মে লাভ করবে যে, তিনিই আল্লাহ্ যিনি তাকে (বান্দাহ) অস্তিত্বহীন থেকে অস্তিত্বসম্পন্ন করে সৃষ্টি করেছেন এবং তাকে নানা প্রকারের নি'য়ামত ভোগ করার সুন্দর সুযোগ দান করেছেন। তিনিই সেই আল্লাহ্, যিনি আসমান-যমীন, দিবারাত্র ও চন্দ্র-সূর্যের স্রষ্টা।

*নোট: ইমাম রাগেব প্রণীত (المفردات) ৩৭০ পৃষ্ঠা দ্র:

^১) আস-সায়্যিদ সাবেক্ব (العقيدة الإسلامية) দারুল ফিকর - বাইরুত/চ পৃ:।

তিনিই আসমান থেকে বৃষ্টি বর্ষণ করেন, ফল-ফসল ফলান এবং তদ্বারা বান্দাহর আহারের ব্যবস্থা করেন। কাজেই তিনিই একমাত্র সত্ত্বা, যিনি বান্দাহর এবাদত-উপাসনা পাওয়ার একমাত্র হকদার।^১

এ মা'রিফাতের প্রধান দুটি দিক রয়েছে, যা জানা সকল মুসলিমের উপর আবশ্যকীয় ফরয। আর তা হচ্ছে:

(এক) আল্লাহই বান্দাহর একমাত্র স্রষ্টা ও রিযিকদাতা। তিনি তাকে অযথা সৃষ্টি করেন নি; বরং এক মহান উদ্দেশ্য রয়েছে। আর তা হলো-শ্রেফ তাঁরই ইবাদত করা।

(দুই) আল্লাহর সাথে কাউকে অংশীদার স্থির করাকে তিনি কিছুতেই বরদাশত করবেন না; তা কোন নিকটবর্তী ফেরেশতা কিংবা নাবী ও রাসূল হোক না কেন।^২

মা'রিফাত লাভের উপায়

সূফী বা পীর-ফকীররা ইসলামে অনেক নতুন বিষয়ের উদ্ভাবন করেছে। অথচ যার অনুমতি আল্লাহ ﷻ তাদেরকে দেননি।

এ মর্মে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِمَّا لَمْ يُأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ، وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُتِنَ بِبَيْنِهِمْ ، وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ الشورى : ২১

“তাদের কি এমন শরীক দেবদেবী আছে, যারা তাদের জন্যে এমন দ্বীনের বিধান দিয়েছে, যার অনুমতি আল্লাহ দেননি? যদি চূড়ান্ত ফায়সালার ঘোষণা না থাকতো, তাহলে তাদের ব্যাপারে সিদ্ধান্ত হয়ে যেত। নিশ্চয়ই জালেমদের জন্যে রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।” -আশ-শূরা/২১

^১ শায়খ মুহাম্মদ ইবন আলী আল-আরফাজ্জ (ملا بد منه معرفة عن الإسلام) দারুস সুমাই লিন্ নাশর অয়াত্ তাওরি'আ-রিয়াদ/২১।

^২ শায়খ মুহাম্মদ সালেহ আল-উছাইমীন (شرح ثلاثة الأصول) দারুছ হুরাইয়া লিন্ নাশর- রিয়াদ/২৩-২৮ (সংক্ষেপায়িত)।

সম্মানিত পাঠক!

একটু লক্ষ্য করলেই দেখতে পাবেন, সূফী বা তথাকথিত পীর-ফকীররা আল্লাহর উক্ত নিষেধাজ্ঞা লঙ্ঘন করে দ্বীনের কোন কোন আহকাম সৃষ্টিতে প্রকারান্তরে তারা আল্লাহর সাথে অংশীদারিত্ব দাবী করে বসেছে। তাদের ব্যবহৃত ধর্মীয় পরিভাষা হচ্ছে: শরঈয়াত, তুরীকাত, হাকীকাত ও মা'রিফাত। মূলতঃ এগুলো ইসলামেরই পরিভাষা। কিন্তু তারা এগুলোর সঠিক অর্থ ও সংজ্ঞা পরিবর্তন করে নতুন সংজ্ঞা ও স্বতন্ত্র রূপ দাঁড় করিয়েছে। এক্ষেত্রে তারা দলীল-প্রমাণভিত্তিক শরঈ সংজ্ঞা গ্রহণ করে না। কেননা, তারা এ সকল চমকপ্রদ পরিভাষা শুনিয়ে সরলমতি মুসলিম নর-নারীকে ধোঁকায় ফেলে তাদের অসৎ উদ্দেশ্য সাধন করে নেয়। যদি সাধারণ মুসলিমগণ শরঈয়াতের প্রামাণ্য বক্তব্য জানতে পারে, তাহলে তাদের গোমর ফাঁস হয়ে যাবে। ফলে বিনা পূঁজির ব্যবসা জমজমাট হবে না।

সম্মানিত পাঠক!

এ সমস্ত পীর-ফকিরদের দৃষ্টিতে আল্লাহর মা'রিফাত লাভের উপায় হলো-কাশফ বা অন্তর্দৃষ্টি।^৯ তারা এক্ষেত্রে পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীসের কোন তোয়াক্কা করে না; বরং প্রকাশ্য অস্বীকার করে থাকে। তাদের দাবী মতে, তারা সরাসরি আল্লাহর কাছ থেকেই জ্ঞান লাভ করে থাকে।^{১০} অথচ মানুষের পক্ষে নাবী ও রাসূলের মাধ্যম ছাড়া আল্লাহর কাছ থেকে কোন তথ্য লাভ করা অসম্ভব। ওহী ছাড়া কেউই আল্লাহ থেকে কোন বাণী পেতে পারে না। আর ওহীতো কেবল নাবী ও রাসূলদের প্রতি প্রেরিত হয়েছিল; অন্য কারো প্রতি নয়।

নাবী ও রাসূলের নিকট ওহী প্রেরণ সম্পর্কে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بآيَاتِهِ مَا يَشَاءُ، إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ﴾ الشورى : ৫১

কোন মানুষের জন্য এমন হওয়ার নয় যে, আল্লাহ তার সাথে কথা বলবেন, কিন্তু ওহীর মাধ্যমে অথবা পর্দার অন্তরাল থেকে অথবা তিনি কোন দূত প্রেরণ করেন,

^৯) ডঃ আব্দুল্লাহ বিন মুহাম্মাদ আল-কারনী (المعرفة في الإسلام) দারু আলামিল ফাওয়াইদ-মাক্কা/৭।

^{১০}) শায়খ মুহাম্মাদ বিন জামীল যাইনু (المصوفية في ميزان الكتاب والسنة) বঙ্গানুবাদ- তায়েফ ইসলামিক এ্যাডুকেশন ফাউন্ডেশন প্রকাশনী, সউদী আরব/২০ ও ২৫ পৃঃ দ্রঃ।

অতঃপর আল্লাহ যা চান, সে তা তাঁর অনুমতিক্রমে পৌঁছে দেয়। নিশ্চয়ই তিনি সর্বোচ্চ প্রজ্ঞাময়।” -আশ-শূরা/৫১

তাহলে কি পীর-ফকীররা নবুওয়্যাতী দাবী করছেন? -না“উযুবিল্লাহ সম্মানিত পাঠক!

এক্ষেণে সহীহ ত্বরীকা মতে আমরা কিভাবে আল্লাহর মা'রিফাত লাভ করতে পারি? আমরা জানি যে, আল্লাহ তা'য়ালার প্রতি ঈমান অদৃশ্য বিষয় তথা ঈমান বিল-গায়েব-এর অন্তর্গত। আর এক্ষেত্রে ‘আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত’ তথা হকুপহী বিদ্বানদের গৃহীত নীতি হলো দলীল-প্রমাণ সহকারে জ্ঞান লাভ করা। আল্লাহর মা'রিফাত প্রমাণে শানিত দুটি দলীল রয়েছে, যার সাহায্যে আমরা মহান আল্লাহর মা'রিফাত লাভ করে ধন্য হতে পারি। আর তা হচ্ছে:

(এক) সুস্থ বিবেক: এটা হচ্ছে আল্লাহর সৃষ্টিরাজির প্রতি গভীর মনোনিবেশ সহকারে দৃষ্টি নিবদ্ধ করা।^{১১} কেননা, প্রতিটি সৃষ্টিই আল্লাহর অস্তিত্ব ও একত্ববাদের জ্বলন্ত সাক্ষী।^{১২} আল্লাহ ﷻ মানুষের বিবেককে প্রশ্ন করে বলেন:

﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ، أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَا يُفْقَهُونَ﴾ الطور: ৩৫-৩৬

“তারা কি কোন বস্তু ছাড়া আপনা-আপনি সৃজিত হয়েছে, না তারা নিজেরাই স্রষ্টা? না তারা আসমান ও যমীনসমূহ সৃষ্টি করেছে? বরং তারা বিশ্বাস করে না।” -আত-তুর/৩৫-৩৬

উক্ত আয়াতেকারীমা মানুষের বিবেকের কাছে ৩টি জরুরী প্রশ্ন পেশ করছে। যার জবাব জানলেই আল্লাহর অস্তিত্ব স্বীকার করা আবশ্যিক হয়ে পড়বে। আর তা হচ্ছে :

(১) শূন্যতা কি কোন কিছু সৃষ্টি করতে পারে? উত্তর, না। আর এটা স্বতঃসিদ্ধ কথা যে, সৃষ্টিরাজি এক সময় অস্তিত্বহীন শূন্য ছিল। অতঃপর মহান আল্লাহই সব কিছুর অস্তিত্ব দান করেছেন।

(২) মানুষ কি নিজেরাই নিজেদের সৃষ্টি করেছে? তারা বলল: এটা অসম্ভব। মানুষ স্বয়ং নিজেদের স্রষ্টা হতে পারে না।

^{১১}) আস-সায়্যিদ সাবিকু (العقيدة الإسلامية) দারুল ফিকর-বাইরুত/১৯ শাযখ মুহাম্মাদ বিন সালেহ আল-উছাইমীন (شرح ثلاثة الأصول) দারুস্ ছুরাইয়া-রিয়াদ/১৩।

^{১২}) ডঃ ওয়াহাবাহ আয-যুহাইলী (التفسير المنير) দারুল ফিকর-বাইরুত ২৭/৮-২।

(৩) তাহলে কি মানুষেরা এ বিশ্বজগত (যাতে রয়েছে সুনিপুণ নিয়ম-বিধান) সৃষ্টি করেছে?

এ প্রশ্নত্রয়ের জবাবে আমরা নিশ্চিতরূপে বলতে পারি, যে নিজেকে তৈরি করতে পারে না, সে অপর কোন বস্তুকেও সৃষ্টি করতে পারে না। আর যে নিজের কোন কল্যাণ করতে পারে না, সে অপরেরও কল্যাণ এনে দিতে ব্যর্থ। সুতরাং বিবেক সাক্ষ্য দিতে বাধ্য যে, সকল সৃষ্টির একজন স্রষ্টা রয়েছেন। আর তিনি হচ্ছেন আল্লাহ ﷻ!^{১৩} আল্লাহর বাণী:

﴿أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمْ الْخَالِقُونَ﴾ الطور: ৩০

অর্থাৎ “তারা কি কোন বস্তু ছাড়া আপনা-আপনি সৃজিত হয়েছে না তারা নিজেরাই স্রষ্টা...?” (আত-তুর ২৫) আয়াত কয়টি মাগরিবের সালাতে নাবী কারীম ﷺ যখন তেলাওয়াত করলেন, তখন যুবায়ের ইবন মুত্তসীম গুনতে পেয়ে চমকে উঠেন। সে সময় তিনি মুশরিক ছিলেন। ইমাম জুহরীর বর্ণনা মতে তিনি বদরের যুদ্ধ বন্দীদের একজন ছিলেন।^{১৪}

আয়াত কয়টিতে বর্ণিত বিবেকের কাছে কঠিন প্রশ্ন যাতে আল্লাহর অস্তিত্বের জ্বলন্ত সাক্ষী রয়েছে- শুনে যুবায়ের বলে উঠেন: যেন আমার আত্মা উড়ে যেতে লাগল।^{১৫} ইবনে হাজার (রাহি:) আরও উল্লেখ করেন যে, যুবায়ের বলেন:

(وذلك أول ما وقر الإيمان في قلبي)

অর্থাৎ “সেটিই ছিল আমার অন্তরে প্রথম ঈমানের রেখাপাত।”^{১৬}

উপরোক্ত আলোচনা দ্বারা এটা বলিষ্ঠ প্রমাণিত যে, সুস্থ বিবেক আল্লাহর অস্তিত্ব ও মা'রিফাত স্বীকার করতে বাধ্য। আর মানুষের চিন্তাশক্তি আরও প্রখর হয়ে উঠবে, যদি সে আল্লাহর সৃষ্টিরাজির প্রতি অনুসন্ধিৎসু মন নিয়ে গভীর গবেষণা করে। কেননা, আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِلْمُؤْمِنِينَ، وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ﴾ النّزّيات: ২০-২১

^{১৩} শায়খ মুহাম্মদ আলী আল-আরফাজ (ملا بد منه معرفة عن الإسلام) দারুস সুমাদি-রিয়াদ/৩০।

^{১৪} হাফেয ইবনে হাজার আল-‘আসকালানী ফতহুল বারী (كتاب الأذان) আল-মাকতাবাতুস সালাফিয়া ২/২৯০।

^{১৫} প্রাণ্ডক্ত ২/২৯ বুখারী ও মুসলিম গৃহীত তাফসীর ইবনে কাছীর-৬/১২।

^{১৬} ঐ ২/২৯০।

“বিশ্বাসীর জন্যে পৃথিবীতে নিদর্শনাবলী রয়েছে, এবং তোমাদের নিজেদের মধ্যেও; তোমরা কি অনুধাবন করবে না?” -আয-যারিয়াত/২০-২১

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন :

﴿قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُعْنِي الْآيَاتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ﴾ یونس: ১০১

“আপনি বলে দিন! চেয়ে দেখতো আসমানসমূহে ও যমীনে কী রয়েছে। আর যারা ঈমান আনে না, সেসব লোকের জন্যে কোন নিদর্শন ও সতর্কীকরণ কিছু কাজে আসে না।” -ইউনুস/১০১

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَآخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ﴾ البقرة/ ১৬৫

“নিশ্চয়ই আসমান ও যমীনসমূহের সৃষ্টিতে, রাত ও দিনের বিবর্তনে এবং নদীতে নৌকাসমূহের চলাচলে-যাতে মানুষের জন্য কল্যাণ রয়েছে। আর আল্লাহ আকাশ থেকে যে পানি বর্ষণ করেছেন, তদ্বারা মৃত যমীনকে সজীব করে তুলেছেন, এবং তাতে ছড়িয়ে দিয়েছেন সবরকম জীব-জন্তু। আর আবহাওয়া পরিবর্তনে এবং মেঘমালা যা আসমান ও যমীনের মাঝে বিচরণ করে- নিশ্চয়ই সেসব বিষয়ের মাঝে জ্ঞানীদের জন্যে নিদর্শন রয়েছে।” -বাক্বারা/১৬৪

এ ধরনের অসংখ্য নিদর্শনাবলী রয়েছে, যা আল্লাহর অস্তিত্ব ও একত্ববাদের অকাটা দলীল। জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্যে এ সমস্ত জাজ্জল্য প্রমাণাদির কথা উল্লেখ করে ভাবতে নির্দেশ করতঃ মহান আল্লাহ ﷻ এরশাদ ফরমান:

﴿كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ﴾، فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ﴾، البقرة: ২১৭/২১৮

“এভাবেই আল্লাহ তোমাদের জন্যে সুস্পষ্টরূপে নিদর্শনসমূহ বর্ণনা করেন, যাতে তোমরা চিন্তা করতে পার- দুনিয়া ও আখিরাতের বিষয়...। -বাক্বারা/২১৯, ২২০

কিন্তু, এতদসত্ত্বেও যার আকল আল্লাহর অস্তিত্বের সাক্ষ্য দেয় না; বরং আল্লাহর মা'রিফাত লাভে ব্যর্থ হয়। তার জন্যে কোথা থেকে হিদায়াত আসবে? আল্লাহ ﷻ তো এহেন ব্যক্তিবর্গ সম্পর্কে যথার্থই বলেছেন:

﴿وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِنْ نُورٍ﴾ النور: من الآية ٤٠

“আর আল্লাহ যাকে জ্যোতি দেন না, তার কোন জ্যোতি নেই।” -নূর/৪০

অর্থাৎ কাফিরেরা হিদায়াতের আলো থেকে বঞ্চিত। তারা আল্লাহর বিধি-বিধানের প্রতি পৃষ্ঠ প্রদর্শন করে স্বভাবজাত নূরকেও বিলীন করে দিয়েছে। সুতরাং তারা আল্লাহর নূর কোথায় পাবে?^{১৭}

(দুই) শরঈ আয়াতসমূহ: এখানে শরঈ আয়াতসমূহ বলতে আল্লাহর ওহী তথা আল-কুরআন ও সহীহ সুন্নাহ উদ্দেশ্য।^{১৮} কুরআন ও সহীহ সুন্নাহই হলো নির্ভুল তথ্যের মূল উৎস। এ দু'উৎসমূলের আলোকেই মানুষের জ্ঞানের বিচার হবে। মানুষকে সঠিক জ্ঞান দেয়া ও সে আলোকে তাদের জীবন পরিচালনার একমাত্র পথ নির্দেশনা বর্ণনার মহান উদ্দেশ্য আল্লাহ্ মানুষেরই মধ্য থেকে অনেক নাবী ও রাসূল প্রেরণ করেছেন। তাঁদেরকে অনেক মু'যিজা দ্বারা নবুওয়াতীর প্রমাণ যুগিয়েছেন। আসমানী হিদায়াত নাযিল করেছেন। এ সবই হচ্ছে আল্লাহর অস্তিত্ব ও একত্ববাদের দলীল। উপরন্তু কুরআন ও সুন্নাহই আল্লাহর মা'রিফাত লাভের চূড়ান্ত উপায়। আল্লাহর নাযিলকৃত বিধানের আলোকেই মানুষ তার আক্বীদা ও 'আমল নির্ধারণ করবে এবং তদানুযায়ী তার জীবন গঠন করবে।

এ মর্মে আল্লাহ্ ﷻ বলেন:

﴿اتَّبِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ﴾ الأعراف: ৩

“তোমরা অনুসরণ কর, যা তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে অবতীর্ণ হয়েছে।”

-আ'রাফ/৩

মানুষকে যদিও গভীর মনোনিবেশ সহকারে ভাবতে বলা হয়েছে, তবুও ইহা স্পষ্ট যে, মানুষের জ্ঞান সীমিত। আল্লাহর মা'রিফাত লাভের বেলায় সীমিত জ্ঞানকেই চূড়ান্ত ভাবলে স্পষ্ট বিভ্রান্তি অনিবার্য হয়ে পড়বে। তাই আল্লাহ্ ﷻ ওহী নাযিল করে মানুষকে কি কি ভাবতে হবে- সে সম্পর্কে চিন্তার সীমারেখা স্থির করে দিয়েছেন। এর বাইরে যাওয়ার অর্থই বিভ্রান্তিতে পড়ে যাওয়া, তাতে কোন সন্দেহ নেই।

^{১৭)} মাওলানা মুহিউদ্দিন খান অনুদিত তাফসীরে মা' আরিফুল কুরআন-বাদশাহ ফাহাদ প্রিন্টিং প্রেস-মদীনা/৯৪৭

^{১৮)} মুহাম্মদ বিন সালাহ আল-উছাইমীন (شرح ثلاثة الأصول) দারুসু ছুরাইয়া-রিয়াদ/১৩

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ﴾ فَأَيُّ تَصْرُفُونَ ﴿يونس: ٣﴾

“অতএব, সত্য প্রকাশের পর (উদ্ভ্রান্ত ঘুরার মাঝে) কি রয়েছে গোমরাহী ছাড়া। সুতরাং কোথায় ঘুরছ?” -ইউনুস/৩২

আল্লাহর জাতস্বত্ত্বা প্রসঙ্গে

আল্লাহর জাতস্বত্ত্বার প্রতি ঈমান আনতে হবে; কিন্তু এ বিষয়ে কোনরূপ মন্তব্য করা যাবে না। কেননা, এ নিয়ে ভাবা মানুষের সীমিত জ্ঞানসীমার বাইরে। মানুষ কিছুতেই আল্লাহর জাত সম্পর্কে পরিপূর্ণ জ্ঞান আয়ত্ত্ব করতে পারবে না।^{১৯} এ প্রসঙ্গে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ﴾ الْإِنَّمَاءُ: مِنَ الْآيَةِ ١٠٣

“দৃষ্টিসমূহ তাঁকে আয়ত্ত্ব করতে পারে না....।” -আন'আম/১০৩

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا﴾ طه: مِنَ الْآيَةِ ١١٠

“আর তারা তাঁকে জ্ঞান দ্বারা আয়ত্ত্ব করতে পারে না।” -ত্ব-হা/১১০
মহান স্রষ্টার মহিমাশিত নাম ‘আল্লাহ’। তিনি তার পরিচয় সম্পর্কে বলেন:

﴿إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا﴾ طه: مِنَ الْآيَةِ ١٤

“আমিই আল্লাহ, আমি ব্যতীত সত্যিকার কোন ইলাহ নেই।” -ত্ব-হা/১৪

^{১৯}) আস্ সাযিদ্ সাবেক্ব (المفيدة الإسلامية) দারুল ফিকর-বাইরুত/৭২

আল্লাহর জাত সম্পর্কে আরব মুশরিকদের প্রশ্নের জবাব দিয়ে আল্লাহ ﷻ স্বয়ং এরশাদ ফরমান:

﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ، اللَّهُ الصَّمَدُ، لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ [الإخلاص-১]

“বলুন! তিনিই আল্লাহ, (এক) আল্লাহ অমুখাপেক্ষী। তিনি কাউকে জন্ম দেন নি এবং কেউ তাকে জন্ম দেয় নি। আর তাঁর সমতুল্য কেউ নেই।” -সূরা ইখলাস
আল্লাহ ﷻ আরও বলেন :

﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ، وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ [الحديد: ৩]

“তিনিই প্রথম, তিনিই সর্বশেষ, তিনিই প্রকাশমান, তিনিই অপ্রকাশমান এবং তিনি সর্ববিষয়ে সম্যক পরিজ্ঞাত।” -আল-হাদীদ/৩

এই আয়াতের ব্যাখ্যায় শ্রিয় নাবী ﷺ এরশাদ ফরমান:

قوله عليه السلام: (اللَّهُمَّ أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ) رواه مسلم

অর্থাৎ “হে আল্লাহ! তুমিই প্রথম, তোমার পূর্বে কোন বস্তু নেই। তুমিই সর্বশেষ, তোমার পরে কোন বস্তু নেই, তুমিই প্রকাশমান, তোমার উপরে কেউ নেই এবং তুমিই অপ্রকাশমান, তুমি ছাড়া অন্য কোন বস্তু অপ্রকাশমান নেই।”^{২০}

উল্লেখিত আয়াত ও হাদীসে বর্ণিত মহান আল্লাহর ৪টি সিফাত-এর প্রথম দুটি সৃষ্টির আদি ও অন্তের কালবেষ্টন জ্ঞাপক এবং শেষোক্ত দুটি স্থানবেষ্টন জ্ঞাপক।^{২১} আর অপ্রকাশমান সিফাত দ্বারা উদ্দেশ্য- তিনি এমন মহান সত্ত্বা যে, তাঁকে কোন ইন্দ্রিয়শক্তি বেষ্টন করতে পারে না এবং কোন জ্ঞানও তাকে বেষ্টন করতে পারে না।^{২২} ইমাম নববী (রহ:) বলেন: তিনি সৃষ্টির আঁড়ালে। আবার কারো মতে, তিনি অতি সূক্ষ্ম বিষয়বস্তু সম্পর্কে জানেন।^{২৩}

^{২০} সহীহ মুসলিম (كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار) হা/২৭১৩

^{২১} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ ৭ম সংস্করণ (১৪২২ হিজ) ৩২ পৃঃ।

^{২২} আস-সায়্যিদ সাবেক্ব (العقيدة الإسلامية) দারুল ফিকর-বাইরুত/৫৩।

^{২৩} ইমাম নববী (রহ) (شرح صحيح مسلم) ৭/২০০।

আল্লাহর জাত সম্পর্কে প্রশ্ন করা বিভ্রান্তির নামান্তর। এটা শয়তানী কর্ম। এ বিষয়ে শয়তান বিভ্রান্ত করতে চাইলে আল্লাহর আশ্রয় প্রার্থনা করতে হবে এবং দ্রুত এ ধরনের প্রবঞ্চনামূলক জিজ্ঞাসা থেকে বিরত হতে হবে। এ প্রসঙ্গে প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام: (يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ مَنْ خَلَقَ كَذَا وَكَذَا حَتَّى يَقُولَ لَهُ مَنْ خَلَقَ رَبُّكَ فَإِذَا بَلَغَ ذَلِكَ فَلَيْسَتْ عِذَّةٌ بِاللَّهِ وَلَيْتَنَّهُ) رواه مسلم

অর্থাৎ “তোমাদের কারো নিকট শয়তান আসবে, অতঃপর বলবে: কে এসকল বস্তু সৃষ্টি করেছে? এমনকি তাকে বলবে: তোমার রবকে কে সৃষ্টি করেছে? যদি (ওয়াসুওয়াসা) এমন পর্যায়ে পৌঁছে যায়, তাহলে সে যেন আল্লাহর কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করে এবং (এ ধরনের কথাবার্তা থেকে) বিরত হয়।”^{২৪}

আল্লাহর নাম ও সিফাতসমূহ

মহান আল্লাহর নাম ও সিফাত প্রসঙ্গে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত-এর আক্বীদা বর্ণনা প্রসঙ্গে ইমাম ইবনে তাইমিয়াহ (রাহি:) বলেন :

(الإيمان بما وصف به نفسه في كتابه ووصفه به رسوله محمد صلى الله عليه وسلم من غير تحريف ولا تعطيل، ومن غير تكييف ولا تمثيل، بل يؤمنون بأن الله سبحانه ليس كمثله شيء وهو السميع البصير، فلا ينفون منه ما وصف به نفسه، ولا يحرفون الكلام عن مواضعه، ولا يلحدون في أسماء وآياته ولا يكيفون ولا يمثلون صفاته بصفات خلقه)

মুক্তিপ্ৰাপ্ত দলের নিকট আল্লাহর নাম ও সিফাত সম্পর্কে ঈমান হলো: আল্লাহ তাঁর পরিচয় যেভাবে তাঁর কিতাব আল-কুরআনে এবং তাঁর রাসূল মুহাম্মদ ﷺ আল্লাহর পরিচয় যেভাবে প্রদান করেছেন, সেভাবে কোনরূপ পরিবর্তন, পরিবর্ধন,

^{২৪}) সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৩৪

কল্পিত আকৃতি স্থির ও সৃষ্টির সাথে সাদৃশ্য বিধান ছাড়া হুবহু ঈমান আনা। তাঁরা এ মর্মে ঈমান আনেন যে, আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা এমন সত্তা যার সমতুল্য কোন সত্তা নেই। তিনি সর্বশ্রোতা ও সর্বদ্রষ্টা। কাজেই আল্লাহ যা দ্বারা তাঁর পরিচয় পেশ করেছেন, এর কিছুই তাঁরা অস্বীকার করেন না। আর তাঁরা কোন কালিমাতে এর স্থান থেকে পরিবর্তন করে অন্য কোন ব্যাখ্যা দান করেন না। আল্লাহর নামসমূহ ও আয়াত-এর কোনরূপ বাঁকা অর্থ গ্রহণ করেন না এবং তাঁর কোন আকৃতিও স্থির করেন না ও মাখলূকের সিফাতের সাথে কোনরূপ সাদৃশ্যও স্থির করেন না।^{২৫}

মহান আল্লাহর নাম ও সিফাতসমূহের বেলায় বাঁকাপথ বলম্বনকারীদের অশুভ পরিণতির কথা উল্লেখ করে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿ وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا، وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِقُونَ فِيَّ اسْمِيهِ، سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴾
الأعراف: ১৮০

“আর আল্লাহর জন্যে সুন্দর নামসমূহ রয়েছে। সুতরাং ঐ সকল নাম নিয়ে তোমরা তাঁকে আহ্বান কর। যারা তাঁর নামসমূহের ব্যাপারে বাঁকাপথে চলে, তোমরা তাদেরকে পরিত্যাগ করে চলবে। অচিরেই তাদের কৃতকর্মের প্রতিফল প্রদান করা হবে।” -আ'রাফ/১৮০

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿ إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِقُونَ فِيَّ آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا، فَصَلِّ: مِنَ الْآيَةِ ٤٠ ﴾

“নিশ্চয়ই যারা আমার আয়াতসমূহের ব্যাপারে বক্রতা অবলম্বন করে, তারা আমার কাছে গোপন নয়।” -হা-মীম সিজদা/৪০

^{২৫} শায়খুল ইসলাম ইমাম ইবনে তাইমিয়া (العقيدة الوسطية)

আল্লাহর পরিচয় দলীলভিত্তিক

পুস্তকের শুরুতে আমরা উল্লেখ করেছি যে, আল্লাহর মা'রিফাত দলীলভিত্তিক। আর দলীল দ্বারা উদ্দেশ্য আল্লাহর ওহীর বাণী ও সুস্থ বিবেক। মানুষের বিবেক প্রকাশমান। আল্লাহর কুদরত অনুধাবন দ্বারা তার ঈমানে সজীবতা পাবে। কিন্তু আল্লাহর জাত ও সিফাতকে সে স্থির করতে পারবে না। এর একমাত্র উপায় আল্লাহর ওহীর আলো, অন্যথায় বিভ্রান্তি অনিবার্য হয়ে পড়বে। এ প্রসঙ্গে ইমাম আহমদ (রাহি:) বলেন:

(لا يوصف الله إلا بما وصف به نفسه أو وصفه به رسوله، ولا يتجاوز القرآن والحديث)

“আল্লাহ তাঁর পরিচয় যেভাবে প্রদান করেছেন, অথবা তাঁর রাসূল ﷺ যেভাবে বর্ণনা দিয়েছেন- তাছাড়া অন্য কোনভাবে আল্লাহর পরিচয় দান করা যাবে না। এক্ষেত্রে কুরআন ও হাদীছ অতিক্রম করা যাবে না।”^{২৬}

কুরআন ও হাদীছ উপেক্ষা করে আল্লাহ সম্বন্ধে কোনরূপ মন্তব্য করা থেকে তিনি কঠোরভাবে নিষেধ করেছেন। এরশাদ হচ্ছে:

﴿قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْأَلْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ [الأعراف: ৩৩]

“বলুন, আমার পালনকর্তা কেবলমাত্র অশ্লীল বিষয়সমূহ হারাম করেছেন- যা প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য এবং যা হারাম করেছেন তা গোনাহ ও অন্যায় বাড়াবাড়ি। আল্লাহর সাথে এমন বস্তুকে শরীক করা, তিনি যার কোন সনদ অবতীর্ণ করেননি। আর আল্লাহর প্রতি এমন কথা আরোপ করা (হারাম), যা তোমরা জান না।” -আল-আরাফ/৩৩

শায়খ মুহাম্মদ আল-উছাইমীন (রাহি:) বলেন: যদি তুমি আল্লাহকে এমন সিফাত দ্বারা পরিচয় পেশ কর, যা দ্বারা তিনি নিজেকে পরিচয় দেননি, তাহলে তুমি আল্লাহর উপর এমন কথা বললে- যার জ্ঞান তোমার নেই। আর তা কুরআনী দলীল দ্বারা হারাম।^{২৭}

^{২৬}) ইমাম ইবনে তাইমিয়া ‘মাজমু’আ ফাযওয়া’ ৫/২৬

^{২৭}) শায়খ মুহাম্মদ আল-উছাইমীন (রহ) (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবনুল জাওযী-দাম্মাম ১৫/৭৫

আল্লাহর নাম ও সিফাত সম্পর্কে সৃষ্ট ভ্রান্ত মতবাদসমূহ ও তাদের আকীদাগত অবস্থান

নির্ভুল আকীদার মূল উৎস কুরআন ও সহীহ হাদীছ। এ দু'উৎসকে উপেক্ষা করে যারা নিজ নিজ রায়, যুক্তি ও দর্শনকে অগ্রাধিকার দিয়েছেন, তারা বিভ্রান্তির অতল গহ্বরে তলিয়ে গেছেন তাতে সন্দেহ নেই। এক্ষেপে আমরা আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী সম্পর্কে সৃষ্ট কয়েকটি বিশেষ বিশেষ ভ্রান্ত ফিরকার সংক্ষিপ্ত বিবরণ পেশ করব, যাতে মুসলিম উম্মাহ এ বিষয়ে সতর্ক ও সাবধান হতে পারেন। সাথে সাথে এ বিষয়ে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত তথা হকুপছীদের আকীদাগত কি অবস্থান হওয়া ঈমানের দাবী, তা সহজে বুঝে নিতে সক্ষম হন।

(এক) জাহমিয়া:

এ মতবাদের পুরোধা হচ্ছে 'আল-জাহম ইবন সাফওয়ান'। সে ছিল ইরাক সীমান্তবর্তী খুরাসানের বাসিন্দা। তার ভ্রান্ত মতবাদ হিজরী দ্বিতীয় শতাব্দীর শুরুতে প্রসার লাভ করে। সে-ই সর্বপ্রথম “কুরআন আল্লাহর কালাম নয়; বরং মাখলুক” এ ভ্রান্ত মতবাদের জন্ম দেয় এবং আল্লাহর সিফাত বা গুণাবলী অস্বীকার করে। ১৩০ হি: মতান্তরে ১৩২ হি: সে নিহত হয়।^{২৬}

আল্লাহর সিফাতসমূহ স্বীকার করতে তার আকল গ্রাহ্য করে না। সে আল্লাহর সিফাত (الْحَيُّ) অর্থাৎ চিরঞ্জীব, (الْعَلِيمُ) অর্থাৎ জ্ঞানী, (الْمَلِكُ) অর্থাৎ 'স্রষ্টা' ইত্যাদি সিফাতসমূহকে অস্বীকার করে এ যুক্তিতে যে, এগুলো স্বীকার করলে আল্লাহকে তাঁর মাখলুকের (সৃষ্টির) সাথে সাদৃশ্য দেয়া জরুরী হয়ে পড়ে। তাই সে মহিমাম্বিত এ

^{২৬} গালেব বিন আলী 'আওয়াজী (فرق معاصرة تنتسب إلى الإسلام) মাক্কাতাবাত লীনাহ' ২/৭৯৫

সিফাতগুলো পরিবর্তন করে বলে: কুদরত ও কর্তা ইত্যাদি।^{১৯} বর্তমানেও ভারতবর্ষের বিভিন্ন ওলামা জাহিমিয়াদের অনুকরণে তাদের লিখনীতে ও উর্দু-বাংলা তাফসীর গ্রন্থে আল্লাহর সিফাতের অনুবাদ করে থাকে 'কুদরত' দ্বারা। একে বলা হয় 'আত-তা'ত্বীল' বা আল্লাহর সিফাতকে অস্বীকার করা। যা বড়ই গর্হিত কাজ।

(দুই) মু'তাযিলা:

একে বিচ্ছিন্নতাবাদী দল বলা হয়। এ মতবাদের পুরোধা হচ্ছে ওয়াসিল ইবন 'আত্মা'। এটাও হিজরী দ্বিতীয় শতাব্দীর শুরুতে অর্থাৎ ১০৫/১১০ হিঃ সনের মধ্যে প্রসার লাভ করে।^{২০} আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী সম্পর্কে তাদের আকীদাগত অবস্থান হলো- তারা আল্লাহর নামসমূহ স্বীকার করেন; কিন্তু সিফাত বা গুণাবলী সম্পূর্ণরূপে অস্বীকার করেন। তাদের মতে, আল্লাহ (ক্বাদীর) তবে তাঁর কোন কুদরত নেই। তিনি (سَمِيعٌ) তবে তাঁর কোন শ্রবণশক্তি নেই। তিনি (بَصِيرٌ) তবে তাঁর কোন দৃষ্টিশক্তি নেই। তিনি (আলীম), তবে তাঁর কোন ইলম নেই এবং তিনি (حَكِيمٌ) তবে তিনি হিকমত ছাড়া।^{২১} -নাউয়ুবিল্লাহ।

(তিন) আশা'আরী:

এ মতবাদের প্রথম পুরোধা তৃতীয় শতাব্দী হিবরীর বিদ্বান আবুল হাসান আলী ইবন ইসমাইল আল-আশ'আরী। তিনি ইরাকের বসরায় মতান্তরে ২৫০ হিঃ বা ২৭০ হিঃ জন্মগ্রহণ করেন এবং একটি মতে তিনি ৩৩০ হিঃ মৃত্যুবরণ করেন।^{২২} অবশ্য তিনি শেষের দিকে এহেন ভ্রান্ত আকীদা থেকে তাওবা করে ফিরে আসেন এবং (الابانة) নামীয় একখানা কিতাব লিখেন। যাতে তিনি সঠিক আকীদার বিবরণ দেন।^{২৩} এজন্যে এ মতবাদকে আর তাঁর দিকে সম্বন্ধযুক্ত করা আদৌ ঠিক নয়। বরং এ দলের

^{১৯}) (আল-ফাসল ফিল মিলাল ওয়াল আহওয়া ওয়ান নিহাল) দারুল মা'রিফাহ-বাইরুত ১/১০৯, ১১০

^{২০}) গালেব বিন আলী 'আওয়াজী (فرق معاصرة تنتسب إلى الإسلام) মাকতাবাত লীনাহ ২/৮২১

^{২১}) শায়খ মুহাম্মদ বিন সালাহ আল-উসাইমীন (রাহি:) (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইবন জাওয়াই দামাম, ১/৩২

^{২২}) গালেব বিন আলী আওয়াজী (فرق معاصرة تنتسب إلى الإسلام) যাকাতাবাত লীনাহ-২/৮৫৩

^{২৩}) আবু আব্দুল্লাহ আমের আব্দুল্লাহ ফালেহ (معجم الفاظ العقيدة) মাকতাবাতুল 'উবাইকান-রিয়াদ/৪

দ্বিতীয় ব্যক্তিত্ব ইবনে কুল্লাব-এর দিকে সম্বন্ধ করাই অধিক যুক্তিযুক্ত।^{৩৪} কেননা, আবুল হাসান (রাহি:) এর প্রত্যাবর্তনের পর ইবনে কুল্লাবই আশা'আরী মতবাদের মূল পৃষ্ঠপোষক হিসেবে আত্মপ্রকাশ করেন। ফলে এ মতবাদকে বর্তমানে আশা'আরী না বলে 'কুল্লাবী' বলাই যুক্তির দাবী।

আল্লাহর নাম ও গুণাবলী সম্পর্কে আশা'আরী (কুল্লাবী) মতবাদের অবস্থান হলো- তারা আল্লাহর নামসমূহ যথার্থভাবেই স্বীকার করে; কিন্তু সিফাত তথা গুণাবলীর বেলায় বলেন: “জ্ঞান যে সমস্ত সিফাত-এর সাক্ষ্য দেয়, তা স্বীকার করব।” সে কারণে, তারা আল্লাহর মাত্র ৭টি সিফাত বা গুণবাচক নাম স্বীকার করেন। আর বাকি সব সিফাতকে সরাসরি মানেন না, বরং নিজেদের ব্যাখ্যা অনুযায়ী তাতে পরিবর্তন/বিকৃতি ঘটিয়ে থাকেন।^{৩৫} তাদের পরিবর্তন বা বিকৃতির দৃষ্টান্ত হচ্ছে এই যে, তারা আল্লাহর বাণী ﴿وَجَاءَ رَبِّكَ﴾ “তোমার রব আসবেন” (আল-ফজর/২২) এর অর্থ ক্ষরতে গিয়ে একটি শব্দ অতিরিক্ত বাড়িয়ে বলেন: ﴿وَجَاءَ رَبِّكَ﴾ অর্থাৎ (وَجَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ) “তোমার রবের আদেশ আসবে।” একে বলা হয় শাব্দিক পরিবর্তন। আর অর্থগত পরিবর্তনের ক্ষেত্রে তারা আল্লাহর সিফাত ‘রহমত’-এর অর্থ করে “পুরস্কার দানের ইচ্ছা” এবং আল্লাহর সিফাত ‘গজব’ এর অর্থ করে “প্রতিশোধের ইচ্ছা”।^{৩৬}

যদি আমরা একটু লক্ষ্য করি তাহলে দেখতে পাব এ মতবাদের অনুসারীদের সংখ্যা সবচেয়ে বেশি। অধিকাংশ বিদ্বান নিজেদেরকে আশা'আরী বা কুল্লাবী না বললেও তারা সে আকীদাই গ্রহণ করেছে। যেমন বাংলা ভাষায় অনুদিত কুরআনে এবং উর্দু ভাষায় অনুদিত ও প্রণীত কুরআনে তারা আল্লাহর সিফাত-এর রূপক অর্থ গ্রহণ করেছে। যেখানে আল্লাহ তাঁর নিজের জন্যে ‘হাত’ সাব্যস্ত করেছেন, সেখানে তারা একে অস্বীকার করে ‘কুদরত’ শব্দ দ্বারা পরিবর্তন করে অনুবাদ করেছে। আর এটাই হলো তাহরীফ বা পরিবর্তন।

উল্লেখ্য যে, আশা'আরী বা কুল্লাবীরা যে ৭টি সিফাত বা গুণকে স্বীকার করে, তাহলো: আল্লাহ (حَيُّ) হায়াত দ্বারা, আ-লিমুন (عَلِيمٌ) ইলম দ্বারা, মুরীদুন (مُرِيدٌ)

^{৩৪} গালেব বিল আনী আওয়াজী (فرق معاصرة تنسب إلى الإسلام) মাকতাবত লীনাহ-২/৮৫৩

^{৩৫} মুহাম্মাদ বিন সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية لشيخ الإسلام ابن تيمية) দারুল ইবন আল-জাওয়াই-দাম্মাম/১/৩২

^{৩৬} ড: সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী, রিয়াদ/১৩

ইরাদাহ দ্বারা, মুতাকাল্লিমুন (مُتَكَلِّمٌ) কালাম দ্বারা, সামীউন (سَمِيعٌ) শ্রবণশক্তি দ্বারা, বাসীরুন (بَصِيرٌ) দৃষ্টিশক্তি দ্বারা, এবং ক্বাদীর (قَادِرٌ) কুদরত দ্বারা।^{৭৭} আর বাকি সব সিফাত তারা অস্বীকার করে।

(চার) মাতুরীদিয়াহ:

এ মতবাদের পুরোধা হলেন মুহাম্মদ ইবন মুহাম্মাদ ইবন মাহমুদ। তিনি আবু মনসুর আল-মাতুরীদি নামে পরিচিত। তিনি সমরকন্দের মাতুরীদ গ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। তার জন্মতারিখ সম্বন্ধে স্পষ্ট কিছু জানা যায় না। তবে সে ৩৩৩ হি: ইন্তেকাল করেন। তৎকালীন শ্রেষ্ঠ হানাফী বিদ্বানদের নিকট হানাফী ফিকহা শাস্ত্রে জ্ঞান লাভ করেন। হিজরী তৃতীয় শতাব্দীর এ বিদ্বান-এর নীতিমালার প্রতি সম্বন্ধ করে এ মতবাদের নাম হয় 'মাতুরীদিয়াহ'।^{৭৮}

এ মতবাদ আকলকে দলীলের উপর অগ্রাধিকার দিয়ে থাকে। আল্লাহর সুন্দর নামসমূহ ও গুণাবলীর ক্ষেত্রে এ দল মু'তাযিলা ও 'আশায়েরা মতবাদের মিশ্রিত রূপ গ্রহণ করেছেন। যদিও যেসব বিষয়ে মুতাযিলাদের সাথে এ দলের পুরোধা আবুল মনসুর আল-মাতুরীদির মতানৈক্য ছিল, সেসব বিষয়ে সে 'আশায়েরাদেরকে সাথে নিয়ে প্রতিবাদ করেছে।^{৭৯} কিন্তু আল্লাহর নামসমূহ ও সিফাত-এর বেলায় নিজ আকলকে দলীল হিসেবে গ্রহণ করার কারণে তারা সেসব সিফাতকে মানে, যা তাদের আকল গ্রাহ্য করে। পক্ষান্তরে যা আকল গ্রাহ্য করেনা, তা তারা অস্বীকার করে।^{৮০}

তারা আল্লাহর (ارَادَةُ) 'ইচ্ছা' এ সিফাতকে স্বীকার করে। কেননা, তা তাদের আকল গ্রাহ্য করে। কিন্তু (الرَّحْمَةُ) রহমাত এ সিফাত স্বীকার করে না। তাদের যুক্তি হলো (الرَّحْمَةُ) 'রহমাত' যার থাকবে, যার প্রতি রহমাত করা হবে- তার প্রতি অতি বিনম্র ও কোমল হওয়া আবশ্যক হয়ে পড়বে। আর ইহা আল্লাহর শানে অসম্ভব। তাই

^{৭৭} আবু মুহাম্মদ আলী আজ-জাহেরী (الفصل في الملل والأهواء والنحل ومهامه الملل والنحل) দারুল মা'রিফাহ বাইরুত- ১/১২২ ইবনে উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ১/৩৩

^{৭৮} গালেব বিন আলী আওয়াজী (فريق المعاصرة تنسب إلى الإسلام) মাকতাবাত লীনা-২/৮৬৯

^{৭৯} প্রান্তক ২/৮৬৯

^{৮০} শায়খ মুহাম্মাদ সালেহ আল-উছাইমীন (القواعد الثلث في صفات الله وأسمائه الحسنى) মাকতাবাত আজওয়াউস্ সালাফ-রিয়াদ/৮৮

তারা কুরআন ও হাদীছে বর্ণিত (الرَّحْمَةُ) 'রহমাত' এই সিফাতকে পরিবর্তন করে তা দ্বারা আল্লাহর 'কর্ম ও 'ইচ্ছা' বুঝে থাকে। সে কারণে তারা আল্লাহর সিফাত (الرَّحِيمِ) রাহীম-এর অর্থ করে "দাতা অথবা দান করার ইচ্ছাকারী।"^{৪১}

এভাবে এ মতবাদ আশা'আরীদের মতো আকল গ্রাহ্য মাত্র আটটি সিফাতকে স্বীকার করে। বাকি সিফাতসমূহকে আকল মানে না-এ অযুহাতে মুতাযিলাদের ন্যায় ভিন্ন অর্থ করে থাকে। তারা আশা'আরীদের গৃহীত ৭টি সিফাতের সাথে ৮ম যে সিফাতটি যোগ করে, তাহলো (التكوين) বা কোন কিছুর অস্তিত্ব নিয়ে আসা।^{৪২}

(পাঁচ) মুশাব্বিহা বা সাদৃশ্যবাদী:

এ মতবাদের পুরোধা হলো হিশাম বিন আল-হাকাম আর-রাফেজী। মতান্তরে এ মতবাদ ১৮৯ হি: অথবা ১৯০ হিজরীতে আত্মপ্রকাশ লাভ করে।^{৪৩} এদেরকে মুমাহ্ছিলও বলা হয়। তারা বলেন: আল্লাহর সিফাতসমূহ মাখলুক বা সৃষ্টির সিফাত-এর সাথে সাদৃশ্যশীল।^{৪৪} মহান আল্লাহ এহেন সাদৃশ্য হতে পূত-পবিত্র। তিনি তাঁর বান্দাদেরকে তা থেকে নিষেধ করে এরশাদ ফরমান:

﴿فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ﴾ النحل: من الآية ১৭

অর্থাৎ "তোমরা আল্লাহর কোন সাদৃশ্য সাব্যস্ত করো না।" -আন-নাহল/৭৪

উপরোক্ত নিষেধাজ্ঞাকে লঙ্ঘন করে এহেন ভ্রান্ত ফিরকা বলে যে, আল্লাহর হাত ও কান মানুষের হাত ও কান-এর মতো।^{৪৫} অথচ আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত কোনরূপ সাদৃশ্য ছাড়াই আল-কুরআনে বর্ণিত আল্লাহর যাবতীয় সিফাতকে হুবহু স্বীকার করেন। যেহেতু আল্লাহ ﷻ তাঁর পরিচয় সম্পর্কে নিজেই বলেছেন:

^{৪১}) প্রাণ্ড/৮৯

^{৪২}) আবু আব্দুল্লাহ আমের আব্দুল্লাহ ফালেহ (معجم الفاظ العقيدة) মাকতাবাত 'উবাইকান-রিয়াদ/৩৫৩

^{৪৩}) 'আন-নাদওয়াতুল আ-লামিয়া লিশ্ শাবাব আল-ইসলামী প্রকাশিত (المسوعة الميسرة في الأديان والمذاهب والأحزاب) ২/১০১১ (المعاصرة)

^{৪৪}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (صفات الله وأسمائه الحسنى) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাম-রিয়াদ/৪৯

^{৪৫}) আবু আব্দুল্লাহ আমের আব্দুল্লাহ ফালেহ (معجم الفاظ العقيدة) মাকতাবাত আল-'উবাইকান-রিয়াদ/৯৯

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿الشورى: من الآية ١١﴾

“তার মত কোন বস্তু নেই। তিনি সর্বশ্রোতা ও সর্বদ্রষ্টা।” -আশ-শূরা/১১

আল্লাহর সিফাতকে অস্বীকারকারী মুতাজিলারা যুক্তি দেখায় যে, আল্লাহর জন্যে জাত-ই সিফাত সাব্যস্ত করতে গেলে তাঁর একটি দেহ কল্পনা করতে হয়। দেহ বা কায়া ছাড়া হাত, মুখমণ্ডল ও পিণ্ডলী ইত্যাদি সিফাত স্থির করা যায় না। তাই আল্লাহর উপরোক্ত সিফাতের স্বীকৃতি দানকারী হকুপহীদদেরকে তারা কায়াবাদী হিসেবে আখ্যা দিয়ে থাকে।^{৪৬} মূলতঃ মু'তাজিলা, আশায়েরা, জাহমিয়া ও মাতুবীদিয়াদের বিপরীত যে ভ্রান্ত দলের আবির্ভাব ঘটেছে, তারাই সাদৃশ্য বা কায়াবাদী। আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত আল্লাহর শান অনুযায়ী সাব্যস্ত সকল সিফাত ছব্ব্ব বিকৃতি ব্যতীত বিশ্বাস করেন। তারা সাদৃশ্যবাদীদের খোঁড়া যুক্তিকে সর্বোত্তমভাবে প্রত্যাখ্যান করেন। কিন্তু তাফসীর আল-কাশ্শাফ-এর লিখক মু'তাজিলা মতবাদপন্থী আল্লামা জামখ্শারী হকুপহীদদের গৃহীত নীতির প্রতি ঈর্ষান্বিত হয়ে তাঁদেরকে মুজাসসিমাহ বা কায়াবাদী বলে আখ্যায়িত করেছেন।^{৪৭} এটি মু'তাজিলাদের ধৃষ্টতাপূর্ণ উক্তি বৈ আর কি? মু'তাজিলী মতবাদপুষ্ট তাফসীর আল-কাশ্শাফ ও আশা'আরী মতবাদপুষ্ট তাফসীর আল-বায়জাবীই আমাদের মাদ্রাসাসমূহে পড়ানো হয়ে থাকে। ফলে দেশের 'আলেমরা সেভাবেই গড়ে উঠেন।

আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত গৃহীত নীতিমালা

আল্লাহর মা'রিফাত ঈমান বিল গায়েব তথা অদৃশ্য বিশ্বাসসমূহের অন্যতম। এ ব্যাপারে সঠিক তথ্য মানুষকে অবগত করার জন্যেই মহান আল্লাহ তাঁর কিতাব নাযিল করেছেন, নাবী ও রাসূল প্রেরণ করেছেন। উদ্দেশ্য এই, মানুষ যেন নিজ বিবেক বুদ্ধি ও চিন্তা-দর্শনের স্বাধীনতা প্রয়োগ করে আল্লাহ সম্পর্কে যাচ্ছে-তাই মন্তব্য করে না

^{৪৬}) প্রাণ্ডক্ত/৮০, ৮১

^{৪৭}) 'আন-নাদওয়াতুল আ-লামিয়াহ লিশ্শাবাব আল-ইসলামী' প্রকাশিত (لسوعة الميسرة في الأديان والمذاهب والأحزاب)
২/১০১২ (المعاصرة)

বসে। কেননা, এতে বিভ্রান্তি অনিবার্য। আর আকীদা ও ঈমানের বিভ্রান্তি মানে সর্বস্বান্ত হয়ে জাহান্নামের খোরাকে পরিণত হওয়া, তাতে কোন সন্দেহ নেই।

উপরে বর্ণিত বিভ্রান্ত ফিরুকা যথা: জাহমিয়া, মু'তামিলা, আশা'আরী, মাতুরীদিয়া ও মুশাবিবহা ইত্যাদি কেন সৃষ্টি হয়েছে? এর জবাব পরিস্কার যে, তারা নিজ আকলকে কুরআন ও সুন্নাহর দলীলের উপর অত্যাধিকার দিয়েছে। এক্ষেত্রে তারা রাসূল ﷺ, তাঁর সাহাবা, তাবঈঈন ও সালাফে সালাহীন থেকে কোন ব্যাখ্যা গ্রহণ করেন নি। আর এটাই তাদের বিভ্রান্তির মূল কারণ। আল্লাহর আসমা ওয়াস সিফাত তথা তাঁর নাম ও গুণাবলী সম্পর্কে সঠিক নীতিমালা প্রত্যেক মুসলিমের জানা থাকা দরকার। যাতে সে আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে সৃষ্ট বিভিন্ন বিভ্রান্তি ও গোমরাহী থেকে মুক্ত থাকতে পারে। এ মহান উদ্দেশ্যে আমরা আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত তথা হকুপতীদের গৃহীত নীতিমালা উপস্থাপন করছি।

১. আল্লাহর নামসমূহ অতিসুন্দর এবং তাঁর গুণাবলী পরিপূর্ণ ও সুমহান, যাতে কোন প্রকার অপূর্ণতার সামান্যতমও সম্ভাবনা নেই^{৪৪}

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ﴾ الأعراف: من الآية ١٨٠

অর্থঃ “আল্লাহর সুন্দর নামসমূহ রয়েছে।” -আ'রাফ/১৮০

যেমন: আল্লাহ একটি গুণবাচক নাম (العليم) বা সর্বজ্ঞানী। এতে আল্লাহর একটি নামও রয়েছে এবং একটি পরিপূর্ণ গুণও রয়েছে আর তা হচ্ছে- ‘ইলম (العلم) বা জ্ঞান। তাঁর এ গুণ এতো পরিপূর্ণ যে, এতে কোন প্রকার ভ্রান্তি স্পর্শ করেনি এবং অজ্ঞতাও তা অতিক্রম করেনি। বরং তিনি পরিপূর্ণ জ্ঞানের মহাগুণে সুমহান।

এ প্রসঙ্গে আল্লাহ ﷻ বলেন :

﴿عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ، لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنسَى﴾ طه: ৫২

^{৪৪}) শায়খ মুহাম্মাদ আল-সালাহ আল-উছাইমীন, (القواعد المثل في صفات الله واسماؤه الحسنى) মাকতাবাত আজওয়াউইস সালাফ-রিয়াদ/২১

“এর ইলম বা জ্ঞান আমার রবের কাছে লিখিত আছে। আমার রব ভ্রান্ত হন না এবং বিস্মৃতও হন না।” -ত্ব-হা/৫২

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ، وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ﴾ التغابن: ৪

“আসমান ও যমীনে যা আছে, তিনি তা জানেন। তিনি আরও জানেন, তোমরা যা গোপনে কর এবং যা প্রকাশ্যে কর। আল্লাহ অন্তরের বিষয়াদি সম্পর্কে সম্যক জ্ঞাত।” -আত-তাগাবুন/৪

এভাবে আল-কুরআনে বর্ণিত আল্লাহর সকল গুণবাচক নাম- যা তাঁর নাম ও গুণ বুঝায়, তা অতি সুন্দর ও পরিপূর্ণ। যেমন: তিনি (الحي) বা চিরঞ্জীব। এটা তাঁর একটি নামও বুঝাবে এবং তিনি পরিপূর্ণ হায়াতের অধিকারী- এ গুণও বুঝাবে। অনুরূপভাবে (الرحمن) বা কৃপানিধান। ইহা তাঁর একটি গুণবাচক নাম এবং সাথে সাথে তাঁর একটি পরিপূর্ণ (الرحمة) ‘রহমত’ বা দয়াগুণ বুঝায়।^{৪৯}

^{৪৯} শায়খ মুহাম্মাদ আল-সালেহ আল-উছাইমীন (القواعد الثل في صفات الله واسمائه الحسنی) মাকাতাবাত আজওয়াউস্ সালাফ-রিয়াদ/২১, ২২

2. আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী সবই কুরআন ও সহীহ হাদীছের দলীল নির্ভরশীল। এক্ষেত্রে মুক্ত চিন্তার কোন অবকাশ নেই।⁵⁰

“আল্লাহর মা'রিফত দলীলভিত্তিক”এ শিরোনামে ইতোপূর্বে আমরা প্রসঙ্গের উল্লেখ করেছি এবং স্বপ্রমাণ বক্তব্য উল্লেখ করেছি। আল্লাহর কোন নাম বা গুণ তিনি নিজের জন্যে সাব্যস্ত করেন নি, এমন কোন নাম বা গুণ বাড়িয়ে বলার অবকাশ কোন মানুষের নেই। উপরন্তু আল্লাহ তাঁর জন্যে যা সাব্যস্ত করেছেন, তা হতে কোন একটি নাম বা গুণ কমিয়ে দেয়ারও কোন অধিকার কারো নেই। আদম সন্তানের জন্যে এ অনধিকার চর্চা আল্লাহ হারাম করতঃ এরশাদ ফরমান:

﴿وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ الأعراف: من الآية ٣٣

“আর আল্লাহর প্রতি এমন কথা আরোপ করা (হারাম), যা তোমরা জান না।”

—‘আরাফ/৩৩

ইমাম ইবনুল কাইয়িম (রাহি:) বলেন :

(القول على الله بلا علم في أسمائه وصفاته وأفعاله ووصفه بعد ما وصف به نفسه ووصفه به رسول الله صلى الله عليه وسلم ، فهذا أشد شئ منافضة ومنافاة لكل من له الخلق والأمر ، وقدح في نفس الربوبية وخصائص الرب ، فإن صدر ذلك عن علم فهو عناد أقبح من الشرك وأعظم إثماً عند الله ، فإنه المشرك المقر بصفات الرب خير من المعطل المجاهد لصفات كماله)

“আল্লাহর নামসমূহ, সিফাত ও কর্মসমূহ সম্বন্ধে জ্ঞান ছাড়া কোন কথা বলা, তিনি যা দ্বারা তার বিবরণ দিয়েছেন এবং রাসূলুল্লাহ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সালাম আল্লাহর পরিচয় যেভাবে দিয়েছেন, এর বিপরীতে কোন গুণ বর্ণনা করা সৃষ্টি ও হুকুম যে সত্ত্বার কাজ, তাঁর পরিপূর্ণতার বিপরীত ও ঘাটতিপূর্ণ মারাত্মক বিষয়। আর এটা রুবুবিয়াত ও রব-এর বৈশিষ্ট্যের উপর কলংক লেপন। যদি (আল্লাহর শানে এহেন অবান্তর কথা) কোন জানাশোনা ব্যক্তি থেকে প্রকাশ পায়, তাহলে সে ঔদ্ধত্যপূর্ণ। আর তা আল্লাহর নিকট শিরক হতেও অতি বড় পাপ। কেননা, ‘রব’-এর সিফাত বা

গুণসমূহ স্বীকারকারী মুশরিক আল্লাহর পরিপূর্ণ সিফাতকে অস্বীকারকারী 'মু'আত্বিলা' হতে উত্তম।^{৭১}

যারা কুরআন ও হাদীছ থেকে গৃহীত নীতিমালা পরিত্যাগ করে আল্লাহর নাম ও সিফাত সম্পর্কে অবান্তর কথা বলবে বা বিশ্বাস করবে, তারা যেন রোজ ক্রিয়ামতে আল্লাহর আদালতে জবাবদিহিতার ভয় করে।

আল্লাহ ﷻ বলেন :

﴿وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ، إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا﴾ الإسراء: ৩৬

“যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তার পিছে পড়ো না। নিশ্চ কান, চোখ ও অন্তঃকরণ এদের প্রত্যেকটিই জিজ্ঞাসিত হবে।” -বনী ইসরাঈল/৩৬

৩। আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী কুরআন এবং সহীহ হাদীছে যেভাবে বর্ণিত হয়েছে, কোনরূপ পরিবর্তন ছাড়া হুবহু সেভাবে মেনে নেয়া। এক্ষেত্রে কোন প্রকার যুক্তি-দর্শনের অবকাশ নেই। ৫২

কুরআন ও হাদীছের উপর নিজ জ্ঞান-বুদ্ধিকে অগ্রাধিকার দেয়া বড়ই গর্হিত কাজ। মূলতঃ এটি দুষ্টমতি ইয়াহুদীদের স্বভাবজাত দোষ। এ ঔদ্ধত্যের কারণে তারা ঈমান আনয়ন থেকে বহুদূরে ছিটকে পড়েছিল। তাদের এ ধৃষ্টতাপূর্ণ আচরণের কথা উল্লেখ করে আল্লাহ ﷻ বলেন :

﴿أَفَتَطْمَعُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ بقره: ৭০

“(হে মুসলিমগণ!) তোমরা কি আশা কর যে, তারা তোমাদের ন্যায় ঈমান আনবে? তাদের মধ্যে একদল ছিল, যারা আল্লাহর বাণী শ্রবণ করত, অতঃপর বুঝে-শুনে তা পরিবর্তন করে দিত এবং তারা তা জানত।” -বাকারা/৭৫

^{৭১} ইবনুল কায়্যিম আল-জাওযীয়াহ (الجواب الكافي) দারুন নাহওয়াহ আল-জাদীদাহ- বাইরুত/১৬৯, ১৭০

^{৭২} শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (القواعد الثلثي في صفات الله واسماؤه الحسنی) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাফ রিয়াদ/৭৫

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿مَنْ الْذِينَ هَآؤُلَآ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ۖ وَالنَّسَاءُ: مِنَ الْآيَةِ ٤٦﴾

“ইয়াহুদীদের মাঝে এমন কিছু লোক রয়েছে, যারা বাক্যকে এর আসল স্থান থেকে পরিবর্তন করে উচ্চারণ করে থাকে এবং বলে আমরা শুনলাম ও অমান্য করলাম।” -নিসা/৪৬

আল্লাহর সিফাতসমূহের প্রকাশ্য অর্থ জানা কথা। কিন্তু কাইফিয়্যাত বা ঐ সিফাতটির অবস্থানের পদ্ধতি অজ্ঞাত।^{৭০} জানা অর্থকে হুবহু সেভাবেই গ্রহণ করতে হবে; কোনরূপ বাঁকা পথ অবলম্বন করা যাবে না। পক্ষান্তরে এর পদ্ধতিস্বরূপ মহান আল্লাহর আযীম শান অনুযায়ী শোভনীয়; এ বিশ্বাস পোষণ করতে হবে। আর এটাই ‘আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা‘আত’ তথা হকুপছীদের আক্বীদা।

অথচ কতক শ্রেণীর বিদ্বান উপরোক্ত মূলনীতিকে উপেক্ষা করে নিজ আকলকে অগ্রাধিকার দিয়ে বিভ্রান্ত হয়েছে। একদল আল্লাহ ও তাঁর রাসূল ﷺ কর্তৃক ব্যাখ্যাকৃত উদ্দেশ্য থেকে বিচ্যুত হয়ে আল্লাহর সিফাতসমূহকে পরিবর্তন করেছে। অপর দল মূল উদ্দেশ্য উপেক্ষা করে আল্লাহর সিফাতসমূহকে অস্বীকার করে ভিন্ন অর্থ দাঁড় করিয়েছে। তৃতীয় আরেক দল যারা অতিমাত্রায় বাড়াবাড়ি করে আল্লাহর সিফাতকে সৃষ্টির সাথে সাদৃশ্য দিয়ে ব্যাখ্যা করেছে।^{৭১} এদের এ সকল ভ্রান্ত বক্তব্য থেকে মহান আল্লাহ অতি পবিত্র ও সুমহান।

আল্লাহর বাণীসমূহে কোন প্রকার অসম্পষ্টতা ও বৈপরীত্য নেই।

এ প্রসঙ্গে আল্লাহ ﷻ বলেন :

﴿أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْفُرْعَانَ ، وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۝ ٨٢﴾

“তারা কি কুরআন সম্পর্কে চিন্তা-ভাবনা করে দেখে না? এটা যদি আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো পক্ষ থেকে সমাগত হত, তাহলে তারা তাতে অনেক মতানৈক্য দেখতে পেত।” -নিসা/৮২

^{৭০} প্রাণ্ডক্ত/৭৬

^{৭১} শায়খ মুহাম্মদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (العقيدة أهل السنة والجماعة) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ, (পঞ্চম প্রকামনা)/১৮

ধ্বংস যার অনিবার্য, সে সত্য পথ বিচ্যুত হয়ে বিভ্রান্তির শিকার হবেই। প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (قَدْ تَرَكْتُكُمْ عَلَى الْبَيْضَاءِ لَيْلَهَا كَنَهَارُهَا لَا يَزِيغُ عَنْهَا بَعْدِي إِلَّا هَالِكٌ)

رواه أحمد والحاكم وابن ماجه

“আমি তোমাদেরকে স্পষ্ট শরীয়তের উপর রেখে গেলাম, যার দিবারাত্র সমান। (অর্থাৎ যাতে কোন প্রকার অস্পষ্টতা নেই)। আমার পর এ পথ থেকে সে-ই বিভ্রান্ত হবে, যে ধ্বংসকামী।”^{৫৫}

অতএব, আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী সংক্রান্ত বিভ্রান্তি থেকে বাঁচতে হলে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত কর্তৃক গৃহীত উক্ত নীতিমালার আলোকে ঈমান আনতে হবে। মনগড়া কোন ব্যাখ্যায় প্রবৃত্ত হওয়া যাবে না। এ প্রসঙ্গে হাফিজ ইবনে আব্দিল বার (রাহি:) বলেন: কুরআন ও সুন্নাহে বর্ণিত এগুলোর প্রতি ঈমান আনয়নে এবং হাক্কীকি অর্থে তা প্রয়োগ করতে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামায়াত তথা হকুপহীগণ ঐক্যমত হয়েছেন। তাঁরা সিফাতসমূহের কোন রূপক অর্থ গ্রহণ করেন না। এমন কি তারা কোন বস্তুর সাথে এর কোন সাদৃশ্যও প্রদান করেন না।^{৫৬}

৪. আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী কোন নির্দিষ্ট সংখ্যায় সীমিত নয়; বরং তা অসংখ্য ও অগণিত। এর প্রকৃত ইলম একমাত্র আল্লাহই ﷻ জানেন।^{৫৭}

হাফেয ইবনুল ক্বায়্যিম (রাহি:) বলেন: আল্লাহর সুন্দর নামসমূহ গণনা সীমার মধ্যে পড়ে না; বরং মহান আল্লাহর অনেক সুন্দর সুন্দর নাম ও গুণাবলী রয়েছে। তিনি যা তাঁর ‘ইলমুল গায়েব’ বা অদৃশ্য বিদ্যার মাঝে তাঁরই নিকট রেখেছেন। কোন নিকটবর্তী ফেরেশতা ও প্রেরিত নাবীও তা জানে না।^{৫৮} আল্লাহর নাবী মুহাম্মাদ সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়া সাল্লাম দু'আ করার সময় আল্লাহর অগণিত অসংখ্য সু-মহান নামসমূহের ওয়াসীলা গ্রহণ করতেন।

^{৫৫} মুসনাদে আহমদ, মুত্তাদারাকে হাকীম, ইবনে মাযাহ, আল-জামে'আ আস-সাগীর, সহীহুল জামে'আ আস-সাগীর লিল আলবাণী হা/৪২৪৫

^{৫৬} গৃহীত (الفواعد المثلي لابن تيمية) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাফ-রিয়াদ/৮০

^{৫৭} প্রাগুক্ত/৩৫

^{৫৮} ইবনুল ক্বায়্যিম আল-জাওয়ীয়াহ (بدائع الفواعد) ১/২৬৫ গৃহীত (الفواعد المثلي لابن تيمية) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাফ-রিয়াদ/৩৫

তিনি ﷺ এভাবে বলতেন :

قوله عليه السلام : (أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ أَوْ اسْتَأْذَنْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ) (رواه أحمد والحاكم وصححه ابن حبان)

“হে আল্লাহ! আমি তোমার কাছে প্রার্থনা করছি তোমার ঐ সমস্ত নামের উচ্চারণ, যা দ্বারা তুমি তোমার নামকরণ করেছ, অথবা যা তুমি তোমার কিতাবে নাযিল করেছ, বা যা তুমি তোমার কোন সৃষ্টিকে জানিয়েছ কিংবা যা তুমি তোমার অদৃশ্য বিদ্যার মাঝে এককভাবে সংরক্ষণ করে রেখেছ।”^{৫৯}

আলোচ্য হাদীছে আল্লাহর নামসমূহকে তিনভাবে ব্যাখ্যা করা হয়েছে। আর তা হচ্ছে :

১। এমন সব নাম, যা দ্বারা আল্লাহ তাঁর নামকরণ করেছেন। অতঃপর ফেরেশতা বা অন্য যাকে ইচ্ছা তার কাছে তিনি তা প্রকাশ করেছেন। কিন্তু কিতাবে তা নাযিল করেন নি।

২। এমন সব নাম, যা তিনি তাঁর কিতাবে নাযিল করেছেন। অতঃপর এর দ্বারা তিনি তাঁর বান্দাহদের নিকট পরিচয় প্রদান করেছেন।

৩। এমন সব নাম, যা তাঁর অদৃশ্য বিদ্যার মাঝে এককভাবে সঞ্চিত করে রেখেছেন। তাঁর কোন সৃষ্টি তা অবগত নয়।^{৬০}

কাজেই এ কথা পরিষ্কার যে, আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী সংখ্যা সীমার বাইরে। যদিও আমরা বুখারী ও মুসলিমে বর্ণিত হাদীছ দ্বারা তাঁর ‘আসমাউল হুসনা’ বা সুন্দর নামসমূহ ৯৯টি বলে জেনেছি। কিন্তু এর মানে এই নয় যে, তিনি মহান সত্ত্বা এরই মাঝে সীমাবদ্ধ; বরং তাঁর অসীম কুদরত ও গুণাবলী অসংখ্য ও অনেক। কেননা, হাদীসে এসেছে :

(إِنَّ اللَّهَ تِسْعَةٌ وَتِسْعِينَ اسْمًا مِائَةً إِلَّا وَاحِدًا مِنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ)

^{৫৯} মুসনাদে আহমাদ, হাকেম, সিলসিলাতু সাহীহা লিল-আলবানী হা/১৯৯

^{৬০} ইবনুল ক্বায়্যিম আল-জাওয়াযীহ (بداية النافع) ১/১৬৫ গৃহিত (القواعد الثلثي لابن تيمية) মাকতাবাত আজওয়াউস সাল্যফ-রিয়াদ/৩৫

“আল্লাহর ৯৯টি নাম রয়েছে- একশত হতে একটি কম- যে ব্যক্তি এটা গণনা করবে, সে জান্নাতে প্রবেশ করবে।”^{৬১} আর এখানে (أحصاؤها) গণনা অর্থ: শাব্দিক মুখস্থ করা ও অর্থ অনুধাবন করা। আর এর পূর্ণতা হলো এ সকল নামের দাবী অনুযায়ী আল্লাহর এবাদত করা।^{৬২}

আলোচ্য হাদীছে উল্লেখিত ৯৯টি নামের ফযীলত উদ্দেশ্য; এর দ্বারা সংখ্যা নির্ধারণ উদ্দেশ্য নয়। যদি সংখ্যা উদ্দেশ্য হতো, তাহলে হাদীছের বাক্যটি এভাবে হতো- (إن أسماء الله تسعة وتسعين اسماً) অর্থাৎ “আল্লাহর নামসমূহ হচ্ছে ৯৯টি।”^{৬৩} অথচ হাদীসে বলা আছে (إن لله تسعة وتسعين اسماً) অর্থাৎ আল্লাহর ৯৯টি নাম রয়েছে, যা কেউ মুখস্থ করলে সে জান্নাতে প্রবেশ করবে।” কাজেই এ কথা স্পষ্ট যে, হাদীস দ্বারা সংখ্যা সীমা নির্ধারণ উদ্দেশ্য নয়; বরং ফযীলত বর্ণনাই উদ্দেশ্য। উপরন্তু নাবী ﷺ থেকে আল্লাহর নামসমূহের সংখ্যা-সীমা নির্ধারণ ব্যাপারে কোন বিশুদ্ধ বর্ণনা পাওয়া যায় না। ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(تعينها ليس من كلام النبي صلى الله عليه وسلم باتفاق أهل المعرفة بحديثه)

“নাবী কারীম ﷺ এর হাদীছের জ্ঞানে পারদর্শী ‘আলেমদের ঐক্যমতে আল্লাহর নামসমূহের সংখ্যাসীমা নির্ধারণ সংক্রান্ত বিবরণ নাবী ﷺ-এর বাণীসমূহের অন্তর্গত নয়।^{৬৪}

উপরোল্লিখিত ৪টি মূলনীতিই মৌলিক। এগুলোকে সামনে রেখে আল্লাহর মা'রিফাত জানতে চাইলে আর বিভ্রান্তির কোন সম্ভাবনা থাকবে না। সর্বদা খেয়াল রাখতে হবে যে, মানুষের জ্ঞান অপ্রাপ্ত নয়; বরং কখনও তার বিপর্যয় ঘটে যেতে পারে। কিন্তু আল্লাহর ওহী নির্ভুল সত্যের একমাত্র উৎস। কাজেই ওহীর আলোকেই

^{৬১} মুসলিম (كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار) হা/২৬৭৭ বুখারী (কিছু শাব্দিক পরিবর্তনসহ) আদ-দাওয়াত অধ্যায় (باب الله مائة اسم غير واحد) ফাতহুলবারী হা/৬৪১০

^{৬২} ইমাম নববী (شرح صحيح مسلم) তাহক্বীক ডঃ ওয়াহবা আযযুহাইলী, দারুল খায়ের-বাইরুত ১৬/১৮৮ (সংক্ষেপায়িত)।

^{৬৩} শায়খ মুহাম্মদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (القواعد الثماني في صفات الله واسماءه الحسنى) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাফ-রিয়াদ/৩৬

^{৬৪} ইমাম ইবনে তাইমিয়া (مجموع فتاوى) ইবন কাসেম সংকলিত ৬/৩৮২

বিবেক-বুদ্ধি খরচ করতে হবে এবং সে নিরিখেই মানুষের জ্ঞানের পরীক্ষা হবে। নিজ জ্ঞানকে ওহীর উপর অত্যাধিকার দেয়া যাবে না।

আল-কুরআনে বর্ণিত আল্লাহর সুন্দর নামসমূহ

মহান আল্লাহর সু-উচ্চ সীফাতসমূহ সম্বলিত তাঁর 'আসমাউল হুসনা' বা সুন্দর নামগুলো আল-কুরআনে বিভিন্নভাবে বর্ণিত হয়েছে। যার কিছু মহান আল্লাহর জাত সংক্রান্ত নাম, কিছু তার সৃষ্টির গুণ নির্দেশক, কিছু কৃপা গুণ নির্দেশক, কিছু তাঁর মহান আজমত বা মহত্ব নির্দেশক, কিছু তাঁর ইল্ম নির্দেশক এবং কিছু তাঁর কুদরত ও যাবতীয় বিষয় পরিচালনা এবং নিয়ন্ত্রণ নির্দেশক।^{৬৫} এভাবে আল-কুরআনে মহান আল্লাহর ৮১টি সুন্দর ও সুমহান নাম সন্নিবেশিত আছে। বাকী ১৮টি নাম সহীহ হাদীছে বর্ণিত আছে। নিচে আল-কুরআনে বর্ণিত 'আসমাউল হুসনা' বা সুন্দর নামসমূহের অর্থ ও বাংলা উচ্চারণসহ তালিকা পেশ করা হল:^{৬৬}

- (১) 'আল্লাহ' (الله) আল্লাহ, ইহা তাঁর জাত-ই নাম।
- (২) 'আল-আহাদ' (الْأَحَدُ) একক,
- (৩) 'আল-আ'লা' (الْأَعْلَى) সুউচ্চ,
- (৪) 'আল-আকরাম' (الْأَكْرَمُ) অতি সম্মানী,
- (৫) 'আল-ইলা-হ' (إِلَهِ) একমাত্র উপাস্য,
- (৬) 'আল-আউয়ালু' (الْأَوَّلُ) আদি,
- (৭) 'আল-আখিরু' (الْآخِرُ) অন্ত,
- (৮) 'আজ জাহিরু' (الظَّاهِرُ) প্রকাশমান,
- (৯) 'আল-বাত্বিনু' (الْبَاطِنُ) অপ্রকাশমান,
- (১০) 'আল-বারিউ' (الْبَارِئُ) উদ্ভাবক,

^{৬৫} আস-সায়েদ সাবেকু (العقيدة الإسلامية) দারুল ফিকর বাইরুত/৩০

^{৬৬} এই সুন্দর নামসমূহ শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন প্রণীত (الفوائد المتلى) গ্রন্থ অবলম্বনে সজ্জিত।

- (১১) 'আল-বাররু' (الْبَرُّ) কল্যাণকারী,
 (১২) 'আল-বাসীরু' (الْبَصِيرُ) সর্বদৃষ্টা,
 (১৩) 'আত্ তাওয়াবু' (التَّوَابُ) তাওবা ক্ববুলকারী
 (১৪) 'আল-জাব্বারু' (الْجَبَّارُ) বাধ্যকারী।
 (১৫) 'আল-হাফিজু' (الْحَافِظُ) সংরক্ষণকারী,
 (১৬) 'আল-হাসীবু' (الْحَسِيبُ) অধিক হিসাব গ্রহণকারী,
 (১৭) 'আল-হাফীযু' (الْحَفِیْظُ) অধিক রক্ষাকারী,
 (১৮) 'আল-হাফিয্যু' (الْحَفِیْیُ) অতীব দয়াশীল, {এ নামটি সংযুক্তির
 বেলায় কিছুটা সন্দেহ রয়েছে। কেননা, ইহা শুধুমাত্র ইব্রাহীম (আঃ)-এর যবানীতে
 মহান আল্লাহ উল্লেখ করেছেন। দেখুন-সূরা মারইয়াম/৪৭}

- (১৯) 'আল-হাক্কু' (الْحَقُّ) সত্য,
 (২০) 'আল-মুবীনু' (الْمُبِیْنُ) স্পষ্ট ব্যক্তকারী,
 (২১) 'আল-হাকীমু' (الْحَكِیْمُ) বিজ্ঞ,
 (২২) 'আল-হালীমু' (الْحَلِیْمُ) অতি ধৈর্যসহিষ্ণু,
 (২৩) 'আল-হামীদু' (الْحَمِیْدُ) চির প্রশংসিত,
 (২৪) আল-হাইয়্যু (الْحَیُّ) চিরঞ্জীব,
 (২৫) আল-কাইয়্যুম (الْقَیُّوْمُ) সবকিছুর ধারক,
 (২৬) আল-খাবীরু (الْخَبِیْرُ) সর্বজ্ঞ,
 (২৭) আল-খালিকু (الْخَالِقُ) সৃষ্টিকর্তা,
 (২৮) আল-খাল্লাকু (الْخَالِقُ) একক স্রষ্টা,
 (২৯) আর-রাউফু (الرَّؤُفُ), দয়াবান,
 (৩০) আর-রাহমানু (الرَّحْمَنُ) পরম করুণাময়,
 (৩১) আর-রাহীমু (الرَّحِیْمُ) পরম দয়ালু,
 (৩২) আর-রাজ্জা-কু (الرَّزَّاقُ) অধিক রিযিক দাতা,

- (৩৩) আর-রাব্বীবু (الرَّحِيبُ) অধিক পর্যবেক্ষণকারী,
 (৩৪) আস-সালামু (السَّلَامُ) শান্তি,
 (৩৫) আস-সামীউ (السَّمِيعُ) সর্বশ্রোতা,
 (৩৬) আশ্শা-কিরু (الشَّاكِرُ) প্রতিদানদাতা,
 (৩৭) আশ্শাকুর, (الشَّكُورُ) অধিক প্রতিদান দাতা,
 (৩৮) আশ-শাহীদু (الشَّهِيدُ) সবকিছু প্রত্যক্ষকারী,
 (৩৯) আস-সামাদু (الصَّمَدُ) অমুখাপেক্ষী,
 (৪০) আল-'আ-লিমু (الْعَلِيمُ) জ্ঞানী,
 (৪১) আল-'আযীয (الْعَزِيزُ) পরাক্রমশালী,
 (৪২) আল-আজীমু (الْعَظِيمُ) মহান,
 (৪৩) আল-'আফয্যু, (الْعَفُوُّ) ক্ষমাকারী,
 (৪৪) আল-'আলীমু (الْعَلِيمُ) সর্বজ্ঞ,
 (৪৫) আল-আলীয্যু (الْعَلِيُّ) সর্বোচ্চ,
 (৪৬) আল-গাফ্ফারু (الْغَفَّارُ) বারবার ক্ষমাকারী,
 (৪৭) আল-গাফুর (الْغُفُورُ) অধিক ক্ষমাসীল,
 (৪৮) আল-গানিয্যু (الْغَنِيُّ) ধনী,
 (৪৯) আল-ফাতাহ (الْفَتْاحُ) উন্মুক্তকারী,
 (৫০) আল-ক্বা-দিরু (الْقَادِرُ) ক্ষমতাসীল,
 (৫১) আল-ক্বা-হিরু (الْقَاهِرُ) প্রতাপাবিত,
 (৫২) আল-কুদ্দুসু (الْقُدُّوسُ) পবিত্র,
 (৫৩) আল-ক্বাদীরু (الْقَدِيرُ) অধিক ক্ষমতাসীল,
 (৫৪) আল-ক্বারীবু (الْقَرِيبُ) অধিক নিকটবর্তী,
 (৫৫) আল-ক্বাভিয্যু (الْقَوِيُّ) শক্তিশালী,
 (৫৬) আল-ক্বাহ্হারু (الْقَهَّارُ) অধিক প্রতাপাবিত,

- (৫৭) আল-কাবীর (الكبير) বিশাল,
 (৫৮) আল-কারীম (الكریم) দয়ালু,
 (৫৯) আল-লাতীফ (اللطيف) সূক্ষ্মদ্রষ্টা,
 (৬০) আল-মু'মিনু (المؤمن) নিরাপত্তা দানকারী,
 (৬১) আল-মুতা'আলী (المتعالي) সর্বোচ্চ,
 (৬২) আল-মুতাকাব্বির (المتكبر) গর্বকারী,
 (৬৩) আল-মাত্বীন (المتين) মজবুত,
 (৬৪) আল-মুজীব (المجيب) প্রার্থনা শ্রবণকারী,
 (৬৫) আল-মাজীদ (المجيد) মর্যাদাশীল,
 (৬৬) আল-মুহীতু (المحيط) বেষ্টনকারী,
 (৬৭) আল-মুসাভির (المصور) আকৃতিদানকারী,
 (৬৮) আল-মুকতাদির (المقتدر) বিজয়ী,
 (৬৯) আল-মুকীতু (المقيط) প্রতাপশালী,
(৭০) আল-মালিক (الملك) মালিক বা প্রভু,
(৭১) আল-মালীক (المليك) রাজাধিরাজ,
 (৭২) আল-মাওলা (المولى) অভিভাবক,
 (৭৩) আল-মুহাইমিন (المُهَيِّم) প্রভাব বিস্তারকারী,
 (৭৪) আন্ নাসীর (النصير) অধিক সাহায্যকারী,
 (৭৫) আল-ওয়াহিদ (الواحد) একক,
 (৭৬) আল-ওয়ারিছ (الوارث) উত্তরাধিকার দানকারী,
 (৭৭) আল-ওয়াসিউ (الواسع) প্রশস্ত,
 (৭৮) আল-ওয়াদুদ (الودود) পরম বন্ধু,
 (৭৯) আল-ওয়াকীল (الوكيل) তত্ত্বাবধায়ক,

(৮০) আল-ওয়ালিয়্যু (الْوَلِيُّ) অভিভাবক,

(৮১) আল-ওহ্‌বু (الْوَهَّابُ) অধিক দানকারী।

হাদীছে বর্ণিত আল্লাহর নামসমূহ

মহান আল্লাহর বাকী ১৮টি গুণবাচক নাম বিভিন্ন হাদীছে বর্ণিত আছে। নিচে এর তালিকা দেয়া হলো:

(৮২) আল-জামীল (الْجَمِيلُ) সুন্দর।^{৬৭}

(৮৩) আল-জাওয়াদ (الْجَوَادُ) অধিক বদান্য।^{৬৮}

(৮৪) আল-হাকাম (الْحَكَمُ) বিজ্ঞ।^{৬৯}

(এ নামসমূহ নির্ধারণে 'ওলামাদের মাঝে ইখতিলাফ রয়েছে। বিস্তারিত জানতে হলে আল-হাফেয ইবন হাজার (রাহি:) প্রণীত 'ফতহুলবারী' ১১/২১৮-২২৮ পৃঃ দেখুন)

(৮৫) আল-হাইয়্যু (الْحَيُّ) চিরঞ্জীব।^{৭০}

(৮৬) আর-রাব্বু (الرَّبُّ) প্রতিপালক।^{৭১}

(৮৭) আর-রাফীক্বু (الرَّفِيقُ) কোমলকারী।^{৭২}

(৮৮) আস-সুব্বুহু (السُّبُّوحُ) সকল দোষমুক্ত।^{৭৩}

(৮৯) আস-সায়্যিদ (السَّيِّدُ) একচ্ছত্র বুয়ুর্গী বা মর্যাদাবান।^{৭৪}

^{৬৭} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/৯১ (১৪৭)

^{৬৮} ইবন আসাকির, সহীহুল জামে'আ লিল আল-বাগী হা/১৭৯৬

^{৬৯} আবু দাউদ, নাসাঈ, বুখারী আল-আদাবুল মুফরাদ" (সহীহ) ইরওয়াউল গালীল লিল আলবানী হা/২৬১৫

^{৭০} আবু দাউদ, তিরমিযী, ইবনে মাযাহ, হাকেম, সহীহুল জামে'আ লিল আলবানী-হা/১৭৫৩

^{৭১} তিরমিযী হা/৩৫৭৯ হাকেম একে মুসলিমের শর্তে সহীহ বলেছেন। মুসলিমের অপর বর্ণনায়ও এ নাম রয়েছে।

সহীহ মুসলিম-হা/২০৭ (৪৭৯)

^{৭২} সহীহ মুসলিম (كتاب البر والصلة) দয়া বা কোমলতার ফযীলত অনুচ্ছেদ- হা/৭৭ (২৫৯৩)

^{৭৩} সহীহ মুসলিম (كتاب الصلاة) রুকু ও সিজদায় যা বলা হবে-অনুচ্ছেদ হা/২২৩ (৪৮৭)

^{৭৪} মুসনাদে আহমদ, আবু দাউদ (সহীহ) সহীল জামে'আ লিল-আল-বাগী হা/৩৫৯৪

- (৯০) আশ-শাফী (الشافي) শেফা বা রোগ মুক্তিদানকারী।^{৭৫}
 (৯১) আত্ব-তায়্যিবু (الطيب) পবিত্র।^{৭৬}
 (৯২) আল-ক্বাবিযু (القابض) সংকোচনকারী।^{৭৭}
 (৯৩) আল-বাসিতু (الباسط) প্রসারকারী।^{৭৮}
 (৯৪) আল-মুকাদ্দিমু (المقدم) অগ্রসরকারী।^{৭৯}
 (৯৫) আল-মুআখিরু (المؤخر) পশ্চাতকারী।^{৮০}
 (৯৬) আল-মুহসিনু (المحسن) ইহসান বা বদলাদানকারী।^{৮১}
 (৯৭) আল-মু'ত্বী, (المعطي) দানকারী।^{৮২}
 (৯৮) আন-মান্নানু (المنان) অধিক দাতা।^{৮৩}
 (৯৯) আল-বিতরু (الوتر) বেজোড়-একক।^{৮৪}

উল্লেখ্য যে, মহান আল্লাহর মহিমাশিত নামসমূহের অন্তর্ভুক্ত হচ্ছে (ক) মালিকুল মুল্ক (الملك الملك) রাজত্বের মালিক এবং (খ) যুল জালা-লি ওয়াল ইক্ৰাম (ذو الجلال والإكرام) মর্যাদা ও সম্মানের অধিকারী। তাছাড়া আল্লাহর 'আসমাউল হুসনা' বা সুন্দর

^{৭৫} বুখারী (كتاب الطب) নাবীর ঝাড়ফুক অনুচ্ছেদ হা/৫৭৪২, সহীহ মুসলিম (كتاب السلام) রোগীকে ফুক দেয়া মুস্তাহাব অনুচ্ছেদ হা/৪৬ (২১৯১)

^{৭৬} সহীহ মুসলিম (كتاب الزكاة) হা/৬৫ (১০১৫)

^{৭৭} আবু দাউদ, তিরমিযী, ইবনে মাযাহ, দারেমী, আহমদ-৩/১৫৬

^{৭৮} প্রাণ্ডক্ত (القابض والباسط) নামদ্বয় একই হাদীছে বর্ণিত

^{৭৯} সহীহ মুসলিম (كتاب المسافرين) রাতের সালাত ও কিয়ামের দু'আ অনুচ্ছেদ-হা/২০১ (৭৭১) বুখারী (كتاب (النهيجه) ফতহুলবারী ৩য় খণ্ড হা/১১২০

^{৮০} প্রাণ্ডক্ত (المؤخر والمقدم) নামদ্বয় একই হাদীছে বর্ণিত।

^{৮১} ত্বাবারানী, মুসান্নাফ, আব্দুর রাজ্জাক, আল-কামেল, লি ইবনে আদী, সহীহুল জামেআ আস-সাগীর লিল, আলবানী হা/১৮১৯

^{৮২} বুখারী (كتاب الغرض الخمس) ফতহুলবারী ৬/২৫০-২৫১ হা/৩১১৬

^{৮৩} তিরমিযী, ইবনে মাযাহ, নাসায়ী, হাকেম, আবু দাউদ (দু'আ অধ্যায়) হা/১৪৯২

^{৮৪} বুখারী (كتاب الدعوات) হা/৬৪১০ মুসলিম (كتاب الذكر والدعاء) হা/২৬৭৭

নামসমূহের তালিকাসংক্রান্ত কোন মরফু' হাদীস নেই।^{৮৫} সে কারণে তা নির্ধারণে বিদ্বানদের মাঝে মতানৈক্য রয়েছে। বিস্তারিত জানতে হলে হাফেজ ইবনে হাজার আল-আস-ক্বালা-নী (রাহি:) প্রণীত সহীহ আল-বুখারীর ব্যাখ্যা গ্রন্থ ফত্বুলবারী ১১/২১৮-২২৮ পৃ: দেখুন।

কুরআন ও সহীহ হাদীছ মহান আল্লাহর আরও যেসব জাতি সিফাত সাব্যস্ত করে

আমরা 'আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত' গৃহীত আসমা ওয়াস সিফাতসংক্রান্ত নীতিমালার ৪র্থ নীতিতে উল্লেখ করেছি যে, আল্লাহর নামসমূহ ও গুণাবলী কোন নির্দিষ্ট সংখ্যায় সীমিত নয়। তাই আমাদের ঈমান বিল্লাহ (আল্লাহর প্রতি ঈমান)-এর ক্ষেত্রে কোন প্রকার ভ্রান্তির সম্ভাবনা যাতে না থাকে, সেজন্য এ পর্বে কুরআন ও সুন্নাহ কর্তৃক সাব্যস্তকৃত আরও কিছু বিশেষ বিশেষ সিফাত উল্লেখ করছি।

১। আল-ইরাদা (الإرادة) বা ইচ্ছা শক্তি:

ইহা মহান আল্লাহর কর্মবিষয়ক গুণ। যা তাঁর ইচ্ছা ও কুদরত সংশ্লিষ্ট। চাইলে তিনি তা সম্পাদন করেন। আর না চাইলে তা তিনি করেন না।^{৮৬} আল্লাহ ﷻ বলেন:

(فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ، وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصْعَدُ فِي السَّمَاءِ ، ﴿١٢٥﴾ الأنعام: من الآية ১২৫)

“অতঃপর আল্লাহ যাকে পথ প্রদর্শন করতে চান, তার বক্ষকে ইসলামের জন্য উন্মুক্ত করে দেন এবং যাকে বিপথগামী করতে চান, তার বক্ষকে অধিক সংকীর্ণ করে দেন, যেন সে স্ববেগে আকাশে আরোহণ করছে।” -আনআনাম/১২৫

প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

^{৮৫} শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (القواعد المثلى في صفات الله وإسمائه الحسنى) মাকতাবাত আজওয়াউস সালাফ-রিয়াদ/৪০

^{৮৬} বিশিষ্ট ওলামাবর্ণ কর্তৃক সম্পাদিত (كتاب أصول الإيمان من الكتاب والسنة) বাদশাহ ফাহাদ কুরআন মুদ্রণ কমপ্লেক্স-মদীনা/৮৫, ৮৬

قوله عليه السلام : (إِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ يُعَذِّبُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ) (رواه مسلم)

“যখন আল্লাহ কোন জাতিকে শাস্তি দেয়ার ইচ্ছা করেন, (তখন) সে আযাব সকলকেই পায়, যারা তাদের মাঝে ছিল। অতঃপর তাদেরকে তাদের কর্মসমূহের উপর উত্থিত করা হবে।”^{৮৭}

২. আল-কালাম (الكلامة) বা কথা বলা:

ইহা পরিপূর্ণ গুণ। এর বিপরীতে কথা না বলা একটি দোষ। মুসা عليه السلام এর জাতির কিয়দংশ যখন হাতে গড়া গো-বৎসের পূজা শুরু করল, অথচ সে বৎস তো কথা বলতে জানত না, তখন তাদের এ ত্রুটিযুক্ত বস্তু ইলাহ বা উপাস্য হতে পারে না, সে চিত্র বর্ণনা করে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿لَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا+ اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ﴾ (الأعراف: من الآية ١٤٨)

“তারা কি এ কথাও লক্ষ্য করে না যে, সেটি তাদের সাথে কথা বলছে না এবং তাদেরকে কোন পথও বাতলে দিচ্ছে না। তারা সেটিকে উপাস্য বানিয়ে নিল। বস্তুতঃ তারা ছিল যালেম।” -আ'রাফ/১৪৮

এতে বুঝা গেল যে, কথা না বলা একটি দোষ। আর এহেন দোষযুক্ত সত্ত্বা ইলাহ বা উপাস্য হতে পারে না।^{৮৮}

অথচ আল্লাহ ﷻ এসব দোষারোপ থেকে অতি পবিত্র ও সুমহান। ‘আল-কালাম’ বা কথা বলা মহান আল্লাহর যাত-ই গুণসমূহের অন্যতম। তবে ধরন-প্রকৃতির দিক থেকে একে তাঁর কর্মবিষয়ক গুণ বলা হয়। তিনি যখন যে বিষয়ে যেরূপ চান-কথা বলেন।^{৮৯} আর ইহাই হলো ‘আহলুস সুনুহ ওয়াল জামা’ আতের গৃহীত আকীদা। একে আরও সহজ করে বলা যায় যে, নিশ্চয়ই আল্লাহ হাকীকি কথা দ্বারা যখন তিনি

^{৮৭}) সহীহ মুসলিম (كتاب الجنة وصفة نعيمها وأهلها) ২৮৭৯

^{৮৮}) ইবনু আবিল ‘ইজ্জ’ (شرح العقيدة الطحاوية) মুয়াসসা সাতুর রিসালাহ- বাইরুত/১৭৫

^{৮৯}) বিশিষ্ট ওলামাবর্ণ কর্তৃক সম্পাদিত (كتاب أصول الإيمان في ضوء الكتاب والسنة) বাদশাহ ফাহাদ কুরআন মুদ্রণ কমপ্লেক্স-মদীন/৮৭

চান, যেভাবে চান, যা দ্বারা চান- সেভাবেই অক্ষর ও শব্দ দ্বারা কথা বলেন। যা সৃষ্টির শব্দের সাথে সাদৃশ্যশীল নয়।^{৯০}

আল্লাহ ﷻ তাঁর কথা বলার এ গুণ প্রমাণে আল-কুরআনে এরশাদ ফরমান:

﴿وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا﴾ النساء: من الآية ١٦٤

“আর আল্লাহ মূসার সাথে সরাসরি কথোপকথন করেছেন।” -নিসা/১৬৪

আলোচ্য আয়াতে কথা বলা একটি কর্ম। আর এর কর্তা আল্লাহ ﷻ। তিনি যে মূসার সাথে কথা বলেছেন- তাঁর এ কথা বলার গুণ সাব্যস্তের জন্যে দৃঢ়তা ব্যাঞ্জক (تَكْلِيمًا) ক্রিয়ামূল উল্লেখ করে বুঝিয়েছেন যে, তাঁর কথা বলা হাক্বিকী। একে রূপক অর্থে রূপান্তরের কোন সম্ভাবনা নেই।^{৯১}

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَمَنْ أَضَدَّقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا﴾ النساء: من الآية ٨٧

“আল্লাহর চাইতে অধিক সত্য কথা আর কার হতে পারে?”

এখানে প্রশ্নবোধক বিশেষ্য (ومن) ‘না’ অর্থ জ্ঞাপক। আর সাধারণ নাবোধক অব্যয় ব্যবহারের চেয়ে প্রশ্নবোধক ‘না’ আরও অধিক বলিষ্ঠপূর্ণ। বরং ইহা চ্যালেঞ্জ-এর অর্থজ্ঞাপক। সুতরাং অর্থ দাঁড়াবে আল্লাহর চেয়ে অধিক সত্য কথা বলবে- এমন কেউ নেই।^{৯২}

ব্রাহ্ম মু'তাযিলা ফির্কা ধারণা করে যে, কথা বলার এ গুণটি সাব্যস্ত করলে মহান আল্লাহকে সৃষ্টির সাথে সাদৃশ্য দেয়া ও তাঁর কায়া হওয়া- এ বিশ্বাস জরুরী হয়ে পড়বে। এ সন্দেহেরজালে পড়ে তারা কুরআনকেও আল্লাহর কালাম বলতে রাজী নয়। -নাউযুবিল্লাহ

তাদের এ ব্রাহ্ম ধারণা ও বিশ্বাসের খণ্ডনে আমরা বলব যে, আল্লাহ ﷻ তাঁর আযীম শান অনুযায়ী কথা বলেন। এ মর্মে কুরআন ও সহীহ হাদীছের দলীল

^{৯০} শায়খ মুহাম্মাদ বিন সালাহ আল-উছাইমীন (রহ) (شرح العقيدة الوسطية لابن تيمية) দার ইবনুল জাওযী, দামাম ১/৪১৯

^{৯১} প্রাণ্ড/৪২১

^{৯২} প্রাণ্ড/৪১৮

বিদ্যমান। সুতরাং আমাদের বিশ্বাস- তিনি কথা বলেন। তবে তিনি কিভাবে কথা বলেন- এটা আমাদের জানা নেই।^{৯০}

৩. আল-ওয়াজ্হ (الوجه) বা মুখমণ্ডল:

এটা প্রত্যেক বস্তুর সম্মুখভাগকে বলা হয়। কেননা, মানুষ প্রথমে এরই মুখোমুখী হয়ে থাকে। আর ব্যক্তি বা সত্তার শান অনুযায়ী তা প্রত্যেকের হয়।^{৯১} অনুরূপভাবে মহান আল্লাহর শান অনুযায়ী তাঁর মুখমণ্ডল রয়েছে। ইহা তাঁর সংবাদ সম্বলিত জাত-ই সিফাত বা গুণ।^{৯২} কুরআন হাদীছে এর প্রমাণ বিদ্যমান।

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ، وَيَقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَلِ وَالْإِكْرَامِ﴾ الرحمن: ২৬-২৭

“ভূ-পৃষ্ঠের সবকিছুই ধ্বংসশীল। একমাত্র তোমার রবের মুখমণ্ডলই অবশিষ্ট থাকবে, যিনি মহিমান্বিত ও মহানুভব।” -আর-রহমান/২৬, ২৭

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَلَا تُدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ + لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ × كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ×﴾ القصص: ২২

আল-আল

“তুমি আল্লাহর সাথে অন্য ‘ইলাহ’ বা উপাস্যকে আহ্বান করো না। তিনি ছাড়া কোন ইলাহ নেই। আল্লাহর মুখমণ্ডল ব্যতীত সবকিছুই ধ্বংস হবে। -আল-কাসাস/৮৮

এমর্মে অনেক সহীহ হাদীসও রয়েছে, যা প্রমাণ করে যে, মহান আল্লাহর ‘মুখমণ্ডল’ আছে। প্রিয় নাবী ﷺ দু‘আ করার সময় তার মুখমণ্ডলের দোহাই দিয়ে আশ্রয় প্রার্থনা করতেন।

সাহাবী যাবের ইবন আব্দুল্লাহ ﷺ বলেন: যখন আল্লাহর বাণী:

﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ﴾ سورة الأنعام

^{৯০} ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআস্সাসাতুর রিসালাহ-বাইরুত/১৪৪, ১৭৫

^{৯১} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুস ইফতা পত্রাংশনী-রিয়াদ/৫২

^{৯২} বিশিষ্ট ওলামাবর্গ কর্তৃক সম্পাদিত (كتاب أصول الإيمان من الكتاب والسنة) বাদশাহ ফাহাদ কুরআন মুদ্রণ কমপ্লেক্স-মদীনা/৮৭

“বলুন! তিনিই (আল্লাহ) শক্তিমান, যে তোমাদের উপর কোন শাস্তি উপর দিক থেকে প্রেরণ করবেন—” আয়াতাংশ নাযিল হলো, তখন নাবী ﷺ বললেন: (اعوذ بوجهك) অর্থাৎ “(হে আল্লাহ!) আমি তোমার মুখমণ্ডলের ওসীলায় আশ্রয় প্রার্থনা করছি।” অতঃপর সাহাবী পরবর্তী আয়াতাংশ তেলাওয়াত করলেন, যাতে আছে (أومن تحت) অথবা “তোমাদের পদতল থেকে (আযাব) প্রেরণ করবেন।” তখন নাবী ﷺ বললেন (اعوذ بوجهك) অর্থাৎ “হে আল্লাহ! আমি তোমার মুখমণ্ডলের ওসীলায় আশ্রয় প্রার্থনা করছি।” পরে সাহাবী আয়াতের বাকী অংশ (أو يلبسكم شيعا) অথবা, তিনি তোমাদেরকে দল-উপদলে বিভক্ত করে দেবেন- পাঠ করলেন তখন নাবী ﷺ বললেন: (هذا أيسر) ইহা খুবই সহজ।^{৯৬}

অপর হাদীছে বর্ণিত হয়েছে যে, রাসূলুল্লাহ ﷺ আল্লাহর মুখমণ্ডলের দিকে সুমিষ্ট দৃষ্টি নিয়ে তাকানোর গভীর আত্মহ ব্যক্ত করতেন এবং আখেরাতে তাঁর চেহারার দর্শন কামনা করে দু'আ করতেন। নাবী করীম ﷺ কর্তৃক পঠিত একটি দীর্ঘ দু'আর একাংশে রয়েছে:

(وَأَسْأَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ) رواه النسائي

“আর (হে আল্লাহ!) আমি তোমার মুখমণ্ডলের দিকে স্বাদের নয়নে তাকানোর (তাওফীক) প্রার্থনা করছি...”^{৯৭}

কুরআন ও সুন্নাহের উপরোক্ত দলীলসমূহ ছাড়া আরও অনেক প্রমাণাদি রয়েছে, যা প্রমাণ করে যে, মহান আল্লাহর ‘মুখমণ্ডল’ আছে। অথচ প্রকাশ্য ও স্পষ্ট প্রমাণাদি থাকার পরও আল্লাহর সিফাত অস্বীকারকারী তথাকথিত ভ্রাতাদের ফেরকাসমূহ কষ্ট কসরত করে এর অপব্যাখ্যায় ব্যপ্ত হয়েছে। তারা মুখমণ্ডলের অর্থ করেছে ‘আল্লাহর সত্ত্বা ও সাওয়াব’ ইত্যাদি।^{৯৮}

^{৯৬}) বুখারী كتاب التفسير ৮/৪৬২৮

^{৯৭}) সহীহ সুন্নাহ নাসায়ী লিল আলবানী (باب التوسيع في الصلاة) অন্যান্য দু'আ অনুচ্ছেদ/১২৩৭

^{৯৮}) মুহাম্মাদ খলীল হাররাস (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৬ষ্ঠ সংস্করণ) রিয়াদ/৬৫

আমরা বিশ্বাস করি যে, ‘মুখমণ্ডল’ আল্লাহর একটি সিফাত; সত্তা নয়। ইহা মহান আল্লাহর শান অনুযায়ী একটি গুণ, যা কায়াবাদীদের অবান্তর বিশ্বাসের ন্যায় আল্লাহর জন্য অঙ্গ-প্রত্যঙ্গের যৌগিক সমষ্টির কল্পনা করতে হবে এমনটি বুঝায় না। আরও স্পষ্ট করে বলা যায় যে, (الوجه) ‘মুখমণ্ডল’-এর অর্থ জ্ঞাত। কিন্তু এর রূপ অজ্ঞাত। আমরা জানি না আল্লাহর মুখমণ্ডল কেমন? কিন্তু আমরা বিশ্বাস করি যে, মহান আল্লাহর মহিমাময় ও মহানুভব গুণসম্বলিত মুখমণ্ডল রয়েছে।^{৯৯}

এমর্মে প্রিয় নাবী ﷺ এর একখানা হাদীছ প্রণিধানযোগ্য। যাতে মহান আল্লাহর মুখমণ্ডলের এ সিফাত অতি পরিষ্কারভাবে বর্ণিত হয়েছে। এরশাদ হচ্ছে:

﴿حِجَابُهُ الثَّوْرُ لَوْ كَشَفَهُ لَأَخْرَقَ سُبُحَاتُ وَجْهِهِ مَا انْتَهَى إِلَيْهِ بَصَرُهُ مِنْ خَلْقِهِ﴾ رواه مسلم

“তিনি (মহান আল্লাহ) দর্শন হতে পর্দাবৃত। যদি তিনি তাঁর মুখমণ্ডলের প্রকাশ করতেন, তাহলে তার মুখমণ্ডলের সৌন্দর্য, মহত্ত্ব ও আলোকবর্তিকা সৃষ্টির প্রতি যতদূর তাঁর দৃষ্টি নিবন্ধ হয়- সকল সৃষ্টিকে জ্বালিয়ে দিত।”^{১০০}

*কাজেই আমরা নির্দিধায় বলতে পারি যে, আল্লাহর মহান মুখমণ্ডলের সাথে কোন সৃষ্টির সাদৃশ্য চলবে না। তিনি তাঁর এ গুণে সু-মহান। ‘মুখমণ্ডল’ দ্বারা ‘সত্তা।’ এ অর্থ করাও যাবে না। বরং মহান সত্তার একটি সিফাত বা গুণ হচ্ছে মুখমণ্ডল। আর মুখমণ্ডলের সিফাত হচ্ছে ‘মহিমাময় ও মহানুভব।’^{১০১}

^{৯৯}) মুহাম্মাদ বিন সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবন আল-জাওয়া-দান্বাম ১/২৮৩

^{১০০}) সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৯/(২৯৩)

^{১০১}) মুহাম্মাদ খলীল আল-হারাস (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৬ষ্ঠ সংস্করণ)-রিয়াদ/৬৬

৪। আল-'আইনা-ন (العينان) বা চক্ষুদ্বয়:

মহান আল্লাহর দু'টি চোখ রয়েছে। ইহা তাঁর সংবাদসূচক জাত-ই ও হাক্কীকি সিফাত বা গুণ।^{১০২} মহান আল্লাহ তাঁর শান অনুযায়ী ইহা দ্বারা সমস্ত দৃশ্যমান বস্তু প্রত্যক্ষ করেন।^{১০৩}

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَأَصْنِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا﴾ الطور: من الآية ٤٨

“আর আপনি আপনার রবের নির্দেশের অপেক্ষা করুন! আপনি আমার চোখের সামনে আছেন।” -আত্ ভূর/৪৮

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَحَمَلْنَاهُ عَلَىٰ ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسْرٍ، تَخْرِى بِأَعْيُنِنَا حَزَآءَ لِمَن كَانَ كَفِرًا﴾ القمر: ١٣-١٤

“আর আমি তাঁকে (নূহকে) একটি কাষ্ঠ ও পেরেক নির্মিত জলযানে আরোহণ করলাম। যা চলত আমার চোখের সামনে। এটা তার পক্ষ থেকে প্রতিশোধ ছিল, যাকে প্রত্যাখ্যান করা হয়েছিল।” -আল-কামার/১৩, ১৪

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿وَالْقَيْنِثَ عَلَيْكَ مَحَبَّةٌ مِّمِّي وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِي﴾ طه: من الآية ٣٩

“আর আমি তোমার প্রতি (হে মুসা!) আমার নিজের পক্ষ থেকে মুহাব্বত ঢেলে দিলাম, যাতে তুমি আমার চোখের সামনে প্রতিপালিত হও।” -ত্ব-হা/৩৯

উপরোক্ত আয়াতগুলোতে মহান আল্লাহ তাঁর জন্যে চোখ সাব্যস্ত করেছেন। এক্ষেত্রে কখনও এক বচন আবার কখনও বহুবচনের শব্দ ব্যবহৃত হয়েছে।^{১০৪} মূলতঃ এতে কোন বৈপরীত্য নেই। কেননা, সম্বন্ধযুক্ত এক বচন ব্যাপক অর্থজ্ঞাপন করে।

^{১০২} বিশিষ্ট ওলামাবর্গ কর্তৃক সম্পাদিত (كتاب أصول الإيمان) বাদশাহ ফাহাদ কুরআন মুদ্রণ কমপ্লেক্স-মদীনা/৮৮

^{১০৩} মুহাম্মাদ খলীল হাররাস (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৬ষ্ঠ সংস্করণ)-রিয়াদ/৬৮

^{১০৪} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৭ম সংস্করণ)-রিয়াদ/৫

ফলে আল্লাহর জন্যে সাব্যস্তকৃত চোখ বলতে যা নির্দেশ করে, তা সবই ইহা দ্বারা বুঝাবে। আর বহু বচন দ্বারা সম্মান বুঝানো উদ্দেশ্য।^{১০৫}

এছাড়া আরো অনেক সহীহ হাদীছ প্রমাণ করেছে যে, মহান আল্লাহর দুটি চোখ রয়েছে। সুতরাং এ ব্যাপারে সন্দেহের কোন অবকাশ নেই। এরশাদ হচ্ছে:

قوله عليه السلام: ﴿إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَىٰ عَيْنَيْهِ وَإِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَالَ أَعْوَرَ الْعَيْنِ الْيُمْنَىٰ كَانَ عَيْنُهُ عِنَبَةً طَافِيَةً﴾
رواه البخاري ومسلم

“নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের নিকট স্পষ্ট। আল্লাহ নিশ্চয়ই একচোখ বিশিষ্ট (কানা) নন। আর তিনি ﷺ তাঁর হাত দ্বারা নিজ চক্ষুদ্বয়ের প্রতি ইশারা করে বুঝালেন। নিঃসন্দেহে মাসীহ দাজ্জাল-এর ডান চোখ কানা, যেন তা নির্গলিত আঙ্গুরের ন্যায় উগলে উঠা- আলোহীন।”^{১০৬}

উক্ত হাদীছে আল্লাহর দুটি চোখ বুঝাতে যেয়ে প্রিয় নাবী ﷺ নিজ চক্ষুদ্বয়ের প্রতি ইশারা করেছেন। এটা স্পষ্ট করে বুঝাবার জন্যে; কোনরূপ সাদৃশ্যতার জন্যে নয়। অনুরূপভাবে যেসব ভ্রাতা ফেরকা “আল্লাহর চক্ষু”-এ সিফাতের অর্থ করে ‘কুদরত’, তাদের এই ভ্রাতা আক্বীদার খণ্ডনার্থে প্রিয় নাবী ﷺ ইশারা করতঃ আল্লাহর হাক্বীকি চোখ আছে তা বুঝিয়েছেন।^{১০৭}

এতদসত্ত্বেও আল্লাহর সিফাত অস্বীকারকারী কিংবা রূপক অর্থ গ্রহণকারী ভ্রাতা ফেরকাসমূহ নিজ কুটিলতা বজায় রাখতে যেয়ে ‘চোখ’ এ সিফাত-এর অর্থ করেন: ‘দৃষ্টি’, সংরক্ষণ ও নিরাপত্তা’ ইত্যাদি। তারা কি বলতে চান- আল্লাহ এমন বৈশিষ্ট্যে নিজের প্রশংসা করেন, যা তাঁর মাঝে নেই! আল্লাহ তাঁর জন্যে চোখ সাব্যস্ত করেছেন, অথচ তিনি এ গুণ থেকে মুক্ত?^{১০৮} -নাউযুবিল্লাহ। হায়, যদি তারা বাঁকাপথ থেকে ফিরে আসতো!

^{১০৫} শায়খ মুহাম্মাদ আস সালাহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবন আল-হজাওযী-দাম্মাম/১/৩২১

^{১০৬} বুখারী (كتاب التوحيد) ফতহুলবারী ১৩/৪০১ হা/৭৪০৭ মুসলিম (كتاب الفتن وأشرط الساعة) দাজ্জালের আলোচনা অনুচ্ছেদ-হা/২৯৩৩/(১০০)

^{১০৭} আল-হাফেয ইবন হাজার আল-আসকালানী (فتح الباري بشرح صحيح البخاري) মাক্কাভাবুস সালাফিয়া-কায়রো ১৩/৪০১.

^{১০৮} মুহাম্মাদ খলীল হাররাম (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৬ষ্ঠ সংস্করণ)-রিয়াদ/৬৮, ৬৯

৫। আল-ইয়াদান (اليَدَانِ) বা হস্তদ্বয়:

আল্লাহর শান অনুযায়ী তাঁর দু'খানা হাত রয়েছে। ইহা তাঁর হাক্কীকি সিফাত।^{১০৯} যাকে সংবাদবিষয়ক জাত-ই সিফাত বা গুণ বলা হয়।^{১১০}

মহান আল্লাহ্ আদমকে নিজহাতে সৃষ্টি করেছেন। অতঃপর সিজদার নির্দেশ দিলেন, অভিশপ্ত ইবলীস অহংকার বশতঃ সিজদা থেকে বিরত থাকে। এ প্রসঙ্গে ইবলীসকে সম্বোধন করে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِإِيْدِيَّ" أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ﴾ ص: من الآية ٧٥

“(হে ইবলিস!) আমি যাকে নিজ দু'খানা হাত দিয়ে সৃষ্টি করেছি, তার সামনে সিজদা করতে তোমাকে কিসে বাঁধা দিল?” -সোয়াদ/৭৫

উক্ত আয়াতেকারীমা প্রমাণ করে যে, মহান আল্লাহর শান অনুযায়ী দু'খানা হাত আছে। তবে এ হাতদ্বয় কোন সৃষ্টির হাতের সাথে সাদৃশ্যশীল নয়। এটাই আমাদের বিশ্বাস। সাথে সাথে অত্র আয়াত “আল্লাহর হাক্কীকি ‘হাত’ এ সিফাত অস্বীকারকারীদের কঠোর প্রতিবাদ করেছে। কেননা, আল্লাহর সিফাত অস্বীকারকারী ভ্রান্ত ফিরকাসমূহ অত্র আয়াতে বর্ণিত হাতদ্বয় এর অর্থ করে থাকেন ‘কুদরত’ অথবা ‘নিয়ামত’। তাদের এ পরিবর্তন ও রূপান্তর বাতিল। বরং এখানে ‘হাত’ দ্বারা উদ্দেশ্য যাত-ই হাত; কুদরত ও নিয়ামতের হাত নয়। যদি ‘হাত’ দ্বারা কুদরত উদ্দেশ্য হতো, তাহলে আল্লাহর দু'খানা হাত দ্বারা আদম সৃষ্টির বিশেষত্ব থাকতো না। কেননা, সকল সৃষ্টি এমন কি ইবলিসও আল্লাহর কুদরতের সৃষ্টি। অতএব, ইবলীসের উপর আদমের বিশেষত্ব কোথায়?

তাছাড়া যদি বলা হয়- আল্লাহ্ আদমকে কুদরত দ্বারা সৃষ্টি করেছেন, তাহলে আল্লাহর জন্যে দু'টি কুদরত বিশ্বাস করা আবশ্যক হয়ে পড়বে। যেহেতু আয়াতে দু'খানা হাতের কথা বর্ণিত হয়েছে; কাজেই তা বাতিল। আর যদি ‘হাতদ্বয়’-এর অর্থ করা হয় নিয়ামত, তাহলে অর্থ হবে- আল্লাহ্ আদমকে দু'টি নিয়ামত দ্বারা সৃষ্টি

^{১০৯}) মুহাম্মদ খলীল হাব্বাস (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৬ষ্ঠ সংস্কারণ)-রিয়াদ/৬৬

^{১১০}) বিশিষ্ট ওলামাবর্গ কর্তৃক সম্পাদিত (كتاب أصول الإيمان من الكتاب والسنة) বাদশাহ ফাহাদ কুরআন মুদ্রণ কমপ্লেক্স-মদীনা/৮৮-

করেছেন, এটাও বাতিল বিশ্বাস। কেননা, আল্লাহর শুধু দু'টি নি'য়ামত নয়; বরং তাঁর অসংখ্য নি'য়ামত রয়েছে, যার কোন গণনা নেই।^{১১১}

উপরন্তু আল্লাহ্ আদমকে নিজ দু'খানা হাত দ্বারা সৃষ্টি করেছেন- এখানে হাত-এর দ্বিভচন ব্যবহৃত হয়েছে। আর ইহা জ্ঞাত কথা যে, হাক্কীকি হাত ছাড়া 'দ্বিভচন' ব্যবহার হয় না। তাছাড়া আল্লাহর হাতের সিফাত হিসেবে সাব্যস্ত আছে- হাতের অঞ্জলী, আঙ্গুলিসমূহ, ডান, বাম, মুষ্টিবদ্ধ ও প্রসারকরণ-ইত্যাদি। কাজেই এসব দিক কেবল হাক্কীকি হাতেরই হয়ে থাকে। অতএব, কি করে হাত-এর অর্থ কুদরত ও নি'য়ামত করা হয়।^{১১২} ইহা প্রকাশ্য বক্রতা বৈ আর কি?

* অবশ্য তর্কের খাতিরে কেউ বলতে পারেন যে, আল্লাহ তো হাতের বর্ণনা দিতে যেয়ে বহুবচনের শব্দ ব্যবহার করেছেন। তাহলে কি মহান আল্লাহর দু'য়ের অধিক হাত আছে? যেখানে এরশাদ হচ্ছে:

﴿أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا﴾ يس: من الآية ٧١

“তারা কি দেখে না, তাদের জন্য আমি আমার হাতসমূহের তৈরি বস্তুর দ্বারা চতুষ্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছি....।” -ইয়াসীন/৭১

আমরা বলব, কখনও 'হাত' শব্দটি এক বচন, কখনও দ্বিভচন আবার কখনও বহু বচন হিসেবে ব্যবহৃত হয়েছে। এর অর্থ এই নয় যে, আল্লাহর দু'য়ের অধিক হাত রয়েছে। কেননা, যে আয়াতে 'হাত' শব্দটি এক বচন হিসেবে এসেছে, সেখানে এটা মহিমাবিত্ত 'আল্লাহ'-শব্দের সাথে সম্বন্ধ স্থাপিত হয়েছে। আর এটা শতঃসিদ্ধ যে, সম্বন্ধ স্থাপনকারী একক শব্দ ব্যাপক অর্থ জ্ঞাপন করে।^{১১৩}

এর প্রমাণে আল-কুরআনে দলীল বিদ্যমান। মহান আল্লাহর তাঁর অসংখ্য-অগণিত নিয়ামতের বিবরণ দিতে যেয়ে সম্বন্ধ স্থাপনকারী এক বচনের শব্দ ব্যবহার করেছেন।^{১১৪}

^{১১১} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৭ম সংস্করণ)-রিয়াদ/৫৩, ৫৪

^{১১২} মুহাম্মাদ খলীল হাররাস (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ/৬৭

^{১১৩} শায়খ মুহাম্মাদ আস-সাঈহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ১/২৯৯, ৩০০

^{১১৪} আল-কুরআন : সূরা ইব্রাহীম/৩৪

অতএব, এক বচনের শব্দ ব্যবহার আল্লাহর জন্যে সাব্যস্তকৃত দু'খানা হাত-এই সিফাতকে অস্বীকার করে না। আর 'বহু বচন' ব্যবহারও কিছুতেই দু'য়ের অধিক হাত প্রমাণ করে না। কেননা, কোন কোন ব্যাকরণবিদ একের অধিক অর্থাৎ দুই বুঝাতে বহুবচন শব্দ ব্যবহার করেছেন। আর যদি সাধারণত বহু বচন দ্বারা দু'য়ের অধিক বুঝানো হয়ে থাকে, তাহলে এখানে ইহা দ্বারা আল্লাহর সম্মান ও মর্যাদা বুঝাবে; দু'য়ের অধিক হাত আছে, তা বুঝাবে না।^{১১৫} যেহেতু আদম সৃষ্টির প্রসঙ্গে মহান আল্লাহ তাঁর দু'খানা হাত উল্লেখ করে তা অধিক স্পষ্ট করে দিয়েছেন। সেখানে অন্যটা ভাবার কোন প্রশ্নই উঠে না।

সহীহ হাদীছেও উল্লেখিত হয়েছে যে, মহান আল্লাহ আদম ﷺ কে নিজ হাতে সৃষ্টি করেছেন। ক্রিয়ামতের দিন সকল আদম সন্তান সাধারণ শাফা'আতের জন্য আদম ﷺ এর নিকট আসবে এবং তাঁকে সম্বোধন করে বলবে:

(يَا آدَمُ أَنْتَ أَبُو الْبَشَرِ خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ) رواه البخاري

“হে আদম! আপনি মানুষ জাতির পিতা। আল্লাহ আপনাকে নিজহাতে সৃষ্টি করেছেন....”^{১১৬} সহীহ মুসলিম-এর অপর হাদীছে এসেছে, তারা আদম ﷺ কে সম্বোধন করে বলবে:

(آدَمُ أَنْتَ أَبُو الْخَلْقِ ، خَلَقَكَ اللَّهُ بِيَدِهِ....)

“আপনি আদম! সৃষ্টির (মানুষের) পিতা। আল্লাহ আপনাকে নিজ হাতে সৃষ্টি করেছেন.....”^{১১৭}

পূর্বে উল্লেখিত হয়েছে যে, আল-কুরআন ও সহীহ হাদীছে আল্লাহর হাতের পরিপূর্ণ সিফাত বর্ণিত হয়েছে। এখানে প্রমাণস্বরূপ একটি হাদীছের উল্লেখকেই যথেষ্ট মনে করব।

قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: (يَطْوِي اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ السَّمَاوَاتِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ يَأْخُذُهَا بِيَدِهِ الْيُمْنَى ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ الْجَبَّارُونَ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ ثُمَّ يَطْوِي الْأَرْضِينَ بِشِمَالِهِ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ الْجَبَّارُونَ أَيْنَ الْمُتَكَبِّرُونَ) رواه مسلم

^{১১৫}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية لابن تيمية) দারুল ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ১/২৯৯-৩-৩

^{১১৬}) বুখারী (كتاب أحاديث الأنبياء) হা/৩৩৪০ ফতহুল বারী/মাকতাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ৬/৪২৮

^{১১৭}) সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৯৩/(৩২২) শারহ নববী, দারুল খায়ের-বাইরুত ৩/৪১৯

“রাসূলুল্লাহ ﷺ এরশাদ ফরমান: আল্লাহ- আয্যা ও জাল্লাহ-ক্বিয়ামতের দিন আসমানসমূহকে একত্রিত করবেন, অতঃপর সেগুলোকে তাঁর ডান হাতে রাখবেন। তারপর বলবেন: আমি মালিক! কোথায় গর্বকারীগণ? কোথায় অহংকারীগণ? অতঃপর যমীনসমূহকে তাঁর বাম হাতে একত্রিত করে রাখবেন। তারপর বলবেন: আমি মালিক! কোথায় গর্বকারীগণ? কোথায় অহংকারীগণ?”^{১১৮}

আল্লাহু ﷻ তো যথার্থই বলেছেন:

﴿وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمَوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ ، سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ﴾ الزمر: ১৭

“তারা আল্লাহকে যথার্থরূপে মর্যাদা দেয় নি। ক্বিয়ামতের দিন গোটা পৃথিবী থাকবে তাঁর হাতের মুঠোতে এবং আসমানসমূহ ভাঁজ করা অবস্থায় থাকবে তাঁর ডান হাতে। তিনি পবিত্র আর তারা যাকে শরীক করে, তা থেকে তিনি অনেক উর্ধ্বে।”

-যুমার/৬৭

৬। আর-রিজলু/আল-কদাম (الرجل أو القدم) বা পা:

সহীহ হাদীছ দ্বারা প্রমাণিত যে, মহান আল্লাহর ‘পা’ রয়েছে। আল্লাহর ‘হাত’ ও মুখমণ্ডলের ন্যায় ইহা তাঁর জাত-ই সিফাত বা গুণের অন্তর্গত।^{১১৯}

প্রিয় নাবী ﷺ এরশাদ ফরমান:

قوله عليه السلام : (لَا تَزَالُ جَهَنَّمُ يُلْقَى فِيهَا وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ حَتَّى يَضَعَ رَبُّ الْعِزَّةِ فِيهَا قَدَمَهُ فَيَنْزَوِي بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَتَقُولُ قَطُّ قَطُّ يَعِزَّتْكَ وَكَرَمِكَ ...)

رواه البخاري ومسلم

“জাহান্নামে (জাহান্নামীদেরকে) নিক্ষেপ করা হতে থাকবে। আর জাহান্নাম বলবে: আরো অধিক আছে কি? এমন কি মহান প্রতিপালক তাতে তাঁর ‘পা’

^{১১৮} সহীহ মুসলিম (كتاب صفات المنافقين وأحكامهم) ক্বিয়ামত, জাল্লাত ও জাহান্নামের বিবরণ অনুচ্ছেদ-হা/২৭৮৮

(২৪) শারহ নববী, দারুল খায়ের-বাইরুত ১৭/২৭৪

^{১১৯} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী (৭ম সংস্করণ) রিয়াদ/৯৭

রাখবেন। তখন জাহান্নামের একাংশ গিয়ে অপরাংশের সাথে মিলে যাবে। আর বলবে: তোমার মহত্ব ও মর্যাদার দোহাই যথেষ্ট যথেষ্ট।”^{১২০}

এই হাদীছ আল্লাহর জন্য ‘কদম’ সাব্যস্ত করছে। ইহা অপর হাদীছে (رجل) শব্দটি এসেছে।^{১২১} আর উভয় শব্দই একই অর্থ বহন করে। এটিকে رَجُلٌ - এজন্য বলা হয় যে, এর দ্বারা আগে বাড়ি হয়। যাহোক ইহা তাঁর হাক্কীকি কদম, যা কোন সৃষ্টির কদম বা পায়ের সাথে সাদৃশ্যশীল নয়। আর একে তাঁর সংবাদসম্মিলিত যাত-ই সিফাত বলা হয়। আমরা এ মর্মে বিশ্বাস করব। তবে কোন কল্পিত রূপ দাঁড় করাবো না। কেননা, নাবী ﷺ আমাদেরকে আল্লাহর ‘পা’ আছে, তা জানিয়েছেন। কিন্তু এর কোন রূপ বা আকৃতি সম্পর্কে আমাদেরকে কিছুই জানান নি।^{১২২} সুতরাং হাদীছে যেহেতু পা-এর কথা আছে, সেহেতু তা হুবহু মেনে নিতে আপত্তি কোথায়? মহান আল্লাহতৌ তাঁর সম্বন্ধে অহেতুক কথা বলতে নিষেধ করেছেন। এরশাদ হচ্ছে:

﴿وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ الأعراف: من الآية ২২

“(এটাও হারাম যে), আল্লাহর প্রতি এমন কথা আরোপ করা, যা তোমরা জাননা।”

-আ'রাফ/৩৩

পরিতাপ এইযে, এতো স্পষ্ট দলীল প্রমাণিত হওয়ার পরও ভ্রান্ত ফিরকাসমূহের যুক্তির ঘোড়া থামেনি। তাঁরা কদম-এর অর্থ করেছেন- জাহান্নামে প্রবেশ লাভের অধিকারী একদল মানুষ। তারা আল্লাহর যাত-ই সিফাত ‘পা’ এটাকে অস্বীকার করার হীন উদ্দেশ্যে এহেন অবান্তর ব্যাখ্যা প্রবৃত্ত হয়েছেন। ইহা তাদের ভ্রান্ত অপব্যাক্ষ্য বৈ কিছু নয়। কেননা, হাদীসে কদম বা রিজল শব্দটি মহান আল্লাহর সাথে সম্বন্ধ স্থাপন করেছে। আর ইহা অসম্ভব যে, আল্লাহ তাঁর প্রতি জাহান্নামীদের সম্বন্ধ করাবেন! কেননা, আল্লাহর প্রতি কোন বস্তুর সম্বন্ধ করা ঐ বস্তুর সম্মান ও মর্যাদা বুঝায়।^{১২৩} তাছাড়া হাদীসে ‘পা’ রাখার কথা এসেছে, ঢেলে দেয়ার কথা আসেনি। সুতরাং এর

^{১২০}) সহীহ মুসলিম (كتاب الجنة وصفة نعيمها وأهلها) জাহান্নাম অনুচ্ছেদ হা/২৮৪৮ নব্বী, দারুল খায়ের বাইরুত ১৭/৩১১ বুখারী (كتاب التوحيد) হা/৭৩৮৪ ফতহুলবারী, আল-মাকতাবা আস-সালাফিয়া- কায়রো ১৩/৩৮১

^{১২১}) সহীহ মুসলিম ঐ হা/২৮৪৬(৩৬) নব্বী ১৭/৩০৯, ৩১০

^{১২২}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালাহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ২/৩২-৩৪

^{১২৩}) শায়খ মুহাম্মাদ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ২/৩৩

দ্বারা এক শ্রেণীর সৃষ্টি মানুষ অর্থ করার কোন যৌক্তিক কারণ নেই। বরং একে হাক্কীকি অর্থেই বুঝতে হবে। আর তাহলো মহান আল্লাহর শান অনুযায়ী তাঁরই 'পা', ভ্রান্ত ফেরকাদের ভ্রান্তিমূলক বক্তব্য নয়।

আল্লাহর মা'রিফাত বা তাত্ত্বিক জ্ঞান মূলতঃ ওহীর দলীলনির্ভর। তাঁর বিভিন্ন সিফাত-এর হাক্কীকত মানুষের বিবেক-বুদ্ধি শোলআনা আঁচ করতে সক্ষম নয়, তা ওহীর আলোকেই কেবল বুঝে নিতে হয়। কিন্তু যেসব সিফাতের বিবরণ মহান আল্লাহ কুরআনে ও তাঁর নাবী ﷺ হাদীছে পেশ করেছেন, সেসব সিফাতকে বিনা পরিবর্তন ও পরিবর্ধণে হুবহু মেনে নিতে হবে, এটাই বিজ্ঞ ঈমানের দাবী। আর এক্ষেত্রে আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত তথা হকুপহীদের গৃহীত নীতিমালাই অধিক পরিচ্ছন্ন। এর নমুনা হিসেবে আমরা মহান আল্লাহর অসংখ্য সিফাত থেকে কয়েকটি সিফাতের বর্ণনা স্বপ্রমাণ উল্লেখ করেছি। আর সাথে সাথে ভ্রান্ত ফিরকাসমূহের আকীদাগত অবস্থান ও তার জবাব সংক্ষিপ্তাকারে উল্লেখ করেছি। এরপর আর কোন বিভ্রান্তি থাকার কথা নয়।

মহামতি ইমাম আবু হানীফা (রাহি:) বলেন:

(له يد ووجه ونفس، كما ذكر تعالى في القرآن من ذكر اليد والوجه والنفس، فهو له صفة بلا كيف، ولا يقال إنه يده قدرته ونعمته، لأن فيه ابطال الصفة)

“আল্লাহর হাত, মুখমণ্ডল ও আত্মা আছে। যেমন আল্লাহ ﷻ কুরআনে হাত, মুখমণ্ডল ও আত্মার কথা উল্লেখ করেছেন। সেটি আল্লাহরই সিফাত, যা কোন প্রকার কায়ফিয়াত বা সাদৃশ্যতা ছাড়া, আর এরূপ যেন বলা না হয় যে, আল্লাহর হাত অর্থ তাঁর কুদরত ও নিয়ামত। কেননা, তাতে সিফাতকে অস্বীকার করা হয়।”^{১২৪}

মানুষ কি আল্লাহকে দুনিয়ায় দেখতে পারে?

আল্লাহর দিদার বা দর্শন বলতে আখেরাতে মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক আল্লাহর দিদার বা দর্শন উদ্দেশ্য। কেননা, দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার অসম্ভব। সমস্ত উম্মাহ এ ব্যাপারে একমত।^{১২৫}

^{১২৪} ফিকহুল আকবার গৃহীত ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআসসাভুর রিসালাহ-বাইরুত/২৬৪ পৃঃ

^{১২৫} ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআসসাভুর রিসালাহ-বাইরুত/২২২

কেননা আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿لَا تُذِرُكَ الْأَبْصَرُ وَهُوَ يُذِرُكَ الْأَبْصَرُ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ الأنعام: ১০৩

“দৃষ্টিসমূহ তাঁকে (আল্লাহকে) আয়ত্ত্ব করতে পারে না এবং তিনি দৃষ্টিসমূহকে আয়ত্ত্ব করতে পারেন। আর তিনি সূক্ষ্মদর্শী ও সর্বান্তর্যামী।” -আল-আন-আম/১০৩

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ ، إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ﴾ الشورى: ৫১

“কোন মানুষের জন্য এমন হওয়ার নয় যে, আল্লাহ্ তার সাথে কথা বলবেন; কিন্তু ওহীর মাধ্যমে কিংবা পর্দার অন্তরাল থেকে। অথবা তিনি কোন দূত প্রেরণ করবেন। অতঃপর আল্লাহ্ যা চান, সে তা তাঁরই অনুমতিক্রমে পৌঁছে দেন। নিশ্চয়ই তিনি সর্বোচ্চ প্রজ্ঞাময়।” -আশ-শূরা/৫১

মূসা আলাইহিস্ সালাম আল্লাহর দীদার দুনিয়াতে কামনা করলে আল্লাহ্ তা স্পষ্ট ভাষায় নাকচ করে দেন। কেননা, দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার অসম্ভব। এ মর্মে আল্লাহ্ ﷻ বলেন:

﴿وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنْظُرْ إِلَيْكَ ، قَالَ لَنْ تَرَانِي وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي، فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَنَكَ ثُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ﴾ الأعراف: ১৪৩

“আর মূসা যখন আমার নির্ধারিত স্থানে হাজির হলেন এবং তার সাথে তার রব কথা বললেন, তখন তিনি (মূসা) বললেন: হে আমার রব! তোমার দীদার আমাকে দাও! যেন আমি তোমাকে দেখতে পাই। তিনি (আল্লাহ) বললেন: তুমি আমাকে কক্ষিনকালেও দেখতে পাবে না। তবে তুমি পাহাড়ের দিকে দেখতে থাকো, যদি সেটি স্ব-স্থানে স্থির থাকে, তাহলে তুমি আমাকে দেখতে পাবে। অতঃপর যখন তাঁর রব পাহাড়ের উপর আপন জ্যোতির বিকিরণ ঘটালেন, সেটিকে বিধ্বস্ত করে দিলেন এবং মূসা অজ্ঞান হয়ে পড়ে গেলেন। অতঃপর যখন তাঁর জ্ঞান ফিরে এলো, বললেন: “(হে

আল্লাহ!) তুমি পবিত্র-সুমহান। তোমার দরবারে আমি তাওবা করছি এবং আমিই সর্বপ্রথম মু'মিন।” -আল-আ'রাফ/১৪৩

আল্লাহর বাণী: “তুমি আমাকে কদ্দিনকালেও দেখতে পাবে না।” আয়াতাতংশ দ্বারা মু'তাযিলা সম্প্রদায় অর্থ করেছেন- দুনিয়া ও আখেরাতে আল্লাহকে দেখা যাবে না। ইহা তাদের ভ্রান্ত বিশ্বাস। বরং সহীহ হাদীছ দ্বারা প্রমাণিত যে, আখিরাতে মু'মিনেরা আল্লাহর দীদার পেয়ে ধন্য হবেন। তাছাড়া মহান আল্লাহ অন্যত্র স্পষ্ট করে বলেন:

﴿وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاصِرَةٌ، إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾ القيامة: ২২/২৩

“সেদিন (কিয়ামতে) অনেক মুখমণ্ডল উজ্জ্বল হবে। তারা তাদের রবের দিকে তাকিয়ে থাকবে।” -আল-কিয়ামাহ/২২, ২৩

মুতাযিলাদের দাবী বাতিল। কুরআনের যে সমস্ত আয়াত আল্লাহর দীদার নিষেধ করে, তা সবই দুনিয়াতে তাঁর দীদারকে অসম্ভব বলে বুঝায়। কেননা, আখিরাতে মুমিন বান্দারা স্বচক্ষে আল্লাহকে দেখতে পাবেন। কাফিররা সেদিন আল্লাহর দীদার থেকে বঞ্চিত হবে।^{১২৬} এমর্মে মহান আল্লাহ বলেন:

﴿كَأَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمْ يَحْجُوبُونَ﴾ المطففين: ১০

“কখনও নয়, তারা (কাফিরেরা) সেদিন তাদের পালনকর্তা থেকে পর্দার অন্তরালে থাকবে।” -আল-মুতাফ্ফীন/১৫

পক্ষান্তরে সুফিবাদ তথা পীরপন্থীদের নিকট আল্লাহর মা'রিফাত লাভের উপায় হচ্ছে কাশ্ফ বা অন্তর্দৃষ্টি। তারা তথাকথিত কাশ্ফের সাহায্যে দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার লাভ করা যায়, এ বিশ্বাস পোষণ করেন। এমনকি তাদের অনেকে দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার পেয়েছেন বলে অবাস্তর দাবীও করেছেন। ‘স্বীয় ইহুয়াউ উলুমিদ্বীন’ গ্রন্থে তথাকথিত সুফীদের কাশ্ফ-এর বিবরণ দিতে যেয়ে হাস্যকর একটি ঘটনার উল্লেখ করেন।

^{১২৬} মুহাম্মদ আল-আমীন আশ-শানকিত্তী (أضواء البيان) (২য় সংস্করণ-১৪০০ হিঃ) ২/২২৯৭

কি সে হাস্যকর ঘটনা?

“আবু তুরাব আল-নাখশাবী জনৈক মুরীদকে লক্ষ্য করে বললেন: তুমি যদি আবু ইয়াযীদকে (একজন সূফীসাধক) দেখতে? তখন মুরীদ বলল: আমি তা থেকে ব্যস্ত। অর্থাৎ আমার প্রয়োজন নেই। অতঃপর আবু তুরাব বারংবার বলতে লাগলেন- যদি তুমি আবু ইয়াজীদকে দেখতে! তখন মুরীদের হৃদয় ক্রোধে ফেঁটে পড়ল অতঃপর বলল: ধ্বংস হও! আমি আবু ইয়াজীদকে দিয়ে কি করব? আমি তো আল্লাহকে দেখেছি। কাজেই আল্লাহ আমাকে আবু ইয়াজীদ থেকে বেপরোয়া করে দিয়েছেন। আবু তুরাব বললেন: আমার মনে ধাক্কা লাগল। আমি আর নিজেকে শামলাতে পারলাম না। অতঃপর বললাম: “ধ্বংস তোমার! আল্লাহকে নিয়ে তুমি ধোঁকায় পড়ে আছ। যদি তুমি একবার আবু ইয়াজীদকে দেখতে তাহলে আল্লাহকে ৭০ বার দেখার চেয়ে তা তোমার জন্য অধিক উপকারী হত।”^{১২৭}

কী চরম ধৃষ্টতা! একজন দাবী করছে, সে আল্লাহকে দেখেছে। আবার অপরজন নিজ সূফীগুরুকে মহান আল্লাহর উপরে স্থান দিচ্ছে। -নাউযুবিল্লাহ। এটাতো প্রকাশ্য গোমরাহী। মহান আল্লাহ যেখানে মূসাকে ~~বলেছেন~~ বলেছেন: ﴿لَنْ تَرَانِي﴾ “তুমি কখনকালেও (দুনিয়াতে) আমাকে দেখতে পাবে না।” সেখানে সূফীরা কি করে দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার দাবী করতে পারে? তাহলে কি তারা নাবী ও রাসূলের চেয়ে উত্তম? -নাউযুবিল্লাহ!

এ ধরনের উদ্ভট কিচ্ছা-কাহিনীর শক্ত প্রতিবাদ জরুরী। নতুবা সরলমতি মুসলিমদের মাঝে বিভ্রান্তির সৃষ্টি করবে। আমরা শিরোনামের শুরুতে উল্লেখ করেছি যে, দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার অসম্ভব। এ ব্যাপারে সমস্ত উম্মত একমত। অথচ গাজ্জালী নিজ গ্রন্থে উপরোক্ত ঘটনার উল্লেখ করে স্বীয় মন্তব্য পেশ করেন। তিনি বলেন:

(هذه أمر ممكنة في أنفسها ، فمن لم يحظ بشئ منها فلا ينبغي أن يخلو عن التصديق والإيمان بأمكانها)

^{১২৭} ইমাম গাজ্জালী (إحياء علوم الدين) দারুল ফিকর (১৩৫ হিজ) ছাপা ১৪/১৪৪/১৪৫

“এ ধরনের ঘটনাবলী সংঘটিত হওয়া স্বয়ং সম্ভব। সুতরাং যার এতে দখল নেই, তার জন্য এ ধরনের ঘটনার সত্যায়ণ করা ও ঈমান আনা হতে নিজ হৃদয়কে খালি রাখা উচিত নয়।”^{১২৮} অর্থাৎ যার কাশ্ফ বা অন্তর্দৃষ্টি নেই, তাকে অবশ্যই এ ধরনের ঘটনার প্রতি ঈমান আনতে হবে।” -নাউযবিলাহ!

আমরা বলব: এ ধরনের উদ্ভট ঘটনাবলী অস্বীকার করা ও এর প্রতিবাদ করা সকল মু'মিনের ঈমানী দায়িত্ব। কেননা, ইহা কুফুরী বিশ্বাস, যা কুরআন, হাদীছ ও সালাফে সালাহীন কর্তৃক গৃহীত নীতিমালার বিপরীত।

প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام: (تَعَلَّمُوا أَنَّهُ لَنْ يَرَى أَحَدٌ مِنْكُمْ رَبَّهُ عَزَّ وَجَلَّ حَتَّى يَمُوتَ) رواه مسلم

“জেনে রেখো! মৃত্যুর পূর্বে তোমাদের কেউ কস্মিনকালেও তার মহান রবকে দেখতে পাবে না।”^{১২৯}

কুরআন ও সহীহ হাদীছের বলিষ্ঠ দলীল-প্রমাণ উপেক্ষা করে যারা আল্লাহ সম্পর্কে মনগড়া কথা বলে এবং দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার-এর দাবী করে, তাদের সম্পর্কে শায়খুল ইসলাম ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(ومن قال من الناس : أن الأولياء أو غيرهم يرى الله بعينه في الدنيا فهو مبنوع ضال، مخالف للكتاب والسنة وإجماع سلف الأمة، لاسيما إذا ادعوا أنهم أفضل من موسى، فإن هؤلاء يستتابون، فإن تابوا وإلا قتلوا، الله أعلم)

“মানুষের মাঝে যে ব্যক্তি বলে যে, অলী-আউলিয়া, অথবা তাদের অন্য কেউ দুনিয়াতে স্বচক্ষে আল্লাহকে দেখতে পায়, সে বিদ'আতী, বিভ্রান্ত। কুরআন, সুন্নাহ ও এ উম্মতের সালাফে সালাহীনের সর্বসম্মত মতের বিরোধী। বিশেষতঃ যদি তারা দাবী করে যে, তারা মূসা عليه السلام হতে উত্তম, তাহলে তাদেরকে তওবা করার সুযোগ দেয়া

^{১২৮}) ইমাম গাজ্জালী (إحياء علوم الدين) দারুল ফিকর (১৩৬ হি: ছাপা) ১৪/১৪৫

^{১২৯}) সহীহ মুসলিম (كتاب الفتن وأشرار الساعة) ৪/২৯৩১(১৬৯) শারহ নববী 'দারুল খায়ের'-বাইরুত ১৮/৩৬৯

হবে। যদি তারা তাওবা করে ফেলে, (তাহলে উত্তম) নতুবা তাদেরকে হত্যা করা হবে।" আল্লাহ্‌ই সম্যক পরিজ্ঞাত।^{১০০}

মুহাম্মাদ ﷺ কি আল্লাহকে দেখেছেন?

দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার প্রশ্নে এটি একটি বিতর্কিত বিষয়। আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত তথা হকুপহীদের মাঝে তদ্বিষয়ে মৃদু বিতর্ক আছে। খোদ সাহাবায়ে কেরাম ﷺ-এ নিয়ে দ্বিমত পোষণ করেছেন। কিন্তু তাঁরা বিভক্ত হননি এবং একে অপর হতে বিচ্ছিন্নতাও ঘোষণা করেননি।^{১০১}

মূলতঃ এটি ছিল প্রিয় নাবী ﷺ-এর মি'রাজ প্রসঙ্গে। আল্লাহ ﷻ তাঁকে একই রাতে বাইতুল্লাহিল হারাম থেকে মাসজিদুল আকুসা, অতঃপর সপ্তম আকাশ ও তৎসংশ্লিষ্ট নিদর্শনাবলী পরিদর্শন ও পরিভ্রমনের সৌভাগ্য দান করেছিলেন। এটি আল্লাহ্ প্রদত্ত মুযিজাসমূহের অন্যতম। সেই সফর তাঁর স্বশরীরেই সংঘটিত হয়েছিল। তিনি সপ্তম আকাশের উপর নির্মিত বাইতুল মা'মূর অতিক্রম করে সিদরাতুল মুন্তাহা পর্যন্ত পৌঁছেন। আল্লাহ্ সেখানে তাঁর প্রতি ওহী করেন এবং উম্মতের উপরে পঞ্চাশ ওয়াক্ত সালাত ফরয করে দেন। যা কমিয়ে পাঁচ ওয়াক্তে স্থির করা হয়। অতঃপর প্রিয় নাবী ﷺ আরও অসংখ্য নিদর্শনাবলী প্রত্যক্ষ করে একই রাতে আল্লাহর ইচ্ছায় নিজ মক্কাভূমিতে ফিরে আসেন।

সকালে উঠে প্রিয় নাবী ﷺ এ সফরে যেসব বড় বড় অলৌকিক নিদর্শনাবলী প্রত্যক্ষ করেন, তা জাতির সামনে পেশ করেন। তা শুনে মিথ্যাবাদীদের মিথ্যারোপের মাত্রা আরও বেড়ে যায়। নাবী ﷺকে কষ্ট দেয়ার হীন বাসনা অধিক কঠোর হয়ে ওঠে। পক্ষান্তরে ঈমানদারদের ঈমান আরও বৃদ্ধি পায়। আবু বকর ﷺ এ ঘটনার প্রতি অকপট স্বীকৃতি জানিয়ে 'সিন্দীকু' বা একান্ত সত্যবাদী হিসেবে আখ্যা পান।^{১০২}

^{১০০}) ইমাম ইবনে তাইমিয়া (مجموع فتاوى) ইবন কাসীম সংকলিত-মাকতাবাতু মা'আরিফ-রিবাতু ৬/৫১২

^{১০১}) ইমাম ইবনে তাইমিয়া 'মাজমু'আ ফাতওয়া' ইবন কাসেম সংকলিত, মাকতাবাত আল-মা'আরিফ-রিবাতু ৬/৫০২

^{১০২}) ইমাম ইবনুন ক্বায়্যিম (যাদুল মা'আদ) ১/৪৮ গৃহীত আর-রাহীকুল মাখতুম, দারুল মুআইয়্যাদ-রিয়াদ/১৪০, তাফসীর ইবনে কাঈর ৩/৪৮৯, ফতহুলবারী, মাকবাতুস্ সালাফিয়া-কায়রো ৮/২৪৪

এখানে মিরাজের ঘটনার বিশদ বিবরণ উদ্দেশ্য নয় বরং এ সফরে মহানাবী ﷺ আল্লাহকে দেখেছিলেন কি না-তাই মূল প্রতিপাদ্য বিষয়। আর যেহেতু বিষয়টি মহানাবীর ﷺ ঐতিহাসিক উর্ধ্বগমনের অলৌকিক সফরের সাথে খাস, সেহেতু এ বিষয়ে সঠিক তথ্য দলীলনির্ভর। যাতে কল্পিত কোন বক্তব্য প্রদানের সামান্যতম অবকাশ নেই। তাই আসুন! বিষয়টির তাত্ত্বিক বিশ্লেষণ করি।

একদল বিদ্বানের মতে মিরাজের এ সফরে মহানাবী ﷺ আল্লাহকে দেখেছিলেন। তাঁরা তাঁদের মতের সমর্থনে সাহাবী আব্দুল্লাহ ইবনে আব্বাস ؓ এর একটি উক্তিকে দলীল হিসাবে পেশ করেন।

আল্লাহ্ তা'আলার বাণী:

﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِي أَرْتَمَسَكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ سورة الإسراء : ٦٠

“আর যে দৃশ্য আমি আপনাকে দেখিয়েছি, তা কেবল মানুষের পরীক্ষার জন্যে।” -সূরা বনী ইসরাঈল /৬০

এ আয়াতাংশের তাফসীরে ইবনে আব্বাস ؓ বলেন: “সেটি হচ্ছে ইসরার রাতে রাসূলুল্লাহ্ ﷺ কর্তৃক স্বচক্ষে প্রত্যক্ষকৃত দৃশ্য।”^{১৩৩}

এটি একটি অস্পষ্ট বক্তব্য। এর দ্বারা বুঝা যায় না যে, প্রিয় নাবী ﷺ আল্লাহকে স্বচক্ষে দেখেছিলেন। কেননা, ইবনে আব্বাস ؓ থেকে অপর বর্ণনায় এসেছে যে, তাঁর আত্মা আল্লাহকে দেখেছিল।^{১৩৪} আরও একটি বর্ণনায় তিনি জিজ্ঞাসিত হয়েছিলেন যে, মুহাম্মদ ﷺ কি তাঁর রবকে দেখেছিলেন? তখন ইবনে আব্বাস ؓ বলেন: হ্যাঁ।^{১৩৫}

ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(والألفاظ الثانية عن ابن عباس هي مطلقة أو مقيدة بالفؤاد، تارة يقول: رأى ربه، وتارة يقول: رآه محمد، ولم يثبت عن ابن عباس لفظ صريح بأنه رآه بعينه)

^{১৩৩} বুখারী (كتاب التفسير) হা/৪৭১৬ ফতহুলবারী, মাকতাবাতুস সালাফীয়া-কারো ৮/২৫০

^{১৩৪} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৬ শারহ নববী, দারুল খাইর বাইরুত ৩/৩৮৫

^{১৩৫} সহীহ মুসলিম, শারহ নববী, দারুল খাইর-বাইরুত ৩/৩৮৩

“ইবনে আব্বাস রা থেকে আল্লাহর দীদার সাব্যস্তকৃত সব কটি বর্ণনাই মতুলাকু বা ব্যাপক অর্থজ্ঞাপক। অথবা, আত্মার দীদার দ্বারা মুকায়্যাদ বা বিশিষ্টার্থ জ্ঞাপক। কখনও তিনি বলেন: মুহাম্মদ তাঁর বরকে দেখেছেন। আবার কখনও বলেন: মুহাম্মদ তাঁকে দেখেছেন। আর ইবনে আব্বাস থেকে স্পষ্ট একটিও বর্ণনা প্রমাণিত হয়নি যে, তিনি রা স্বচক্ষে আল্লাহকে দেখেছিলেন।”^{১৩৬}

অতএব, মহানাবী কর্তৃক আল্লাহকে দেখার বর্ণনাটি নাবীর স্বপ্নের সাথে সংশ্লিষ্ট। কেননা, সহীহ হাদীছে বর্ণিত আছে যে, মদীনায় প্রিয় নাবী রা স্বপ্নে আল্লাহকে দেখেছিলেন। সুতরাং ইবনে আব্বাস রা-এর বাণীকে প্রসিদ্ধ স্বপ্নের হাদীছের সাথে সামঞ্জস্য দিলে আর কোন বৈপরীত্য থাকে না। যেহেতু নাবীদের স্বপ্ন সত্য।^{১৩৭}

পক্ষান্তরে উম্মুল মু'মিনীন আয়েশা রা বলেন:

قوله عليه السلام : (مَنْ زَعَمَ أَنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ أَعْظَمَ عَلَى اللَّهِ الْفِرْيَةَ) رواه مسلم

“যে ব্যক্তি ধারণা করে যে, মুহাম্মদ রা তাঁর রবকে দেখেছেন, সে যেন আল্লাহর উপর সবচেয়ে বড় মিথ্যা আরোপ করল।”^{১৩৮}
অতঃপর আল্লাহর বাণী:

﴿وَلَقَدْ رَءَاهُ بِأَلْفِ الْمِائِينَ﴾ سورة التكوير/ ২৩

“তিনি তাকে প্রকাশ্য দিগন্তে দেখেছেন। -আত-তাকভীর/২৩, এবং অপর আয়াত:

﴿وَلَقَدْ رَءَاهُ نَزْلَةً أُخْرَى﴾ سورة النجم/ ১৩

“নিশ্চয় সে তাকে আরেকবার দেখেছিল।” (আন-নজম/১৩) আয়াত দ্বারা প্রসঙ্গে জিজ্ঞাসিতা হয়ে মা আয়েশা (রাযী আল্লাহু আনহা) বলেন:

^{১৩৬} ইমাম ইবনে তাইমিয়া ‘মাজমু’আ ফাতওয়া ‘ইবন কাসেম সংকলিত, ৬/৫০৯

^{১৩৭} ইমাম ইবনুল কায়্যিম (রহ), (যাদুল মা’আদ) মুআসসাসাতুর রিসালাহ-বাইরুত ৩/৩৭

^{১৩৮} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) ৪/১৭৭ (২৮৭) শারহ নববী, দারুল খাইর-বাইরুত ৩.৩৮৬, ৩৮৭

قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا: (أَنَا أَوَّلُ هَذِهِ الْأُمَّةِ سَأَلَ عَنْ ذَلِكَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ إِنَّمَا هُوَ جِبْرِيلُ لَمْ أَرَهُ عَلَى صُورَتِهِ الَّتِي خُلِقَ عَلَيْهَا غَيْرَ هَاتَيْنِ الْمَرْثَتَيْنِ) رواه مسلم

অর্থাৎ “আমি এই উম্মতের প্রথম ব্যক্তি, যে এ বিষয়ে আমি রাসূলুল্লাহ ﷺ কে জিজ্ঞাসা করেছিলাম। তিনি ﷺ বলেন: সে তো কেবল জিব্রীল, যাকে আমি মাত্র এ দু'বারই তাঁর আসল আকৃতিতে দেখেছি, যে আকৃতিতে তাঁকে সৃষ্টি করা হয়েছে।”^{১৩৯}

অর্থাৎ আয়েশা ﷺ প্রিয় নাবী ﷺ কে এ বিষয়ে প্রথম প্রশ্ন করেছিলেন। তদুত্তরে নাবী ﷺ জানান যে, তিনি জিব্রীলকে দেখেছেন। আর ইটাই প্রসিদ্ধ কথা। আয়েশা ﷺ-এর এই দ্ব্যর্থহীন বক্তব্য দ্বারা প্রমাণিত হয়- যারা দাবী করেন যে, আল্লাহর নাবী ﷺ মিরাজে আল্লাহকে দেখেছিলেন, তাদের এ দাবী ভিত্তিহীন। তাছাড়া এটা আল-কুরআনেরও প্রকাশ্য বিপরীত। সে কারণে, মা আয়েশা ক্রোধান্বিত হয়ে বলেছিলেন: (ওহে জিজ্ঞাসাকারী!) তুমি কি আল্লাহর এ আয়াত শোননি (?) যেখানে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ، وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ الأنعام: ১০৩

“দৃষ্টিসমূহ তাঁকে আয়ত্ত্ব করতে পারে না এবং তিনি দৃষ্টিসমূহকে আয়ত্ত্ব করতে পারেন। আর তিনি সূক্ষ্মদর্শী ও সর্বান্তর্যামী।” -আন'আম/১০৩

আয়েশা ﷺ আরও বলেন: তুমি কি জান না (?) আল্লাহ বলেন:^{১৪০}

﴿وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكْلِمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ، إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ﴾ الشورى: ৫১

“কোন মানুষের জন্যে এমন হবার নয় যে, আল্লাহ তার সাথে কথা বলবেন; কিন্তু ওহীর মাধ্যমে বা পর্দার অন্তরাল থেকে অথবা, তিনি কোন দূত প্রেরণ করবেন।

^{১৩৯}) সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৭ (১৮৭) শারহ নববী দারুল খায়ের-বাইরাত ৩/২৮৭

^{১৪০}) সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৭ (২৮৭)

অতঃপর আল্লাহ্ যা চান, সে তা তাঁর অনুমতিক্রমে পৌঁছে দেন। নিশ্চয়ই তিনি সর্বোচ্চ, প্রজ্ঞাময়।” -আল-শূরা/৫১

সহীহ বুখারীতে বর্ণিত আছে যে, মাসরু'ক বলেন: আমি মা আয়েশা  কে জিজ্ঞেস করলাম: মুহাম্মাদ   কি তাঁর রবকে দেখেছেন? তদুত্তরে তিনি বলেন: তোমার কথায় আমার শরীর শিউরে উঠেছে!....অতঃপর বলেন:

قوله عليه السلام: (مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ) رواه البخاري

“যে ব্যক্তি তোমাকে এমর্মে বর্ণনা দেবে যে, মুহাম্মাদ   তাঁর রবকে দেখেছেন, সে মিথ্যা বলল।” অতঃপর তিনি উপরে বর্ণিত আয়াতদ্বয় তেলাওয়াত করলেন।^{১৪১}

আমরা একটু সূক্ষ্ম দৃষ্টিতে তাকালে দেখতে পাব যে, মা আয়েশার  বক্তব্য অতি বলিষ্ঠ ও স্ব-প্রমাণ। যার সমর্থনে স্পষ্ট কুরআনী দলীল বিদ্যমান। পক্ষান্তরে ইবনে আব্বাস  -এর বক্তব্য কিছুটা অস্পষ্ট। বরং তাতে বলিষ্ঠ দলীল-প্রমাণ অনুপস্থিত।^{১৪২}

উপরন্তু সাহাবী আবু যার   বলেন:

(سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ هَلْ رَأَيْتَ رَبَّكَ قَالَ: نُورٌ أَتَى أَرَاهُ) رواه مسلم

“আমি রাসূলুল্লাহ  কে জিজ্ঞেস করলাম: আপনি কি আপনার রবকে দেখেছিলেন? তদুত্তরে তিনি   বলেন: সে তো নূর, তাঁকে কি করে দেখা যায়?^{১৪৩} অর্থাৎ আল্লাহ   পর্দাবৃত্ত। কাজেই আমি তাঁকে কিভাবে দেখতে পারি?^{১৪৪} অপর বর্ণনায় এসেছে: “আমি নূর দেখেছি।”^{১৪৫} আর নূর হচ্ছে: আল্লাহর পর্দা।^{১৪৬} সুতরাং এর অর্থ দাঁড়াবে: আমি শুধু মাত্র সেই নূরই দেখেছি; অন্য কিছু দেখিনি।

আল-আক্বীদাহ আত্ব-ত্বাহাভিয়া-এর স্বনামধন্য ভাষ্যকার ইবনু আবিল ইজ্জ বলেন:

^{১৪১} বুখারী (كتاب التفسير) হা/৪৮৫৫ ফতহুলবারী, মাকতাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ৮/৪৭২

^{১৪২} ইবনু আবিল ইজ্জ, (شرح العقيدة الطحاوية) মুআস সামাতুর রিসালাহ,-বাইরুত/২২৫

^{১৪৩} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হয/১৭৮ (২৯১) শারহ নববী, দারুল খাইর-বাইরুত ৩/৩৮৯

^{১৪৪} নববী, শারহ মুসলিম, দারুল খাইর-বাইরুত/৩৮৯

^{১৪৫} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৮ (২৯২)

^{১৪৬} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) হা/১৭৮ (২৯৪)

(فهذا صريح في نفى الرؤية)

মহানাবী ﷺ আল্লাহকে স্বচক্ষে দেখেননি, এটাই অধিক স্পষ্ট।^{১৪৭} অতঃপর তিনি উসমান ইবন সাঈদ আদদারেমীর বরাতে উল্লেখ করেন যে, এমর্মে সকল সাহাবায়ে কেরাম ﷺ-এর মাঝে ঐক্যমত প্রতিষ্ঠিত হয়েছে।^{১৪৮}

ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) আরও স্পষ্ট করে বলেন:

(وليس في الأدلة ما يقتضى أنه رآه بعينه، ولا ثبت ذلك عن أحد من الصحابة، ولا في الكتاب والسنة ما يدل على ذلك، بل النصوص الصحيحة على نفيه أدل)

“প্রিয় নাবী ﷺ স্বচক্ষে আল্লাহকে দেখেছিলেন-এর প্রমাণে কোন বলিষ্ঠ দলীল নেই। এমন কি কোন সাহাবী হতেও এর প্রমাণ মেলে না। আর কুরআন ও সুন্নাহে এমন কোন বক্তব্য নেই, যা এটা প্রমাণ করবে। বরং দীদার নিষেধের প্রামাণ্য সহীহ দলীলসমূহ অধিক বলিষ্ঠ।^{১৪৯}

আমরা ইহা স্বীকার করতে বাধ্য যে, মিরাজের পুরো ঘটনাই অলৌকিক। যা মহানাবীর নবুওয়াতীর প্রমাণে একটি বলিষ্ঠ মু'যিজা। এ সফরে প্রিয় নাবী ﷺ অনেক অলৌকিক নিদর্শনাবলী দেখেছিলেন। আল্লাহ্ ﷻ মিরাজের উদ্দেশ্য বর্ণনা প্রসঙ্গে বলেন:

﴿لَرَبِّهِ مِنْ عَالَمِينَ﴾ سورة الإسراء/١

“যাতে আমি তাঁকে (মুহাম্মাদ) আমার কিছু নিদর্শন দেখিয়ে দেই।” -বনী ইসরাঈল/১

মহানাবী ﷺ মিরাজের এই সফরে জান্নাত, জাহান্নামসহ যতসব নিদর্শন দেখেছেন, সবই অলৌকিক ও আশ্চর্যের বিষয়। কিন্তু সকল নিদর্শন ও আশ্চর্যের সেরা হতো, যদি তিনি এ সফরে মহান আল্লাহকে দেখতেন! সে কারণে, ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(ولو كان قد أراه نفسه بعينه لكان ذكر ذلك أولى)

^{১৪৭} ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআস্ সামাতুর রিসালাহ- বাইরুত/২২৪

^{১৪৮} প্রাগুক্ত/২২৪ ইমাম ইবনে তাইমিয়া মাজমুআ ফাতওয়া, ইবনে কাসীম সংকলিত ৬/৫০৭

^{১৪৯} ইমাম ইবনে তাইমিয়া (مجموع فتاوى) ইবনে কাসেম সংকলিত ৬/৫০৯, ৫১০

যদি আল্লাহ মুহাম্মদ ﷺ-এর জন্যে স্বচক্ষু নিজ দর্শন দিতেন, তাহলে (তাঁর নিদর্শনাবলীর মধ্যে) এর উল্লেখ করা অধিক উত্তম হতো! ^{১৫০}

কুরআন ও সহীহ হাদীছে কোন বর্ণনা নেই। সাহাবায়ে কেরাম ﷺ হতেও কোন স্পষ্ট উক্তি নেই; উপরন্তু নিষেধের পক্ষে বলিষ্ঠ বক্তব্য প্রদত্ত হয়েছে। সুতরাং আমরা নির্দিধায় বলতে পারি যে, মহানাবী ﷺ স্বচক্ষে আল্লাহকে দেখেন নি। স্বপ্নে আল্লাহর দীদার পেয়ে ধন্য হয়েছিলেন- ইহাই স্পষ্ট কথা। আর স্বপ্নে আল্লাহর দীদার শুধুমাত্র নাবীদের শান, যা অন্য কারো বেলায় প্রযোজ্য নয়। নাবী ও রাসূল ছাড়া অন্য কেউ দাবী করলে, তা হবে অবাস্তব উক্তি ও ডাহা মিথ্যা কথা।

মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক আখিরাতে আল্লাহর দীদার প্রসঙ্গ

হ্যাঁ, মু'মিন বান্দারা সৌভাগ্যবান। তাঁরা আখেরাতে মহান আল্লাহকে দেখতে পাবে। কোনরূপ জড়তা ছাড়া, স্বচক্ষে, নয়নভরে। আর সেটিই হবে তাঁদের জন্যে সবচেয়ে বড় নি'য়ামত। কেননা, যে সত্ত্বার তরে জীবনভর তাঁরা তাদের প্রশংসা ও ইবাদত উৎসর্গ করেছিলেন, যে সত্ত্বার দীদার তাদের চূড়ান্ত লক্ষ্য ছিল, যে সত্ত্বার প্রতিটি আদেশ ও নিষেধ যথাসাধ্য আক্ষরিক পালন করেছিলেন, কোনরূপ বাধা-বিপত্তি ও শয়তানী চক্রান্ত তাঁদেরকে সে মহান আল্লাহর এবাদত থেকে রুখতে পারেনি; না দেখে দুনিয়াতে তাঁরা আসমানী হিদায়াতের প্রতি পূর্ণ ঈমান এনেছিলেন, সে জন্যে সেদিন (রোজ ক্বিয়ামতে) আল্লাহ ﷻ তাঁর সে প্রিয় বান্দাদেরকে দীদার দিয়ে ধন্য করবেন। আর সেই দীদারই হবে মু'মিনদের জন্যে অতিরিক্ত বড় পুরস্কার। ইমাম ত্বাহাবী (রাহি:) বলেন:

(الرؤية حق لأهل الجنة بغير إحاطة ولا كيفية، كما نطق به كتاب ربنا) ﴿وَجُودَ يَوْمَئِذٍ﴾

نَاصِرَةٌ، إِلَى رَبِّهَا نَاطِرَةٌ ﴿﴾ القيامة: ২২/২৩

^{১৫০}) ইমাম ইবনে তাইমিয়া (مجموع فتاوى) ইবন কাসীম সংকলিত ৬/৫১০

“আর জান্নাতবাসীরা কোনরূপ আয়ত্বকরণ ও আকৃতি স্থির ছাড়াই আল্লাহকে দেখতে পাবে- এটা সত্য। যেমন তদ্বিশেষে আমাদের রবের কিতাব আল-কুরআন ব্যক্ত করে “সেদিন অনেক মুখমণ্ডল উজ্জ্বল হবে, তারা তার পালনকর্তার দিকে তাকিয়ে থাকবে।” (আল-কিয়ামাহ: ২২-২৩) আর এর ব্যাখ্যা আল্লাহ ﷻ যেভাবে চেয়েছেন, সেভাবে তার ইলম অনুযায়ী হবে।”^{১৫১}

কিন্তু যাদের কপালে বিড়ম্বনা আছে, তারা সহজ-সরল ও অতি স্পষ্ট বক্তব্যও মানতে রাজি নয়। শুধু শুধু অবান্তর যুক্তি দেখিয়ে ‘হকু’ হতে দূরে ছিটকে থাকবে। পক্ষান্তরে যে হকু-এর তালাশ করবে, সে হকের সন্ধান পাবে। ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(ومن تدبر القرآن طالبا للهدى تبين له طريق الحق)

“আর যে ব্যক্তি হিদায়াত লাভের আশায় আল-কুরআন নিয়ে গভীর অনুসন্ধান-অনুধাবন করে, তার জন্যে হকু-এর পথ পরিষ্কার হয়ে উঠবে।”^{১৫২}

আল্লাহর সিফাত অস্বীকারকারী মু'তাযিলি, জাহমিয়া ও তাদের অনুসারী খারেজী ইমামিয়াহগণ আখেরাতে মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক আল্লাহর দীদারকেও অস্বীকার করেন।^{১৫৩} তারা তাদের মতের সমর্থনে আল-কুরআনের দুটি আয়াতকে দলীল হিসাবে পেশ করে থাকেন। তার প্রথমটি হচ্ছে:

আল্লাহ তা'আলার বাণী:

﴿لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ، وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾

“দৃষ্টিসমূহ তাঁকে আয়ত্ব করতে পারে না, এবং তিনি দৃষ্টিসমূহকে আয়ত্ব করতে পারেন।” -আল-আন'আম/১০৩

অথচ এ আয়াতটি দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার অসম্ভব তা বুঝায়। তাছাড়া এখানে আয়ত্বকরণকে অস্বীকার করা হয়েছে; দীদারকে অস্বীকার করা হয়নি। কেননা,

^{১৫১} ইবন আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুয়াস্ মাসাতুর রিয়ালাহ-বাইরুত/২০৭

^{১৫২} ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) (العقيدة الواسطية) গৃহীত ড: সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ/৮৮

^{১৫৩} ইবন আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুয়াস্ মাসাতুর রিয়ালাহ, বাইরুত/২০৭

দীদার আয়ত্বকরণ আবশ্যক করে না। যেমন মানুষ সূর্য দেখে, কিন্তু সে তা আয়ত্ব করতে পারে না। কাজেই আমরা একথা দৃঢ়তার সাথে সাব্যস্ত করি যে, মহান আল্লাহকে দেখতে পাবে। কিন্তু এই দীদার তাঁকে আয়ত্বকরণ আবশ্যক করে না। ইহা এজন্যে যে, সাধারণ দীদার হতে আয়ত্বকরণ হচ্ছে বিশিষ্টার্থ জ্ঞাপক। সে অর্থে আয়ত্বকরণের অস্বীকৃতি দীদার-এর অস্তিত্ব প্রমাণ করে। কেননা, কোন খাছ বিষয় নিষেধ করাটা আম বিষয়ের অস্তিত্ব সম্ভব তা বুঝায়।^{১৫৪} আর যেহেতু এখানে খাছ বিষয় 'ইদরাক' বা আয়ত্বকরণকে নিষেধ করা হয়েছে। সেহেতু তা সহজে বুঝা যায় যে, আম (عام) বিষয় তথা আল্লাহর দীদার সম্ভব।

আখেরাতে আল্লাহর দীদার অস্বীকারকারীদের দ্বিতীয় দলীল হচ্ছে:
আল্লাহর বাণী :

﴿وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنظُرْ إِلَيْكَ، قَالَ لَن تَرَانِي وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي،﴾ الأعراف: ১৫৩

“(মুসা عليه السلام) বললেন: “হে আমার রব! তোমার দীদার আমাকে দাও! যেন আমি তোমাকে দেখতে পাই। আল্লাহ বললেন: তুমি আমাকে কস্মিনকালেও দেখতে পাবে না। তবে তুমি পাহাড়ের দিকে দেখতে থাকো, যদি সেটি স্থ-স্থানে স্থির থাকে, তাহলে তুমি আমাকে দেখতে পাবে।” -আল-আরাফ/১৪৩

এ আয়াতেকারীমাটি দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার অসম্ভব তা বুঝায়। কেননা, মুসা আলাইহিস্ সালাম দুনিয়াতে আল্লাহকে দেখতে চেয়েছিলেন। সে কারণে, আল্লাহ তা অসম্ভব জানিয়ে বলেন: “তুমি আমাকে কস্মিনকালেও দেখতে পাবে না।” কিন্তু আখেরাতে মু'মিন বান্দারা আল্লাহকে দেখতে পাবে- ইহা সম্ভব। কেননা, আখেরাতে মানুষের অবস্থা দুনিয়া থেকে ভিন্ন হবে।^{১৫৫}

তাছাড়া অত্র আয়াতটিতেও আখেরাতে দীদার সম্ভব-এর প্রমাণ রয়েছে। একটু সূক্ষ্ম বিচার করলে আমরা দেখতে পাবো যে, এ আয়াতটিকে দীদার অসম্ভবের পক্ষে

^{১৫৪}) শায়খ মুহাম্মদ আসসালাহ আল-উছাই মীন, (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ১/১৫৭

^{১৫৫}) ডঃ সালাহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ/৮৯

দলীল হিসেবে পেশ করার কোন যৌক্তিকতা নেই। বরং আয়াতটিতে আখেরাতে আল্লাহর দীদার সম্ভব-এ দাবীর পক্ষে যথেষ্ট যৌক্তিকতা আছে। আর তা নিম্নরূপ:

প্রথমত: দুনিয়াতে আল্লাহর দীদার প্রার্থনা করেছিলেন আল্লাহর রাসূল ও তাঁর সাথে কথোপকথনকারী মূসা ‘আলাইহিস্ সালাম। আর তিনি তথাকথিত ভ্রান্ত ফেরকা মুতায়িলা থেকে আল্লাহর বেলায় কি সম্ভব-তদ্বিষয়ে অধিক পরিজ্ঞাত ছিলেন। যদি দীদার অসম্ভব হতো, তাহলে তিনি তা প্রার্থনা করতেন না।

দ্বিতীয়ত: মহান আল্লাহ তাঁর দীদার-এর শর্তারোপ করেছেন নূরের তজল্লিতে পাহাড়টির স্থিরতার উপর। আর সেটি সম্ভব। সে কারণে, সম্ভব বিষয়ের উপরে কোন বিষয়কে শর্তারোপ করলে সেটিও সম্ভব, তা বুঝায়।

তৃতীয়ত: নিশ্চয়ই মহান আল্লাহ পাহাড়ের ন্যায় একটি জড় পদার্থের উপর তাঁর নিজ নূরের বিকিরণ ঘটিয়েছিলেন। ইহা দ্বারা একথা নিষেধ করে না যে, তিনি তাঁর মুহক্বতপ্রাপ্ত ও নির্বাচিত মু'মিন বান্দাদের উপর নিজ তাজাল্লী প্রকাশ করবেন না। বরং ইহা অধিক স্পষ্ট কথা যে, তিনি তাঁর প্রিয় বান্দাদেরকে জান্নাতে নিজ দীদার দিয়ে ধন্য করবেন, আর ইহাই যুক্তির একান্ত দাবী।

আর ব্যাকরণের দৃষ্টিকোণ থেকে যদি তারা বলেন: (لَنْ) অব্যয়টি অনন্তকালের জন্য নিষেধাজ্ঞা জ্ঞাপক। ইহা মূলতঃ দীদার হবে না- এমনটি বুঝায়। তাহলে আমরা বলবো- ভাষাগত দিক থেকেও এটি একটি মিথ্যা কথা। কেননা, মহান আল্লাহ কাফিরদের তামান্নার কথা উল্লেখ করে বলেন :

﴿وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ أَبَدًا﴾ البقرة: من الآية ৭০

“আর তারা সে মৃত্যু কখনও কামনা করবে না।” অথচ জাহান্নামে পতিত হয়ে তারা তখন মৃত্যু কামনা করবে আর বলবে: “ওহে ফেরেশতা! তোমার রব যেন আমাদের রূহ কুবজ করে নেন।” লক্ষ্য করুন! প্রথমে বলা হয়েছে, কখনও কামনা করবে না। অতঃপর শেষে কামনার কথাও উল্লেখ করা হয়েছে। সুতরাং আল্লাহর বাণী: ﴿لَنْ تَرَانِي﴾ “তুমি আমাকে কস্মিনকালেও দেখতে পাবে না।” এর অর্থ হচ্ছে: তুমি দুনিয়াতে আমাকে দেখতে ক্ষমতা পাবে না। কেননা, আল্লাহর দীদার পেতে মানুষের শক্তি ক্ষীণ। আর যদি দীদার স্বয়ং নিষেধ হতো, তাহলে আল্লাহ বলতেন: আমি দেখা দেই না, অথবা, আমায় দেখা জায়েয নয় কিংবা আমি দেখার বস্তু নই

ইত্যাদি।^{১৫৬} সুতরাং আয়াতটির মাঝে সুস্পষ্ট প্রমাণ রয়েছে যে, আখেরাতে আল্লাহর দীদার সম্ভব।

উপরন্তু আখেরাতে মু'মিনরা যে, আল্লাহকে দেখতে পাবে- সে বিষয়ে কুরআনের দলীল বিদ্যমান। আল্লাহ ﷻ এরশাদ করেন:

﴿وَجُودَ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ، إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾ القيامة: ২২/২৩

“সে দিন (কিয়ামতের) অনেক মুখমণ্ডল উজ্জ্বল হবে, তাঁরা তার রবের দিকে তাকিয়ে থাকবে।” -আল-কিয়ামাহ/২২, ২৩

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿عَلَى الْأَرْئَافِ يَنْظُرُونَ﴾ اللطفين: ৩০

“তাঁরা (জান্নাতীরা) সুসজ্জিত আসনে থেকে (আল্লাহকে) দেখতে থাকবে।” -আল-মুতাফ্ফিন/৩৫

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ﴾ يونس: ২৬: من الآية

“যারা কল্যাণ করেছে, তাদের জন্যে রয়েছে কল্যাণ এবং আরও অধিক।” -

ইউনুস/২৬

হাফিয ইবনে কাসীর (রাহি:) বলেন: আলোচ্য আয়াতে (زيادة) আরও অধিক বলতে বুঝায়- নেক আমলের ছাওয়াব দশ (১০) গুণ হতে সাতশত (৭০০) গুণ পর্যন্ত অধিক হওয়া। অনুরূপভাবে এর উপর আরও অধিক বুঝাবে যা মহান আল্লাহ তাদেরকে জান্নাতে প্রাসাদ ও হ্রদ দান করবেন এবং তাদের প্রতি তিনি সন্তুষ্ট হবেন। আর নয়ন শীতলকারী যে সমস্ত নিয়ামত তিনি তাদের জন্যে লুকাইয়ত রেখেছেন, তা দান করবেন। আর এ সমস্ত নিয়ামত যা থেকে শ্রেষ্ঠতম নিয়ামত হলো: মহান আল্লাহ মুখমণ্ডলের দিকে নযর। আর এ অর্থ গ্রহণ করেছেন খোদ সাহাবী আবু বকর, হুযাইফা ইবনুল ইয়ামান ও আব্দুল্লাহ ইবনু আব্বাস ﷺ। তাছাড়া মুজাহিদ, ইকরিমা, জাহহাক,

হাসান ও ক্বাতাদাহ (রাহি:) প্রমুখসহ সকল হকুপহী বিদ্বান (زَيَادَة) “আরও অধিক” দ্বারা আল্লাহর মুখমণ্ডলের দীদার উদ্দেশ্য করেছেন।^{১৫৭}

সহীহ হাদীছেও রাসূলুল্লাহ ﷺ হতে এ মর্মে স্পষ্ট বিবরণ বিধৃত হয়েছে।^{১৫৮}

আল্লাহ ﷻ উক্ত আয়াতের অনুরূপ বক্তব্য অন্যত্র উল্লেখ করে বলেন:

﴿لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ﴾ ২০:৩৫

“তারা (জান্নাতিরা) তথায় যা চাইবে, তাই পাবে এবং আমার কাছে রয়েছে আরও অধিক।” -ক্বা-ফ/৩৫

আলোচ্য আয়াতেও “আরও অধিক” দ্বারা আল্লাহর দীদার উদ্দেশ্য করা হয়েছে। কোন কোন বর্ণনায় আছে- প্রতি জুম্মাবার মহান আল্লাহ তাঁর জান্নাতী বান্দাদের জন্যে প্রকাশ পাবেন।^{১৫৯} তাঁরা নয়ন ভরে আল্লাহকে দেখবে।

ক্বিয়ামতে মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক আল্লাহর দীদার সম্বন্ধে মুতাওয়াতির পর্যায়ে হাদীসে বর্ণিত আছে। আর মুতাওয়াতির ঐ সমস্ত হাদীসকে বলা হয়, যা সর্বকালে এতো অধিক সংখ্যক বর্ণনাকারী বর্ণনা করেছেন, যে বর্ণনায় কোনরূপ মিথ্যার অবকাশ নেই। এক্ষণে আমরা ক্বিয়ামতে আল্লাহর দীদার প্রসঙ্গে দু'একটি সহীহ মুতাওয়াতির হাদীস পেশ করব- যা হিদায়াত গ্রহণেচ্ছুদের জন্যে দলীল হিসেবে যথেষ্ট হবে।

عن جرير بن عبد الله قال: قال النبي صلى الله عليه وسلم: (إِنَّكُمْ سَتَرُونَ رَبَّكُمْ عَيْنًا) رواه البخاري

জারীর ইবন আব্দুল্লাহ ﷺ হতে বর্ণিত, নাবী কারীম ﷺ এরশাদ ফরমান: তোমরা তোমাদের রবকে (ক্বিয়ামতে) স্বচক্ষে দেখতে পাবে।^{১৬০}

জারীর ইবন আব্দুল্লাহ-এর অপর বর্ণনায় এসেছে:

خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْلَةَ الْبُذْرِ فَقَالَ: (إِنَّكُمْ سَتَرُونَ رَبَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَمَا تَرُونَ هَذَا لَا تُضَامُونَ فِي رُؤْيَيْهِ) رواه البخاري

^{১৫৭} হাফিয ইবন কাছীর (تفسير القرآن العظيم) দারু মাক্তাবাতিল হিলাল- বাইরুত ৩/১৯৪

^{১৫৮} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) ‘মুমিনরা আখেরাতে তাদের রবকে দেখতে পাবেন- অনুচ্ছেদ হা/১৮১

^{১৫৯} হাফিয ইবন কাছীর (تفسير القرآن العظيم) দারুল মুফীদ-বাইরুত ৪/২০৪

^{১৬০} বুখারী (كتاب التوحيد) হা/৭৪৩৫ ফতহুলবারী, আল-মাক্তাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ১৩/৪৩০

“পূর্ণিমার রাতে রাসূলুল্লাহ ﷺ আমাদের নিকট বেরিয়ে এলেন এবং বললেন: রোজ ক্বিয়ামতে তোমরা তোমাদের রবকে দেখতে পাবে, যেমন ইহাকে (চাঁদকে) দেখতে পাচ্ছ। যা দেখতে তোমাদের কোন অসুবিধা হচ্ছে না।”^{১৬১}

অর্থাৎ পূর্ণিমার চাঁদ দেখতে কোন ঊকিঝুঁকি মারতে হয় না এবং কোনরূপ ভিড় হয় না। সহজেই দেখতে পাও। ঠিক সেভাবে তোমরা বিনা বাঁধায় মহান আল্লাহকে ক্বিয়ামতে দেখতে পাবে।

সহীহ মুসলিম-এ বর্ণিত হয়েছে- সাহাবীগণ ﷺ প্রিয় নাবী ﷺ কে জিজ্ঞেস করলেন:

يَا رَسُولَ اللَّهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَقَالَ: رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ؟ قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ هَلْ تُضَارُّونَ فِي الشَّمْسِ لَيْسَ دُونَهَا سَحَابٌ؟ قَالُوا: لَا يَا رَسُولَ اللَّهِ، قَالَ: فَإِنَّكُمْ تَرَوْنَهُ كَذَلِكَ) رواه مسلم

“হে আল্লাহর রাসূল! আমরা কি রোজ ক্বিয়ামতে আমাদের রবকে দেখতে পাব? তখন রাসূলুল্লাহ ﷺ বললেন: পূর্ণিমার রাতে চাঁদকে দেখতে কি তোমাদের কোন অসুবিধা হয়? তারা আরজ করলেন: না, হে আল্লাহর রাসূল। রাসূল ﷺ বললেন: মেঘমুক্ত আকাশে সূর্যকে দেখতে কি তোমাদের কোনো অসুবিধা হয়? তারা আরজ করলেন: না, হে আল্লাহর রাসূল! (অতঃপর) তিনি ﷺ বললেন: সেভাবেই তোমরা (ক্বিয়ামতে) তাঁকে (আল্লাহকে) দেখতে পাবে।”^{১৬২}

পূর্বে উল্লেখিত হয়েছে যে, জান্নাতীদের জন্যে সবচেয়ে বড় নিয়ামত হবে আল্লাহর দীদার। এ প্রসঙ্গে নিম্নোক্ত হাদীসখানা অধিক প্রতিভাত। এরশাদ হচ্ছে:

عَنْ صُهَيْبٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: (إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ قَالَ يَقُولُ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى: تُرِيدُونَ شَيْئًا أَزِيدُكُمْ، فَيَقُولُونَ: أَلَمْ تُبَيِّضْ وُجُوهَنَا أَلَمْ تُدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَتُنَجِّنَا مِنَ النَّارِ، قَالَ: فَيَكْشِفُ الْحِجَابَ فَمَا أُعْطُوا شَيْئًا أَحَبَّ إِلَيْهِمْ مِنَ النَّظَرِ إِلَى رَبِّهِمْ عَزَّ وَجَلَّ) رواه مسلم

^{১৬১} ঐ হা/৭৪৩৬

^{১৬২} সহীহ মুসলিম (كتاب الصلاة) আখেরাতে মুমিনেরা তাঁদের রবকে দেখবে- অনুচ্ছেদ হা/১৮২ (২৯৯)

“সুহাইব ؓ নাবী কারীম ؐ হতে বর্ণনা করেন। রাসূল ﷺ এরশাদ ফরমান: যখন জান্নাতবাসীরা জান্নাতে প্রবেশ করবে, তখন আল্লাহ্ ﷻ বলবেন: তোমরা কি চাও! আমি তোমাদেরকে আরও বাড়িয়ে দেই? অতঃপর তারা বলবে; আপনি কি আমাদের মুখমণ্ডল উজ্জ্বল করেননি? আপনি কি আমাদেরকে জান্নাতে প্রবেশ করাননি এবং জাহান্নাম থেকে আমাদের নাজাত দেননি? প্রিয় নাবী ﷺ বলেন: অতঃপর (আল্লাহ্) পর্দা খুলে দেবেন, (তারা আল্লাহ্র মুখমণ্ডল দেখতে পাবে)। তাদের রবের দিকে দৃষ্টিপাতের চেয়ে অধিক প্রিয় কোন বস্তু তাদেরকে দেয়া হয়নি।^{১৬৩}

পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীসকে অগ্রাধিকার দিলে এবং যেভাবে বর্ণিত হয়েছে, ঠিক সেভাবে বিশ্বাস করলে আর কোন প্রকার গুমরাহীর সম্ভাবনা থাকে না। যারা নিজেদের আকলকে অগ্রাধিকার দিয়েছেন, তারা কুরআন ও সহীহ হাদীসের ভুল ব্যাখ্যা করতে কষ্ট কসরতের ক্রটি করেননি। মহান আল্লাহতো যথার্থই বলেছেন:

﴿فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ﴾
 يونس: من الآية ٣٢

“সত্য প্রকাশের পর (উদ্ভ্রান্ত ঘুরার মাঝে) কি আছে গোমরাহী ছাড়া...। -

ইউনুস/৩২

ইমাম ত্বাহবী (রাহি:) বলেন:

(وكل ما جاء في ذلك من الحديث الصحيح عن رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فهو كما قال
 ومعناه على ما أراد، لا تدخل في ذلك متأولين بارائنا ولا متوهمين بأهوائنا)

অর্থাৎ “জান্নাতবাসী মু'মিন বান্দাহ কর্তৃক ক্রিয়ামতে আল্লাহ্র দীদার সংক্রান্ত রাসূলুল্লাহ্ ﷺ হতে যা কিছু সহীহ হাদীসে এসেছে, তা সেভাবেই, যেভাবে তিনি ﷺ এরশাদ করেছেন। আর এর অর্থ সেভাবেই যেভাবে তিনি ﷺ উদ্দেশ্য করেছেন। আমরা আমাদের নিজস্ব রায় নিয়ে তদ্বিমুখে অপব্যখ্যায় প্রবৃত্ত হব না এবং নিজেদের প্রবৃত্তি হতে ধারণাপ্রসূত কোন কথাও বলব না।^{১৬৪}

^{১৬৩} সহীহ মুসলিম (كتاب الإيمان) আখেরাতে মু'মিনেরা তাদের রবকে দেখতে পাবে- অনুচ্ছেদ হা/১৮১ (২৯৭)

^{১৬৪} ইমাম ত্বাহবী (রহঃ) “আল-আক্বীদাহ আত-ত্বাহভিয়া গৃহীত’ ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআস্সা সাতুর রিসালাহ-বাইরুত/২০৭

অতএব, আমরা নিঃসন্দেহে বলতে পারি যে, আখেরাতে জান্নাতবাসীদের জন্যে সবচেয়ে বড় নিয়ামত হবে আল্লাহর দীদার। আল্লাহ্ আমাদেরকে তোমার দীদার দিয়ে ধন্য কর। আমীন!!

কাফিররা কি আখেরাতে আল্লাহকে দেখতে পাবে?

কিয়ামতের মাঠে সমবেত সকল আদম সন্তান তিন (৩) শ্রেণীতে বিভক্ত হবে। একদল হবে খাঁটি মু'মিন, যারা প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য সকল দিক থেকেই পরিপূর্ণ মু'মিন হবেন। এ ধরনের খাঁটি মু'মিনরা কিয়ামতের মাঠে আল্লাহকে দেখতে পাবেন এবং জান্নাতে প্রবেশের পর নয়নভরে আল্লাহর দীদার পেয়ে তাঁরা ধন্য হবেন। এ ব্যাপারে কুরআন ও সহীহ হাদীছ থেকে আমরা দলীল উপস্থাপন করেছি।

* পক্ষান্তরে দ্বিতীয় আরেক দল হবে, যারা প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য সকল দিক থেকে যোলআনা কাফির। তারা জাহান্নামে যাবে এবং মহান আল্লাহর দীদার থেকে বঞ্চিত হবে। কিন্তু কিয়ামতের মাঠে তারা আল্লাহকে দেখতে পাবে কিনা- এ বিষয়ে কিছুটা ভিন্নমত রয়েছে। কারো মতে দেখতে পাবে, তবে তা হবে ক্রোধ ও শাস্তি দানের দীদার আর অপর শ্রেণীর বিদ্বানদের মতে, কিছুতেই কাফিরেরা আল্লাহকে দেখতে পাবে না। কেননা, মহান আল্লাহ বলেন:

﴿كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَمَّحُوبُونَ﴾ المطففين: ১০

“কখনও নয়, তারা সেদিন (কিয়ামতে) তাদের রব থেকে পর্দার অন্তরালে থাকবে।” -আল-মুত্তাফ্ফিন/১৫

আর তৃতীয় যে দলটি হবে, তারা হবে মুনাফিক। যারা প্রকাশ্যে ঈমানের দাবী করতো; কিন্তু অন্তরে কুফরী লুকিয়ে রাখত। এ শ্রেণীর মুনাফিকেরা কিয়ামতের মাঠে

একবার আল্লাহর দর্শন পাবে। অতঃপর তাদের ও আল্লাহর মাঝে পর্দা হবে। তখন থেকে তারা আর আল্লাহর দীদার পাবে না।^{১৬৫}

মোট কথা, আল্লাহর দীদার বলতে যে শ্রেষ্ঠতম নিয়ামত বুঝায়, সেই নিয়ামতের একমাত্র হকদ্বার হবে আল্লাহর মু'মিন বান্দাগণ। কাফির, মুনাফিক সকলেই তা থেকে বঞ্চিত হবে। আর যদিও তারা কিয়ামতের মাঠে একটিবার দেখতে পায়, তাহলে সে দেখা সম্মান ও নিয়ামতস্বরূপ হবে না, বরং ক্রোধের দীদার হবে। কেননা, আখেরাতে কাফেরদের জন্যে সম্মান-মর্যাদা ও নিয়ামতে কোন অংশ থাকবে না।

আল্লাহ ﷻ কোথায়?

মহান আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে এটি একটি অতি গুরুত্বপূর্ণ প্রশ্ন। কিন্তু আল্লাহর শানে এরূপ প্রশ্ন করা যায় কি? নিশ্চয়ই, প্রিয় নাবী ﷺ এ মর্মে জনৈকা মহিলাকে জিজ্ঞেস করেছিলেন।^{১৬৬} তবে এর জবাব কি? জবাব তো পরিষ্কার। দুর্ভাগ্য আমাদের যে, আমরা মূল উৎস থেকে এর জবাব অন্বেষণ করি না। ফলে ঘাটে ঘাটে বিভ্রমনার শিকার হই।

একজন মুসলিম যদি 'ইলাহ' সম্পর্কে সঠিক ও স্পষ্ট জ্ঞান না রাখে, তাহলে তার ঈমানের ওজন কোথায়? আর এবাদতে থাকবে কি তার একান্ততা? অথচ এহেন গুরুত্বপূর্ণ আকীদা বিষয়ক প্রশ্নে আমাদের ক'জনের তথ্যপূর্ণ জ্ঞান আছে? আমরা তো সুদীর্ঘকাল হতে যুগ পরম্পরায় মুসলিম! ইসলামের জন্য আমাদের দরদের অভাব নেই। ত্যাগ ও কুরবানীতে আমরা যথেষ্ট অবদান রাখার একান্ত সৎ সাহস রাখি, তাতে সন্দেহ নেই। কিন্তু ঈমানের মৌলিক শাখাসমূহে কতটুকু দখল আছে আমাদের-এ পরীক্ষা করবে কে?

আল্লাহ ﷻ কোথায়? এ প্রশ্ন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলে আমরা নানা রকম অদ্ভুত কথা শুনতে পাবো। কোনরূপ ভাবনা-চিন্তা ছাড়াই রূপকথার অনেক মুখরোচক কথাই

^{১৬৫} ইমাম ইবনে তাইমিয়া 'মাজমু'আ ফাতওয়া' সংকলনে ইবন কাসীম- মাকতাবাতুল মা'আরিফ-রিবাত ৬/৪৬৬-

৪৬৯ ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الطحاوية) মুআস সাসাতুর রিসালাহ-বাইরুত/২২১, শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দারু ইবনুল জাওয়াই-দাম্মাম ৩/১০৩-১০৪

^{১৬৬} সহীহ মুসলিম (كتاب المساجد ومواضع الصلاة) হা/৫৩৭(৩৩)

শুনিয়ে দেবে। কেউ বলবে: ছি! ছি! আল্লাহ সম্পর্কে এমন কথা? আবার কেউ বলবে: এটা কি একটা প্রশ্ন হলো (?) আল্লাহতো আমার সাথেই আছেন। কেউ বা আবার আচমকা বলে উঠবে আল্লাহতো মুমিনের কুলবে আছেন। আবার কারো মুখে শোনা যাবে যে, আল্লাহ সর্বত্র বিরাজমান। সবখানে সব জায়গাতে আছেন।

তাহলে কি এ প্রশ্নের সঠিক কোন জবাব নেই? না, কি যার যার জ্ঞানানুসারে যেমন খুশী তেমনি মন্তব্য করবে? আর যাচ্ছে-তাই বিশ্বাস করে বসবে? অথচ, আমরা জানি যে, ঈমানের ছয়টি রুকনের প্রথম ও প্রধান রুকন হলো 'আল-ঈমানু বিল্লাহ' বা আল্লাহর প্রতি বিশ্বাস। এটাতো নির্ভুল হতে হবে। নতুবা, বাকী সব রুকন ও কর্ম অসার প্রমাণিত হবে। মহান আল্লাহতো তাঁর সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান দানের জন্যে হিদায়াত নাযিল করেছেন। নাবী ও রাসূল প্রেরণ করেছেন। তাঁদের সাহায্যে তাঁর খাঁটি পরিচয় আদম সন্তানকে জানিয়েছেন। এরপর বিড়ম্বনা কোথায়?

বিবেকের কাছে জিজ্ঞেস- আমি কি আমার ঈমানকে পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীসের মানদণ্ডে যাচাই করে দেখেছি? নাকি, গতানুগতিক ধারায় আমিও আমার ঈমানের সৌধ নির্মাণ করেছি? যে ঈমান আমি এনেছি, তা কি আমার পরিত্রাণ নিশ্চিত করবে? নাকি, ঈমানের দাবী করার পরও জাহান্নামের খোরাকে পরিণত হতে হবে? সত্যিকার মু'মিন দাবী করলে অবশ্যই আমাকে এসব প্রশ্নের সঠিক জবাব সন্ধান করে বের করতে হবে।

শোনা কথার উপর ভিত্তি করে মন্তব্য করা বড় বোকামী। আবার খোদ স্রষ্টা সম্পর্কে অহেতুক মন্তব্য। এতো মহা অপরাধ। আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ الاعراف: من الآية ٢٣

“আর আল্লাহর প্রতি এমন কথা বলা (হারাম), যা তোমরা জান না।”

-আ'রাফ/৩৩

ইমাম ইবনুল ক্বায়্যিম (রাহি:) বলেন:

(فهو عناد ، اقبح من الشرك وأعظم إثماً عند الله)

সেটি ঔদ্ধত্যপূর্ণ উক্তি ও আল্লাহর নিকট শির্ক থেকেও অতি বড় পাপ।^{১৬৭}

^{১৬৭}) ইবনুল ক্বায়্যিম আল-জাওযীয়াহ (الجواب الكافي) দারুন নাদওয়াহ আল-জাদীদাহ-বাইরুত/১৬৯, ১৭০

আল্লাহ ﷻ কোথায় (?) এ প্রশ্নের জবাব প্রসঙ্গে সৃষ্ট ভ্রান্ত ফেরকা নিয়ে আলোচনা করা দরকার। যাতে সরলমতি মুসলিম সমাজ তাদের মিঠাবুলির বিভ্রান্তকর কথা থেকে হেফাজত থাকতে পারে। প্রথমে আমরা এরূপ ভ্রান্ত দু'টি বিশ্বাস নিয়ে কথা বলব। অতঃপর কুরআন ও সহীহ হাদীস থেকে সালাফে সালাহীন কর্তৃক গৃহীত নীতিমালার আলোকে এতদসংক্রান্ত স্বপ্রমাণ বক্তব্য পেশ করব, ইনশা-আল্লাহ।

ওয়াহদাতুল উজুদ বা অদ্বৈতবাদ

ওয়াহদাতুল উজুদ অর্থ একক অস্তিত্ব। হিন্দু শাস্ত্রে একে অদ্বৈতবাদ বলা হয়। এ মতবাদটি অতি প্রাচীনকাল হতে চলে আসছে। যুক্তি-দর্শনের খণ্ডের পড়ে অনেক ধর্মের অনুসারীরা এ মতবাদের জালে আটকা পড়েছেন। মতান্তরে এ মতবাদের সূচনা হয় গ্রীক দর্শন হতে। পৃথিবীতে অস্তিত্বসম্পন্ন সকল কিছুর উৎসমূল অনুসন্ধান করতে যেয়ে তারা বলেন যে, পানিই হচ্ছে সকল কিছুর মূল। আর প্রত্যেক বস্তুর সাথে 'ইলাহ' মিশে আছেন। তারা আরও সহজ করে বলেন: প্রত্যেক বস্তুতে বিভিন্নরূপে একক জাতের অস্তিত্ব বিরাজমান। কাজেই পৃথিবী সর্বদা বিরাজমান ইলাহ-এর তাজালী ছাড়া আর কিছু না। পৃথিবীতে একজনেরই অস্তিত্ব আছে। আর তিনি হচ্ছেন আল্লাহ। তিনি সকল সৃষ্টির আকৃতিতে আত্মপ্রকাশ পান। সুতরাং প্রত্যেক বস্তুই আল্লাহ। আর প্রত্যেক বস্তুর মাঝে যে ভিন্নতা দৃশ্যমান, তা শুধু আকার আকৃতির ভিন্নতা; মূলত: জাত হিসেবে সবই এক।^{১৬৮}

এ মতবাদ হিন্দু-বৌদ্ধ, ইয়াহুদী ও খ্রিষ্টানদের মাঝে ছড়িয়ে পড়ে; হিন্দু ধর্মে যাকে বলা হয় অদ্বৈতবাদ। অদ্বৈতবাদ অর্থ দ্বিতীয়হীন এ বিশ্বাস করা। অর্থ জীব ও ব্রহ্ম ভেদশূন্য। তাদের বিশ্বাস ব্রহ্ম ব্যতীত দ্বিতীয় কিছু নেই।

ব্রহ্মই একমাত্র সত্য, জগত মিথ্যা। হিন্দুদের মাঝে এ মতবাদের বিন্যাস করেন দার্শনিক শংকরাচার্য।^{১৬৯}

^{১৬৮} “আল-মাউসুআ আল-মুয়াস্সারাহ ফিল আদ-ইয়ানি ওয়াল মাযাহিব ওয়াল আহযাব আল-মু'আ সারাহ সম্পাদনাঃ ডঃ মার্নে আ আল-জুহানী তত্ত্বাবধানেঃ দারুন নাদওয়া আল-আলমীয়া-রিয়াদ/১/১১৬৮-১১৬৯

^{১৬৯} সংসদ বাঙ্গালা অভিধান-সাহিত্য সংসদ ঢাকা/১৪

মুসলিমদের মাঝে এ মতবাদটির আমদানী করে একশ্রেণীর সূফী দরবেশ। তাদের পুরোধা হচ্ছে: মনসুর হাল্লাজ, ইবনু আরাবী ও ইবনুল ফারেজ প্রমুখ।^{১৭০} তারা স্রষ্টা ও সৃষ্টির মাঝে কোন পার্থক্য করেন না। তারা মনে করেন খালেক ও মাখলুক বলতে কিছু নেই। সব সৃষ্টিই ‘ইলাহ’।

সূফী ইবনু আরাবী বলেন:

(العبد رب والرب عبد ، يا ليت شعري من المكلف؟)
 إن قلت عبد فذاك حق ، أو قلت رب فأني يكلف؟

অর্থাৎ “বান্দাই রব, আর রবই বান্দাহ। আহা যদি জানতাম কে দায়িত্বশীল? যদি বলি বান্দাহ, তাহলে তাই সত্য। অথবা, যদি বলি রব, তবে কোথা থেকে তিনি দায়িত্বপ্রাপ্ত হলেন?”^{১৭১}

গ্রীক দর্শন ও হিন্দুয়ানী অদ্বৈতবাদের খপ্পরে পড়ে এহেন সূফী-দরবেশরা কি আবোল-তাবোল বলতে শুরু করেছেন, তা ভাবতে অবাক লাগে! যে জন্যে দেখা যায়-এরা তাওহীদের কালিমা ‘লা-ইলাহা ইল্লাল্লাহ’ এর অর্থ করেন: “আল্লাহ ছাড়া কোন কিছুই মওজুদ বা বিদ্যমান নেই।” অর্থাৎ বিদ্যমান সকল বস্তুই ‘ইলাহ’। -নাউযুবিল্লাহ

আমাদের দেশে অনেককে এ যিক্র করতে শুনা যায় যে, ‘লা-মাওজুদা ইল্লাল্লাহ’। অথচ এর অর্থ ও উদ্দেশ্য সম্পর্কে তারা মোটেও খেয়াল রাখেন না। আসলে ‘লা-ইলা-হা ইল্লাল্লাহ’-এই কালিমায শুরুতে যে ‘লা’ বর্ণটি আছে, তা না বোধক। এর ‘ইসম’ বা উদ্দেশ্য হচ্ছে (إله) ‘ইলাহ’। আর ‘ইলাহ’ অর্থ মাবুদ বা উপাস্য। অর্থাৎ ঐ সত্তা, যার এবাদত করা হয়।^{১৭২} সুতরাং এ কালিমার শুরুতে ‘না’ বোধক বর্ণ দ্বারা সকল প্রকার ইলাহ বা উপাস্যকে অস্বীকার করা হয়েছে। অতঃপর

^{১৭০}) আল-মাউসু‘আ আল-মুয়াসসারাহ-১/১১৬৯

^{১৭১}) ইবনু আরাবী (الفتوحات المكية) গৃহীত “সূফীবাদ : কুরআন ও সুন্নাহর মানদণ্ডে” মুহাম্মদ জমীল যাইনু-ত্‌আয়েফ/১১

^{১৭২}) শায়খ আব্দুর রহমান ইবন হাসান আল-শায়েখ (فتح المجيد شرح كتاب التوحيد) দাক্কল মুসলিম-রিয়াদ/৩৩

(إلا الله) দ্বারা শুধুমাত্র আল্লাহও উল্লেখ্যাতকে স্বীকার করা হয়েছে। আর ব্যাকরণের রীতি অনুযায়ী উদ্দেশ্যের পর 'বিধেয়' আবশ্যিক। উক্ত বাক্যে সে বিধেয় উহ্য রয়েছে। আর তা হচ্ছে: الحق 'হক্ব'। এক্ষণে পুরো বাক্যের অর্থ দাঁড়াবে আল্লাহ ছাড়া কোন হক্ব মাবুদ নেই।

কিন্তু সূফী-দরবেশরা কালিমার মূল অর্থই বিগড়িয়ে ফেলেছে। তারা অদ্বৈতবাদের শ্লোগান প্রতিধ্বনিত করে বলে 'লা-মাওজুদা ইল্লাল্লাহ'। ব্যাকরণের রীতি অনুযায়ী (لا) 'লা' এর উদ্দেশ্য 'ইলাহ'। আর ইলাহ অর্থ মাবুদ, যা আমরা এখানে উল্লেখ করেছি। অথচ তারা 'ইলাহ'-এর অর্থ করেছে- 'মাওজুদ'। যার অর্থ: আল্লাহ ছাড়া কোন কিছুই 'মাওজুদ' বা বিদ্যমান নেই। অর্থাৎ পৃথিবীতে যা কিছুই অস্তিত্ব আছে, তা সবই 'আল্লাহ'। -নাউয়ুবিল্লাহ

তাইতো সূফীদের নিকট হিন্দুদের মূর্তি, ইবলীস সবই আল্লাহ! সে কারণে জনৈক সূফী বলেন: “আমাদের নিকট অগ্নিপূজক ও খ্রিষ্টান সবই সমান; কেউই খারাপ নয়। যেহেতু 'খোদা' আসমানে নেই; বরং তোমার ও আমার মাঝে লুকিয়ে থেকে সকলকে ধোঁকায় ফেলে দিয়েছেন, সেহেতু কোন একটি সেকেল (রূপ) ধরে নাও, খোদা মিলে যাবে। আসমানে কি আছে?”^{১৭০}

তাইতো দেখি, সূফী ইবনু আরাবী অদ্বৈতবাদের দীক্ষার প্রতিফলন করে বলেন:

(وقد كنت قبل اليوم أنكر ماضى
أذا لم يكن ديني إلى دينه دان
فأصبح قلبي قابلا كل حالة
فمرعى لغرلان ودير لرهبان
وبيت لأوفان وكعبة طائف
والواح تورا ومصحف قرآن)

“যখন ছিলনা তার ধর্ম
ধর্মাধীন ধর্ম আমার,
ঘৃণিতাম তখন সাথীরে আমি
দিন পূর্ব আজিকার।

^{১৭০}) আমীর হামযা ‘আল্লাহ মাওজুদ নাই’ (উর্দু) দারুস সাফা পাবলিকেশন- লাহোর/১৬৪

আজি হৃদয় আমার প্রসন্ন
 স্বাগতের তরে সব হালত,
 কি হরিণের চারণভূমি,
 কি পাদরীর গৃহ এবাদত
 মৃতিগৃহ হৌক আর
 কাবা কিছু লোকের,
 তাওরাতের খণ্ড হোক,
 পাণ্ডুলিপি কুরআনের।^{১৭৪}

আমরা লক্ষ্য করলে আরও দেখতে পাব যে, এক শ্রেণীর ‘নূরবাদী’ মুসলিমদের মাঝে এ মতবাদ সংক্রমিত হয়েছে। কেননা, তাদের ধারণা: মুহাম্মদ ﷺ নূরের তৈরি। তিনি মানুষ নন। কারো মতে, তিনি আল্লাহর যাত-ই নূরের অংশবিশেষ। তারা আরও সহজ করে বলেন: আল্লাহর নূরেই মুহাম্মাদ তৈরি, আর মুহাম্মাদের নূরে সারা জাহান তৈরি।” নাউয়ুবিল্লাহ।

তাহলে কি ইহা অদ্বৈতবাদের প্রতিদ্বন্দ্বি নয়? আল্লাহ ﷻ তা হতে পবিত্র ও সুমহান।

আল-হুলিয়াহ বা অনুপ্রবেশবাদ

এ মতবাদ অদ্বৈতবাদ থেকে কিছুটা বিশিষ্টার্থ জ্ঞাপক। অদ্বৈতবাদ সকল কিছুতেই আল্লাহ মিশে আছেন অর্থাৎ সব কিছুই ‘ইলাহ’ এ দাবী করে। পক্ষান্তরে ‘আল-হুলিয়াহ বা অনুপ্রবেশবাদ’ দাবী করে যে, আল্লাহ বিশেষ বিশেষ মাখলুকের মাঝে অনুপ্রবেশ করে একাকার হয়ে যান। ফলে অনুপ্রবিষ্ট এ মানুষ স্বয়ং যাত-ই ইলাহীতে পরিণত হয়ে যায়। খ্রিষ্টানদের মাঝে প্রথমে এ মতবাদের জন্মলাভ হয়। তারা বিশ্বাস করে যে, মসীহ ইনসান-এর মাঝে আল্লাহ অনুপ্রবেশ করেন। ফলে মসীহ অর্থাৎ ঈসা عليه السلام স্বয়ং আল্লাহ হয়ে যান।

মুসলিমদের মাঝে এ মতবাদের আমদানী করে মনসুর হাল্লাজ। সে গ্রীক দর্শন ও চরমপন্থী শী‘আদের দ্বারা প্রভাবিত হয় এবং এহেন অবাস্তব বিশ্বাসের আমদানী

^{১৭৪} মুহাম্মাদ বিন জামীল যাইনু (الصوفية في ميزان الكتاب والسنة) বঙ্গানুবাদ-তায়ফ/২৫, ২৬

করে। শী'আরা ধারণা করে যে, ইমাম জাফর সাদেক-এর মাঝে আল্লাহ প্রবেশ করেছেন। অনুরূপভাবে সাবায়ী ও নাসেরী সম্প্রদায় বিশ্বাস করে যে, স্বয়ং আলী   এর মাঝে আল্লাহ অনুপ্রবেশ করেছেন।^{১৭৫} আল্লাহ   তাদের এসব অলীক বিশ্বাস থেকে অতিপবিত্র ও সুমহান।

মনসুর হাল্লাজ আমাদের সমাজে বেশ আলোচিত ব্যক্তি। অথচ তার হাক্কীকৃত সম্পর্কে অনেকেই ওয়াক্বিফহাল নন। আসলে তার নাম আল-হুসাইন ইবন মানসুর। ডাক নাম আবু মুগীছ। পারস্য দেশে ২৪৪হি: সে জন্মগ্রহণ করে। তার দাদা একজন অগ্নিপূজক ছিলেন।^{১৭৬} এ মনসুর হাল্লাজ দাবী করে যে, আল্লাহ তার মাঝে প্রবেশ করেছেন। এ অবাস্তর দাবীর প্রেক্ষিতে সে বলে উঠে (انا الحق) “আনাল-হাক্ক”। অর্থ: আমিই ‘হক্ক’।^{১৭৭} অর্থাৎ সে যাত-ই ইলাহীতে পরিণত হয়ে গেছে। -নাউয়বিলাহ।

আল্লাহ   সর্বোচ্চে সু-মহান

দ্বৈতবাদের মূল হলো আল্লাহ্‌ই স্রষ্টা, আল্লাহ্‌ই সৃষ্টি। খালেক ও মাখলুকে কোন ভেদাভেদ নেই। এ মতবাদ যেমন গাছ, পাথর, জিন-ইনসান ও ইবলীসকে ‘ইলাহ’-এর মঞ্জিল দান করেছে, তেমনি অনুপ্রবেশবাদ তথাকথিত সূফী-দরবেশদের পূজা-অর্চনার পথ সুগম করে দিয়েছে। মহান আল্লাহর শানে উক্ত মতবাদদ্বয় চরম ধৃষ্টতার পরিচয় দিয়েছে। অথচ মহান আল্লাহ্‌ এদের ভ্রান্ত বিশ্বাস হতে অতি পবিত্র ও সুমহান।

আল্লাহ্‌   কোথায় (?) এ প্রশ্ন কি মূল আক্বীদার বিষয় নয়? যদি তা-ই হয়, তাহলে কি মানুষ নিজে আক্বীদার নীতিমালা নির্ধারণ করতে পারে? আর আল্লাহ্‌ সম্পর্কে কি যেমন খুশী তেমন বিশ্বাস পোষণ করতে পারে? কখনও নয়; বরং তা কুরআন ও সহীহ হাদীছের দলীলনির্ভর বিষয়। এতে আপন জ্ঞানের লাগামহীন ঘোড়া দৌড়াবার কারো কোন শরঈ অধিকার নেই। আল্লাহ্‌   বলেন:

^{১৭৫} ‘আল-মাউসু’আ আল-মুয়াস্সারাহ ফিল্ আদ-ইয়ানী ওয়াল মাযাহিব ওয়াল আহযাবিল মু’আসারাহ’ সম্পাদনা: ড: মানে’আ আল-জুহানী, দারুল নাদওয়া আল-আ-লামিয়া-রিয়াদ/২/১০৪৯-১০৫০

^{১৭৬} আবদুর রউফ মুহাম্মাদ ‘উসমান (عبد الرسول صلى الله عليه وسلم بين الانبياء والاطماع) দারুল ইফতা প্রকাশনী রিয়াদ/১৬৫

^{১৭৭} ‘আল-মাউসু’আ আল-মুয়াস্সারাহ ফিল্ আদ-ইয়ানী ওয়াল মাযাহিব ওয়াল আহযাবিল মু’আসারাহ’ সম্পাদনা: ড: মানে’আ আল-জুহানী, দারুল নাদওয়া আল-আ-লামিয়া-রিয়াদ/২/১০৫০

﴿وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ، إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا﴾ الإسراء: من

الآية ২৬

“যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তার পিছে পড়ো না।” -বনী ইসরাইল/৩৬

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ﴾ الأعراف: من الآية ২৩

“আর আল্লাহর প্রতি এমন কথা আরোপ করা (হারাম), যা তোমরা জান না।”

—‘আরাফ/৩৬

এক্ষণে আল্লাহ কোথায়? তিনি সকল সৃষ্টির উর্ধ্বে সমুন্নত রয়েছেন। এমর্মে কুরআন ও সহীহ হাদীছে একাধিক দলীল বিদ্যমান। এখানে আমরা বিশেষ কয়েকটি দলীল পেশ করবো। হকের সন্ধানী সকলের জন্যে তাই যথেষ্ট হবে বলে আমার একান্ত বিশ্বাস।

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَهُوَ الْغَايُ فَوْقَ عِبَادِهِ ، وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۝ ۧ﴾ الأنعام: ১৮

“তিনিই পরাক্রান্ত স্বীয় বান্দাদের উপর। আর তিনি প্রজ্ঞাময় সর্বজ্ঞ।”

আন'আম/১৮

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿يَخْفُونُ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ﴾ النحل: من الآية ৫০

“তারা তাদের রবকে ভয় করে, যিনি তাদের উর্ধ্বে আছেন।” -নাহল/৫০

প্রিয় নাবী ﷺ আল্লাহর সিফাত ‘আজ-জাহের’ (الظاهر) এর ব্যাখ্যা প্রসঙ্গে বলেন:

قوله عليه السلام: (وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ) رواه مسلم

“আর তুমিই যাহির, তোমার উপর কেউ নেই।”^{১৭৮}

^{১৭৮}) সহীহ মুসলিম (كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار) বা/২৭১০

আল্লাহ ﷻ সপ্ত আকাশের উপরে রয়েছেন। সহীহ বুখারীর বর্ণনায় এসেছে যে, মু'মিন জননী যায়নাব (রাযী আল্লাহু 'আনহা) বাকী নাবী পত্নীদের উপর গর্ব করে বলতেন:

(زَوَّجَكُنْ أَهْلِيكَنْ وَزَوَّجَنِي اللَّهُ تَعَالَى مِنْ فَوْقِ سَبْعِ سَمَوَاتٍ) رواه البخارى

“তোমাদের বিয়ে তোমাদের পরিবারপরিজন দিয়েছেন। আর আমার বিয়ে সাত আসমানের উপর হতে মহান আল্লাহ দিয়েছেন।”^{১৭৯}

আলী ﷺ ইয়ামান হতে কিছু স্বর্ণমুদ্রা পাঠালে প্রিয় নাবী ﷺ তা চার জনের মধ্যে বণ্টন করে দিলেন। জনৈক ব্যক্তি বলে উঠল, আমরা এ চারজন হতে বেশি হকদার। তখন প্রিয় নাবী ﷺ বললেন:

قوله عليه السلام: (أَلَا تَأْمَنُونِي، وَأَنَا أَمِينٌ مِنْ فِي السَّمَاءِ)

“তোমরা কি আমাকে আমানতদার মনে করো না; অথচ আমি আসমানে যিনি আছেন, তার পক্ষ থেকে আমানতদার।”^{১৮০}

অর্থাৎ আসমানের উপরে আছেন যে আল্লাহ, তিনিই আমাকে আমানতদার নিযুক্ত করেছেন।

সেজন্য প্রিয় নাবী ﷺ দু'আ করার সময় আল্লাহর প্রতি তার বিশ্বাসের প্রতিধ্বনি করে একজন অসুস্থ ব্যক্তিকে ঝাড়-ফুক দিতে যেয়ে বলেন:

قوله عليه السلام: (رَبَّنَا اللَّهُ الَّذِي فِي السَّمَاءِ تَقَدَّسَ اسْمُكَ أَمْرُكَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ كَمَا رَحِمْتَكَ فِي السَّمَاءِ فَاجْعَلْ رَحِمَتَكَ فِي الْأَرْضِ اغْفِرْ لَنَا حُوبَنَا وَخَطَايَانَا أَنْتَ رَبُّ الطَّيِّبِينَ أَنْزِلْ رَحْمَةً مِنْ رَحِمَتِكَ وَشِفَاءً مِنْ شِفَائِكَ عَلَى هَذَا الْوَجَعِ فَيَبْرَأُ) رواه ابوداؤد وأحمد وصححه الحاكم

“আমাদের রব সে আল্লাহ, যিনি আসমানে রয়েছেন। (হে আল্লাহ!) তোমার নাম অতি পবিত্র, আসমান ও যমীনে তোমার হুকুম পরিচালিত, তোমার রহমত আসমানে যেভাবে রয়েছে, ঠিক সেভাবে যমীনের উপর তুমি রহমত বর্ষণ কর!

^{১৭৯} বুখারী (كتاب التوحيد) হা/৭৪২০ ফতহুলবারী, আল-মাক্তাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ১৩/৪১৫

^{১৮০} বুখারী (كتاب المغازي) হা/৪৩৫১ ফতহুলবারী, আল-মাক্তাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ৭/৬৬৫-৬৬৬, মুসলিম (كتاب الزكاة) হা/১০৬৪ নববী, দারুল খায়ের বাইরুত ৭/১৩১

আমাদের ভুল-ভ্রান্তি ক্ষমা করে দাও! তুমি সকল পবিত্রদের রব! তোমার রহমত থেকে রহমত নাযিল কর! এ ব্যথাতুর ব্যক্তির প্রতি তোমার শিফা থেকে শিফা দান কর!”
অতঃপর লোকটি সুস্থ হয়ে উঠে।”^{১৮১}

একদা সাহাবী মু'আবিয়া ইবনে হাকাম ৷ তাঁর দ্রুতদাসীর উপর ক্রোধান্বিত হয়ে তাকে চপেটাঘাত করেন। পরক্ষণে তিনি লজ্জিত হয়ে পড়েন এবং রাসূলুল্লাহ ৷ এর সমীপে আরজ করেন যে, তাকে মুক্তি দিয়ে দিবেন কিনা? তখন রাসূলুল্লাহ ৷ বলেন: তাকে আমার কাছে নিয়ে এসো! অতঃপর তাকে নিয়ে আসলে রাসূলুল্লাহ ৷ তার ঈমানের পরীক্ষা নেন এবং জিজ্ঞেস করেন:

(أَيْنَ اللَّهُ قَالَتْ فِي السَّمَاءِ قَال مَنْ أَنَا قَالَتْ أَنْتَ رَسُولُ اللَّهِ قَالَ: أَغْتَفِيهَا فَإِنَّهَا مُؤْمِنَةٌ) رواه مسلم

“আল্লাহ কোথায়? সে বলল: আসমানে। তিনি ৷ বললেন: আমি কে? সে বলল: আপনি আল্লাহর রাসূল।

অতঃপর রাসূল ৷ মু'আবিয়া ইবনে হাকামকে লক্ষ্য করে বললেন: তাকে তুমি আযাদ করে দাও। কেননা সে, ঈমানদার।”^{১৮২}

“আল্লাহ সর্বোচ্চে সমুন্নত” এ শিরোনামের উপর পবিত্র কুরআন, সহীহ হাদীছ হতে স্বপ্রমাণ বক্তব্য পেশ করা হল। যার সাহায্যে ইহা অতি পরিষ্কার হয়ে উঠলো যে, মহান আল্লাহ সকল সৃষ্টির উর্ধ্বে সগুণ আকাশের উপর সমুন্নত রয়েছেন। কিন্তু আসমানে কোথায়? নিশ্চয়ই এর জবাবও কুরআনে ও হাদীছে রয়েছে। সুতরাং বিভ্রান্তির কোন অবকাশ নেই।

মহান আল্লাহ আরশের উপর আছেন। এ মর্মে আল্লাহ বলেন:

﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ طه: ৫

“আর রাহমান (আল্লাহ) আরশের উপর।” -ত্ব-হা/৫

^{১৮১}) আহমাদ, হাকেম, আবু দাউদ (كتاب الطب) বা/৩৮৮৬

^{১৮২}) সহীহ মুসলিম (كتاب المساجد ومواضع الصلاة) হা/৫৩৭ (৩৩)

অন্যত্র বলেন:

﴿اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ﴾^{১৮৩} الرعد: من الآية ২

“আল্লাহ, যিনি স্তম্ভ ব্যতীত আসমানসমূহকে উর্ধ্বে স্থাপন করেছেন, যা তোমরা দেখ। অতঃপর তিনি আরশের উপর উঠলেন।”-সূরা রা'আদ/২

প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (والعرش فوق الماء والله قوف العرش) رواه أبو داود

“আর আরশ পানির উপরে এবং আল্লাহ আরশের উপরে।”^{১৮৩}

আবু হুরায়রা রা. হতে বর্ণিত, নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (لَمَّا قَضَى اللَّهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ إِنَّ رَحْمَتِي غَلَبَتْ غَضَبِي) رواه البخاري

“যখন আল্লাহ মানুষ সৃষ্টি করলেন, কিতাবে লিপিবদ্ধ করলেন যা তাঁর নিকট আরশের উপর রয়েছে; নিশ্চয়ই আমার ক্রোধের উপর আমার রহমত অগ্রবর্তী হয়েছে।”^{১৮৪}

কুরআনের দুটি আয়াত ও দুটি সহীহ হাদীস পরিষ্কারভাবে ঘোষণা করছে যে, আল্লাহ ﷻ আরশে আছেন। হিদায়াতের জন্যে ইহাই যথেষ্ট। ‘আক্বীদাহ আত-ত্বাহাভীয়াহর-এর সনামধন্য ব্যাখ্যাকার ইবনু আবিল ইজ্জ বলেন:

(و من سمع أحاديث رسول الله صلى الله عليه وسلم وكلام السلف، وجد منه في اثبات العوقية ما لا ينحصر)

“আর যে ব্যক্তি রাসূলুল্লাহ ﷺ-এর হাদীছসমূহ এবং পূর্বসূরী বিদ্বানদের বাণীসমূহ শুনবে, সে তাতে আল্লাহ যে সর্বোচ্চ সুমহান-এর এতো বেশি প্রমাণ পাবে, যা সে গণনা করতে পারবে না।”^{১৮৫}

^{১৮৩}) বায়হাক্বী, দারেমী, ত্বারারানী ও আবু দাউদ

^{১৮৪}) সহীহ বুখারী (كتاب بدء الخلق) ১/৩১৯৪ ফতহুলবারী, মাকতাবুস সালাফিয়া-কায়রো ৬/৩৩১

^{১৮৫}) ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الواسطية) মুআস্সাতুর রিসালাহ-বাইরুত/৩৭৯

অতএব, ইহা সন্দেহাতীত যে, মহান আল্লাহ সকল সৃষ্টির উর্ধ্বে আরশে আযীমে রয়েছেন। আর 'আরশ সাত আসমানের উপর বিদ্যমান। কিন্তু আরশে কিভাবে আছেন এ ইলম কারো নেই। আল্লাহ তাঁর শান অনুযায়ী যেভাবে থাকা দরকার, ঠিক সেভাবেই তিনি আছেন। কোনরূপ কল্পনা ছাড়া হুবহু সেভাবে বিশ্বাস করা ঈমানের দাবী। আল্লাহ 'আরশে কিভাবে আছেন- এ মর্মে কোন বর্ণনা পবিত্র কুরআন সহীহ হাদীসে প্রদত্ত হয়নি। সুতরাং এ বিষয়ে কল্পনার ঘোড়া দৌড়ানো যাবে না। ইমাম মালেক (রাহি:) এ প্রসঙ্গে জিজ্ঞাসিত হয়ে তার জবাবে বলেন:

(الإستوى معلوم والكيف مجهول والإيمان به واجب والسؤال عنه بدعة)

“আল-ইস্তাওয়া” বা আরশে উঠা জ্ঞাত কথা, কিন্তু কিভাবে আছেন, তা অজ্ঞাত। এর উপর ঈমান আনা ফরয। আর এ বিষয়ে জিজ্ঞাসা করা বিদ'আত।”^{১৬৬}

আরশ ও কুরসী কি?

‘আরশ’ বাদশাহের সিংহাসনকে বলা হয়। যেমন আল্লাহ রাণী বিলক্বীস-এর সিংহাসন সম্পর্কে বলেন:

﴿وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ﴾ النمل: من الآية ২৩

“আর তার একখানা বড় সিংহাসন রয়েছে।” -নামল/২৩

কেউ কেউ আরশ-এর অর্থ করেছেন শূন্যস্থান। ইহা অসঙ্গতিপূর্ণ কথা। কেননা, কুরআন ও হাদীসের ভাষা আরবী। আর আরবরা ‘আরশ’ দ্বারা অনুরূপ উদ্দেশ্য করেননি; বরং তারা ‘আরশ’ বলতে এমন একটি সিংহাসনকে বুঝাতেন, যার খুঁটি রয়েছে। আর ক্বিয়ামতে আল্লাহর আরশ ফেরেশতারা বহন করবে। এ মর্মে আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَّةٌ﴾ الحاقة: من الآية ১৭

“আর সেদিন আটজন ফেরেশতা তোমার রবের ‘আরশ’ উপরে বহন করবে।”

-আল-হাক্বাহ/১৭

অন্যত্র আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَاقِبِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ﴾
الزمر: من الآية ১৫

“কিয়ামতের দিন তুমি দেখতে পাবে ফেরেশতাদেরকে তারা আরশের চার পাশে ঘিরে আছেন।’ -যুমার/৭৫

জান্নাত কামনা প্রসঙ্গে রাসূলুল্লাহ ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللَّهَ فَسَلُّوهُ الْفِرْدَوْسَ فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ) رواه البخاري

“তোমরা যখন আল্লাহর কাছে জান্নাত চাইবে, তখন ফিরদাউস কামনা করবে। কেননা, এটা সর্বোচ্চ জান্নাত ও মধ্যবর্তী জান্নাত। আর তার উপরে ‘রাহমানের’ আরশ রয়েছে।”^{১৮৭}

আল্লাহর আরশের খুঁটি আছে। সহীহ হাদীসে-এর প্রমাণ বিদ্যমান। প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (فَإِنَّ النَّاسَ يَصْغَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ تَنْشَقُّ عَنْهُ الْأَرْضُ فَإِذَا أَتَا بِمُوسَى آخِذًا بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ) رواه البخاري

অতঃপর (কিয়ামত দিবসে) মানুষেরা জ্ঞান হারিয়ে পড়ে যাবে। আর সর্ব প্রথম আমিই জ্ঞান লাভ করব। অতঃপর দেখতে পাবো যে, আমি মূসাসহ ‘আরশের খুঁটিসমূহের একটি খুঁটি ধরে আছি।’^{১৮৮}

আল্লাহর ‘আরশকে কোন সৃষ্টির সিংহাসনের সাথে তুলনা করা যাবে না। কিন্তু তাই বলে ‘আরশকে অস্বীকারও করা যাবে না। বরং আল্লাহর জন্যে যেকোন ‘আরশ থাকা দরকার, তেমনি তাঁর ‘আরশ আছে এবং তিনি এর উপর আছেন। আর এ

^{১৮৭} বুখারী (كتاب التوحيد) হা/৭৪২৩ ফতহুলবারী ১৩/৪১৫

^{১৮৮} বুখারী (كتاب الخصومات) হা/২৪১২ ফতহুলবারী আল-মাকতাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো/৮৫

‘আরশু হচ্ছে সৃষ্টিরই ছাদ। অতএব, এ ব্যাপারে কোন সন্দেহ নেই যে, আল্লাহর ‘আরশ সাত আসমানের উপরে আছে। যদি কেউ এতসব প্রমাণের পর তা অস্বীকার করে, তাহলে কি তার ঈমান থাকবে? এমর্মে ইমাম আবু হানীফা (রাহি:) জিজ্ঞাসিত হয়ে বলেছিলেন।

যে ব্যক্তি বলবে: জানিনা আমার রব আসমানে না যমীনে, তাহলে সে কুফরী করল। তিনি বলেন:

لأن الله يقول: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ طه: ৫

কেননা, আল্লাহ বলেন: আর-রাহমান ‘আরশের উপরে” (ত্ব-হা-৫)

আর তাঁর ‘আরশ সাত আসমানের উপর।”^{১৮৯}

শায়খুল ইসলাম ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি) বিষয়টি আরও পরিষ্কার করে বলেন:

قوله تعالى: ﴿الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى﴾ يبين أنه الله فوق السموات فوق العرش ، وأنه الإستواء على العرش دل على أنه الله نفسه فوق العرش .

আল্লাহর বাণী আর-রাহমান “আরশের উপর” পরিষ্কারভাবে বর্ণনা দিচ্ছে যে, আল্লাহ আসমানসমূহের উপরে আরশের উপর আছেন। আর আরশের উপর ইস্তাওয়া বা উঠা দ্বারা প্রমাণ মিলে যে, আল্লাহ স্বয়ং আরশের উপর আছেন।^{১৯০}

আল্লাহর আরশকে কোন সৃষ্টির সিংহাসনের সাথে সাদৃশ্য দেয়া যাবে না এবং আল্লাহর আরশে থাকাকেও কাল্পনিক দৃষ্টান্ত দেয়া যাবে না। ঈমানের দাবী হলো: পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীসে যেভাবে বর্ণিত হয়েছে সেভাবে কোনরূপ উপমা ছাড়াই মেনে নেয়া। আল্লাহ বলেন:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ﴾ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿الشورى: ১১﴾

“তার মতো কোন বস্তু নেই, তিনি সব শুনে ও সব দেখেন। -শুরা/১১

^{১৮৯}) মাজমু‘আ ফাতওয়া, ইমাম ইবনু তাইমিয়া, ইবনে কাসেম সংকলিত, ৫/৪৮

^{১৯০}) শায়খুল ইসলাম ইমাম ইবনে তাইমিয়া (مجموع فتاوى) ইবনে কাসেম সংকলিত, আর-রিবাত ৫/৪৮

কুরসী কি? কুরসী সম্পর্কে মহান আল্লাহ বলেন:

﴿وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ﴾ البقرة: من الآية ২০০

“তাঁর (আল্লাহর) কুরসী আসমান ও যমীন পরিব্যপ্ত।” -বাক্বারাহ/২৫৫

কিন্তু, ইহা কি? কারো মতে কুরসীই আরশ। কেননা, সাহাবী আব্দুল্লাহ ইবনে আব্বাস ؓ হতে বর্ণিত আছে, তিনি বলেন:

(الكرسي موضع القدمين ، والعرش لا يقدر قدره إلا الله)

“কুরসী হচ্ছে আল্লাহর দু'খানা পা রাখার জায়গা। আর আল্লাহ ছাড়া কেউ 'আরশ সম্পর্কে যথাযথ আঁচ করতে পারবে না।”^{১৯১}

ইমাম ইবনে জারীর ؓ সুদীর্ঘ বর্ণনা উল্লেখ করেন। তিনি বলেন:

(فإنه السموات والأرض في جوف الكرسي والكرسي بين يدي العرش، وهو موضع قدميه)

“নিশ্চয়ই আসমান ও যমীনসমূহ কুরসীর ভেতরে রয়েছে। আর কুরসী 'আরশের সামনে। সেটি আল্লাহর পা রাখার জায়গা।”^{১৯২}

সুবহানাল্লাহ! মহান আল্লাহর 'পা' রাখার জায়গা যদি আসমান ও যমীন পরিব্যপ্ত করে রাখে, তাহলে তাঁর 'আরশ কত বড় হবে। আর সে আরশের মালিক মহান আল্লাহ কতবড়! যদি মানুষ আল্লাহর বড়ত্ব ও মহত্ত্ব সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান রাখত, তাহলে তারা সকল প্রকার নাফরমানী ছেড়ে দিয়ে সদাসর্বদা আল্লাহর ভয়ে কম্পমান থাকত।

কেউ কেউ কুরসী দ্বারা ইল্ম বুঝিয়েছেন। তবে তা সঠিক নয়। আবার কেউ কুরসীকেই আরশ মনে করেছেন। মূলতঃ তা নয়; বরং কুরসী ও 'আরশ সম্পূর্ণ ভিন্ন। কুরসী 'আরশের নীচে। সে কারণে ইমাম ইবনে কাসীর বলেন:

(الصحيح أنه الكرسي غير العرش، والعرش أكبر منه)

“বিশুদ্ধ কথা এই যে, কুরসী 'আরশ নয়। 'আরশ কুরসী থেকে অনেক বড়।”^{১৯৩}

^{১৯১} তুস্বারানী হা/৫৭৯২ গৃহিতঃ ইবনু আবিল ইজ্জ (شرح العقيدة الواسطية) মুআসসাতুর রিসালাহ-বাইরুত/৩৬৯

^{১৯২} ইবনে জারীর 'তাফসীর আত-ত্বাবারী' দারুল মা'রিফাত বাইরুত ৩/৭

আল্লাহর দুনিয়ার আকাশে অবতরণ প্রসঙ্গ

প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرِ فَيَقُولُ مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ) رواه البخاري ومسلم

“আমাদের রব প্রতিরাতে দুনিয়ার আসমানে অবতরণ করেন, যখন রাতের শেষ এক-তৃতীয়াংশ অবশিষ্ট থাকে। অতঃপর তিনি বলেন: যে আমাকে ডাকবে, আমি তার ডাকের জবাব দেব। যে আমার নিকট প্রার্থনা করবে, আমি তার প্রার্থনা মঞ্জুর করব। যে আমার নিকট ক্ষমা চাইবে, আমি তাকে ক্ষমা করে দেব।”^{১৯৪}

আলোচ্য হাদীস দ্বারা বুঝা যায় যে, মহান আল্লাহ দুনিয়ার আসমানে অবতরণ করেন। ইহা তার কর্মবিষয়ক গুণ এবং হাক্কিকী। একে রূপক অর্থে গ্রহণ করার কোন অবকাশ নেই; বরং হাক্কিকী অর্থেই বিশ্বাস করতে হবে। তাই এখানে অবতরণ দ্বারা আল্লাহর স্বয়ং অবতরণ করা বুঝাবে।^{১৯৫}

কেউ কেউ আল্লাহর অবতরণ করাকে রূপক অর্থে গ্রহণ করেছেন। তাদের কেউ বলেন, আল্লাহর আদেশ অবতরণ করে। আবার কেউ বলেন: আল্লাহর রহমত নাযিল হয়। কেউবা বলেন: আল্লাহর কোন ফেরেশতা অবতরণ করেন। এসবই ভ্রান্ত কথা। আল্লাহর আদেশ ও রহমত প্রতিনিয়ত নাযিল হতে থাকে। শেষ রাতে অবতরণের সাথে খাস নয়। আর কোন জ্ঞান কি সাক্ষ্য দেবে যে, ফেরেশতা অবতরণ করে বলবে: কে আছ আমাকে ডাকবে, আমি তার ডাক শুনব- ইহা অসম্ভব। সুতরাং নির্দিধায় বলা যায় যে, তাদের সকল রূপক অর্থ ভ্রান্ত। বরং আল্লাহ স্বয়ং অবতরণ করেন- এটাই সঠিক।

^{১৯০}) ইবনে কাছীর ‘তাফসীরুল কুরআনিল আজীম’ দারু মাক্তাভাতিল হিলাল-বাইরুত ১/৪৪৯

^{১৯৪}) বুখারী (كتاب التوحيد) হা/৭৪৯৪ ফতহুলবারী, মাকমাকতাবাতুস সালাফিয়া-কায়রো ১৩/৪৭৩, সহীহ মুসলিম

(كتاب صلاة المسافرين وقصرها) রাতের সালাত ও বিতর-অনুচ্ছেদ হা/৭৫৮ (১৬৮)

^{১৯৫}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উসাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দারু ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ২/৪৪

কোন যুক্তিবাদী সীমিত জ্ঞান নিয়ে আরেকটি সন্দেহের অবতারণা করতে পারে যে, আল্লাহ্ অবতরণ করলে তাঁর উর্ধ্বে উঠা কোথায় থাকল? আর দুনিয়ার আসমানে অবতরণ করলে কি তাঁর 'আরশ খালি হয়ে যায়? আমরা বলব: ইহা আল্লাহ্ সম্পর্কে অবাস্তব কথা। আল্লাহর কর্মকে বান্দাহর কর্মের সাথে কোন অবস্থাতেই সাদৃশ্য দেয়া যাবে না এবং সৃষ্টির সাথে ক্রিয়াস করে আল্লাহকে বুঝা যাবে না। ইহা আল্লাহর শানে যুলম।

এ প্রসঙ্গে ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন:

(يقول إنه لا يخلو منه العرش، لأنه أدلة استوائه على العرش محكمة، والحديث هذا محكم، والله عز وجل لا تقاس صفاته بصفات الحق، فيجب علينا أن ينقى نصوص الاستواء على أحكامها، ومص التزول على إحكامه، وتقول: هو مستو على عرشه، نازل إلى السماء الدنيا، والله أعلم بكيفية ذلك، وعقولنا أقصر وأدنى وأحق من أنه تحيط بالله عز وجل)

“তাঁর (আল্লাহর) আরশ খালি হয় না। কেননা, ‘আরশে ইস্তাওয়া বা উঠার দলীলসমূহ ‘মুহকাম’। আর (অবতরণের) এ হাদীসটিই ‘মুহকাম’। আল্লাহর সিফাতকে মাখলুকের সিফাতের সাথে তুলনা করা যায় না। কাজেই আমাদের উপর আবশ্যিক যে, আমরা ‘ইস্তাওয়া’ বা আরশে উঠার দলীলসমূহকেও ঠিক ‘মুহকাম’ জানব। আর বলব: তিনি আল্লাহ্ তাঁর ‘আরশে, তিনি দুনিয়ার আকাশে অবতরণকারী। আল্লাহ উহার পদ্ধতি সম্পর্কে সর্বাধিক জ্ঞাত। আল্লাহকে আয়ত্ব করা থেকে আমার জ্ঞান সংকীর্ণ, সীমিত ও অতি দুর্বল।”^{১৯৬}

অতএব, কোনরূপ যুক্তি তর্কে না জড়িয়ে কুরআন ও সহীহ হাদীছে যেভাবে বর্ণিত আছে, ঠিক সেভাবেই বিশ্বাস করি! ইহাই হোক আমাদের ঈমানের একান্ত দাবী!

^{১৯৬} ইমাম ইবনে তাইমিয়া, (الرسالة العرشية) গৃহীত শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة) দারু ইবন আল-জাওযী-দাম্মাম ২/১৭

আল্লাহ তাঁর সৃষ্টির সাথে থাকা প্রসঙ্গ

আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ، يَعْلَمُ مَا يَلْجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَرْجِعُ فِيهَا، وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾
الحديد: ٤

“তিনিই (আল্লাহ) যিনি আসমান ও যমীনসমূহকে সৃষ্টি করেছেন ছয়দিনে। অতঃপর ‘আরশের উপর উঠেছেন। তিনি জানেন যা ভূমিতে প্রবেশ করে ও যা ভূমি থেকে নির্গত হয় এবং যা আকাশ থেকে বর্ষিত হয় ও যা আকাশে উত্থিত হয়। আর তোমরা যেখানেই থাকো না কেন- তিনি তোমাদের সাথে আছেন। তোমরা যা কর, আল্লাহ তা দেখেন।” -আল-হাদীছ/৪

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿مَا يَكُونُ مِنْ لَّجَوَىٰ ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا أَدْنَىٰ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا﴾ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ * إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ
المجادلة: من الآية ٧

“তিন ব্যক্তির এমন কোন পরামর্শ হয় না, যাতে তিনি চতুর্থ না থাকেন এবং পাঁচ জনেরও হয় না, যাতে তিনি ষষ্ঠ না থাকেন। তারা এতদপেক্ষা কম হোক বা বেশি হোক, তারা যেখানেই থাকুক না কেন, তিনি তাদের সাথে আছেন। তারা যা করে, তিনি ক্রিয়ামতের দিন তাদেরকে তা জানিয়ে দেবেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সম্যকজ্ঞাত।” -মুজাদলাহ/৭

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ﴾ النحل: ১২৮

“নিশ্চয়ই আল্লাহ তাদের সাথে আছেন, যারা পরহেযগার এবং যারা সৎকর্ম করে।” - নাহল/১২৮

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿وَأَصْبِرُوا * إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ﴾ الأنفال: من الآية ৬৬

“তোমরা ধৈর্য ধর, নিশ্চয়ই আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সাথে আছেন।” -আনফাল/৬৬

আল্লাহ ﷻ আরও বলেন:

﴿لَا تَخْزَنَنَّ إِنَّا اللَّهُ مَعَنَا﴾ التوبة: من الآية ٤٠

“তুমি দুশ্চিন্তা কর না, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের সাথে আছেন।” -তাওবা/৪০

আল্লাহ ﷻ অন্যত্র বলেন:

﴿لَا تَخَافَنَّ إِنِّي مَعَكُمْ أَسْمَعُ وَأَرَى﴾ طه: من الآية ٤٦

“আমি তোমাদের সাথে আছি, আমি শুনি ও দেখি।” -ত্ব-হা/৪৬

উপরোল্লিখিত আয়াতসমূহ প্রমাণ করে যে, মহান আল্লাহ তাঁর বান্দাহদের সাথে আছেন। কখনও তাঁর সাথে থাকা আমভাবে বর্ণিত হয়েছে। আবার কখনও বিশেষ বিশেষ প্রেক্ষিতে খাস করে সাথে থাকার কথা বলা হয়েছে। এক্ষণে এই সাথে থাকা দ্বারা উদ্দেশ্য কি?

আয়াতসমূহের অর্থ ও উদ্দেশ্য গভীরভাবে অনুধাবন করলে বুঝা যায় যে, আল্লাহর সাথে থাকার স্তরভেদ রয়েছে। যা উদ্দেশ্যের ভিন্নতার সাথে সংশ্লিষ্ট। সে কারণে হকুপন্থী বিদ্বানগণ উল্লেখ করেছেন যে, আল্লাহর সাথে থাকা তিন ধরনের। আর তা হচ্ছে:

(এক) আমভাবে সাথে থাকা:

ইহা মু'মিন, কাফির ফাসিক-ফাজির সকলকে শামিল করে।^{১৯৭} আর এ প্রকার সাথে থাকার উদ্দেশ্য হচ্ছে: আল্লাহ তাঁর সকল বান্দাহকে নিজ ইল্ম দ্বারা পরিবেষ্টনকারী। বান্দাহ ভাল-মন্দ যা করে, তিনি তা সম্যক পরিজ্ঞাত আছেন। উপরে উল্লেখিত (আল-হাদীদ-৪ ও মুজাদালাহ-৭) আয়াতদ্বয় সে অর্থই বহন করে।^{১৯৮}

(দুই) বিশেষভাবে সাথে থাকা:

^{১৯৭} শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দার ইবন আল-জাওযী-দামাম ১/৪০১

^{১৯৮} ডঃ সালেহ আল-ফাওযান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ/৭৯

ইহা শুধু মু'মিন বান্দাহদের জন্যে খাস। আর এ প্রকার সাথে থাকার উদ্দেশ্য হলো: সাহায্য-সহযোগিতা ও সংরক্ষণ করা। উপরে উল্লেখিত (নাহল-১২৮ ও আনফাল-৪৬) আয়াতদ্বয় সে উদ্দেশ্যের প্রতি ইঙ্গিত করে।^{১৯৯}

(তিন) অতি বিশেষ সাথে থাকা:

আর শেষোক্ত আয়াতদ্বয় (তাওবা-৪০ ও তোয়াহা-৪৬) অতি বিশেষভাবে সাথে থাকা বুঝায়। যা কোন বিশেষ ব্যক্তির সাথে খাসভাবে সাথে থাকা সংশ্লিষ্ট। আর ইহা অতি স্পষ্ট যে, সূরা তাওবার ৪০নং আয়াতখানায় যে সাথে থাকার কথা বিধৃত হয়েছে, তা হচ্ছে প্রিয় নাবী মুহাম্মাদ ﷺ এর সাথে খাস এবং সূরা (ত্ব-হার ৪৬নং আয়াতে মুসা ও হারুন ﷺকে খাসভাবে সাহায্য করার কথা উল্লেখিত হয়েছে।^{২০০}

এক্ষণে এই সাথে থাকা কি হাক্কীকি না রূপক অর্থে? অধিকাংশ বিদ্বানদের মতে রূপক অর্থে। তাই 'আল্লাহ তোমাদের সাথে আছেন'-এর অর্থ করেছেন- তিনি তোমাদের সম্বন্ধে জানেন, তোমাদের কথাসমূহ শুনে, তোমাদের কর্মসমূহ দেখেন এবং তিনি তোমাদের উপর শক্তিমান।

পক্ষান্তরে ইমাম ইবনে তাইমিয়া (রাহি:) বলেন: “আল্লাহ আমাদের সাথে আছেন- ইহা হাক্কীকী। তবে মানুষ মানুষের সাথে থাকার ন্যায় নয়; বরং আল্লাহর সাথে থাকা প্রমাণিত। তবে তিনি উর্ধ্বে আছেন। তিনি আমাদের সাথে আছেন এবং তিনি তাঁর 'আরশের উপর সকল কিছু'র উর্ধ্বে সুমহান। যে স্থানে আমরা থাকি, সেখানে আল্লাহ আছেন- এ রকম অর্থ করা কোন অবস্থাতেই সম্ভব নয়। যেহেতু আল্লাহর সাথে থাকা- ইহা তাঁর কর্মবিষয়ক গুণ। আর সৃষ্টিকে পরিবেষ্টন করা তাঁর জাতি গুণ।^{২০১}

সাথে থাকা ও নিকটবর্তী হওয়ার বিষয়টি বুঝতে হলে একথা ভালভাবে খেয়াল রাখতে হবে যে, আল্লাহকে কোন সৃষ্টির সাথে সাদৃশ্য করা যাবে না। কেননা, আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ الشورى: من الآية ١١

“তাঁর মত কিছু নেই, তিনি সব শুনে ও সব দেখেন।”-আশশূরা/১১

^{১৯৯}) প্রাণ্ড/৭৯

^{২০০}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) ১/৪০১

^{২০১}) শায়খ মুহাম্মাদ আস-সালেহ আল-উছাইমীন (شرح العقيدة الواسطية) দারু ইবন আল-জাওয়াযী-দাম্মাম ১/৪০২, ৪০৩।

সূতরাং একথা ভালভাবে স্থির করতে হবে যে, আল্লাহর সাথে থাকা তাঁর 'আরশ শূন্য হওয়া বুঝায় না। তাঁর সাথে থাকা যেভাবে তাঁর শান অনুযায়ী হয় সেভাবেই তিনি আমাদের সাথে আছেন- এ বিশ্বাস করতে হবে। সৃষ্টি সৃষ্টির সাথে থাকার ন্যায় অবান্তর বিশ্বাস বা কল্পনা করা যাবে না। কেননা, সাথে থাকা দ্বারা স্বয়ং মিশে যাওয়া বা সমান সমান হওয়া আবশ্যিক করে না। দূর থেকেও সাথে থাকা বুঝায়। যেমন আরবরা বলেন: (ما زلنا نمشى والقمر معنا) “আমরা চলছি ও চাঁদ আমাদের সাথে।” অথচ চাঁদ তো তাদের উপরে অনেক দূরত্বে আছে।^{২০২} যদি তাই হয়, তাহলে আল্লাহ ﷻ নিজ আরশে থেকে কেমন করে আমাদের সাথে থাকতে পারেন না? নিশ্চয়ই পারেন।

আল্লাহ আমাদের সাথে আছেন, আমাদের সবকর্ম দেখছেন এবং সবকিছু শুনছেন, তাঁর ইল্ম আমাদেরকে পরিবেষ্টনকারী- এ বিশ্বাসের মাঝে অনেক ফায়দা রয়েছে। বান্দাহ এ বিশ্বাসসহ কর্ম করলে সে সदा সর্বদা আল্লাহর ভয়ে থাকবে। ফলে তার পক্ষে বেশি নেকী করা ও যাবতীয় প্রকারের নাফরমানী থেকে বেঁচে থাকা সম্ভব হবে। আর ইহাই আল্লাহর মা'রিফাতের বড় শিক্ষা।

^{২০২} ডঃ সালেহ আল-ফাওয়ান (شرح العقيدة الواسطية) দারুল ইফতা প্রকাশনী-রিয়াদ/৭৯

পারিশিষ্টাংশ:

(১) মা'রিফাত লাভের ফলাফল

একজন মানুষের উপর প্রথম ও প্রধান কর্তব্য হলো তার রব সম্পর্কে জানা। বিশেষ করে একজন মুসলিমের জন্যে তা একান্তই আবশ্যিক। মহান আল্লাহর মা'রিফাত লাভের পথ ও পদ্ধতি পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীছে বর্ণিত আছে। সে আলোকে মুসলিম তার রবকে চেনার যথাসাধ্য চেষ্টা করবে। এ চেষ্টা তার জীবনে অনেক সুদূরপ্রসারী ফল বয়ে আনবে। নিচে এর কয়েকটি বিশেষ দিক উল্লেখ করা হলো:

১) শ্রেষ্ঠতম 'ইলম লাভের মাধ্যমে শ্রেষ্ঠত্ব লাভ করা:

জ্ঞানের মাধ্যমে মানুষ তার প্রতিভার বিকাশ ঘটায় এবং সমাজে মাথা উঁচু করে দাঁড়াতে পারে। জ্ঞানের পরিধি ব্যাপক ও বিস্তৃত। এর শাখা-প্রশাখা অসংখ্য ও অনেক। মান ও প্রয়োজনের দিক থেকে জ্ঞান ও জ্ঞানীর মাঝে তারতম্য অনবশ্যিক। সে তারতম্যের আলোকে জ্ঞানীর মর্যাদার ভিন্নতা প্রমাণিত হয় এবং সেভাবেই তার মূল্যায়ণ হয়। বলুনতো, আল্লাহ সম্পর্কে জানার যে জ্ঞান সেটির কি কোন তুলনা আছে? কখনই না। এ তুলনাহীন মহাসমুদ্রে যিনি অবগাহন করবেন, নিশ্চয়ই তিনি শ্রেষ্ঠত্বের মর্যাদা লাভ করবেন- তাতে কোন সন্দেহ নেই।

২) ঈমানকে সুদৃঢ় করা:

মহান আল্লাহর বড়ত্ব, মহত্ব, অনুগ্রহ ও অনুকম্পা সম্পর্কে জানার মাধ্যমে ঈমানকে দৃঢ়তর করা। মহান আল্লাহ বলেন:

﴿إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ﴾

“তাঁর বান্দাদের মধ্যে ‘ওলামারাই কেবল তাঁকে ভয় করে।” কারণ একটাই। আর তা হল: তারা মহান আল্লাহর কুদরত সম্পর্কে জেনে-বুঝে তাদের ঈমানকে মজবুত করতে পারে। পক্ষান্তরে যে আল্লাহকে চিনে না, তার অসীম

কুদরত ও মহত্ব সম্পর্কে কিছুই জানে না। সে কি করে আল্লাহর দাবী যথাযথভাবে আদায় করবে? তার ঈমানতো হতে গতানুগতিক। যাদের শানে মহান আল্লাহ বলেছেন:

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ﴾

“তারা আল্লাহর প্রতি ঈমান এনেছে বটে, তবে তাদের অধিকাংশরাই মুশরিক।”

৩) ‘আমলে পূর্ণ পরিতৃপ্তি ও পূর্ণ স্বাদ লাভ করা:

মহান আল্লাহর কুদরত সম্পর্কে না জানার কারণে আমাদের ঈমান মজবুত হয় না এবং আমলেও কোন তৃপ্তি পাইনা। আল্লাহর নামসমূহ ও অসীম গুণাবলীর সামান্য জ্ঞান থাকলেও মানুষ সেভাবে আল্লাহকে ভয় করবে এবং তাঁর জন্যে ভক্তিসহ সিজদায় অবনত হবে। প্রিয় নাবী (সাঃ) বলেন, ৩টি গুণ যার মধ্যে থাকবে, সে ঈমানের স্বাদ পাবে। এর মধ্যে প্রথমটিই হচ্ছে আল্লাহ ও তাঁর রাসূলের মুহাব্বাত সকল কিছুর উপরে স্থান দেয়া।” যদি আল্লাহ সম্পর্কে জ্ঞান না থাকে, তাহলে কি করে সে আল্লাহকে মুহাব্বাত করবে এবং ‘আমলে পরিতৃপ্তি পাবে? .

৪) আল্লাহকে সুন্দরভাবে ডাকা ও তাঁর নৈকট্য লাভে ধন্য হওয়া:

মহান আল্লাহ বলেন: ﴿وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا﴾ “আল্লাহর সুন্দর সুন্দর নামসমূহ রয়েছে। এতএব তোমরা সে নাম নিয়ে তাঁকে ডাকো।” বান্দাহ সব সময় মুখাপেক্ষী। তাকে আশ্রয় চাইতে হয়, তাকে তার ফরিয়াদ পেশ করতে হয়। কার কাছে? একমাত্র সে মহান আল্লাহর কাছে। যিনি ছাড়া অন্য কোন সত্তা নেই তার ডাক শোনার। কিন্তু সে ফরিদায় শ্রবণকারী মা'বুদ সম্পর্কে মানুষের কোন ধারণা না থাকলে সে কিভাবে ঐ অসীম সত্তার সামনে নিজেকে পেশ করবে? আর কি নামেইবা তাকে ডাকবে। আল্লাহর শানেতো ইচ্ছা করে আর কোন নাম বাড়ানো যাবে না বা তাকে কোন ক্রটিযুক্ত বিশেষণে বিশেষিত করা যাবে না। অতএব, বান্দাকে তাঁর রবের সঠিক মা'রিফাত লাভ করতে হবে। তার সুন্দর সুন্দর ও পরিপূর্ণ সিফাত সম্পর্কে যথাসাধ্য জ্ঞান লাভ করতে হবে। তবেই সে তার

রবকে ডেকে আত্মতৃপ্তি পাবে এবং রবের নৈকট্য লাভ করে ধন্য হবে। আর এটিই মা'রিফাত লাভের বিশেষ উপকারিতা।

৫) ভ্রান্ত বিশ্বাস থেকে নিজের ঈমানকে বাঁচানো:

ঈমান শ্রেষ্ঠ সম্পদ। সঠিক ঈমান না থাকলে জীবনের সকল সাধনা বরবাদ হয়ে যাবে। মহান আল্লাহ বলেন:

﴿وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ هَبَاءً مَّنْثُورًا﴾ سورة الفرقان/২৩

“আর তারা যেসব ‘আমল করেছে, তা বিচার করে দেখব। অতঃপর তা বিক্ষিপ্ত বালুকণায় পরিণত করে দেব।” সূরাহ আল-ফুরকান/২৩

আমরা যদি খেয়াল করি তা হলে দেখতে পাব- আজ সঠিক সিলেবাস থেকে সরে গিয়ে মানুষ নিজ ‘আক্বীদার বিভ্রান্তিতে ঘুরপাক খাচ্ছে। ভুল ও মনগড়া তুরীকায় আল্লাহর মা'রিফাত লাভের বৃথা চেষ্টা করে জীবনপাত করছে। ফলে সে বিভ্রান্ত হচ্ছে এবং অপরকেও বিভ্রান্ত করছে। কুরআন ও হাদীছের আলোকে আল্লাহর মা'রিফাত সম্পর্কে ধারণা না থাকার কারণে কিংবা ভুল ব্যাখ্যার মিছে জালে আটকা পড়ার কারণে অথবা দলীয় অন্ধত্ব থাকার জন্যে অনেক ‘আলেমও এ বিষয়ে ভ্রান্তিমুক্ত হতে পারছেন না। ঈমান বাঁচাবার পথ একটিই। আর তা হচ্ছে পবিত্র কুরআন ও সহীহ হাদীছের দিকে ফিরে আসা এবং সঠিক ‘আক্বীদার শিক্ষা লাভ করা। তাই আমরা নির্দিধায় বলতে পারি একজন মানুষ আহলুস সুন্নাহ ওয়াল জামাতের মূলনীতির আলোকে এ সম্পর্কে তথ্য লাভের মাধ্যমে নিশ্চিতরূপে তার ঈমান বাঁচাতে সক্ষম হবে। তথাকথিত বানোয়াট পথে নয়; বরং শরঈয়াতই একমাত্র পথ।

(২) গ্রন্থের সার-সংক্ষেপ

মা'রিফাত অর্থ জানা। এখানে আল্লাহ ﷻ সম্পর্কে দলীল প্রমাণসহ জানাকে বুঝায়। ইহা প্রত্যেক মুসলিমের উপরে ফরয। আল্লাহ ﷻ বলেন:

﴿فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ﴾ محمد: من الآية ١٩

“অতঃপর জেনে নাও যে, আল্লাহ ছাড়া প্রকৃত কোন ‘হক্’ ইলাহ নেই।” –সূরা মুহাম্মাদ/১৯

প্রিয় নাবী ﷺ বলেন:

قوله عليه السلام : (مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ) رواه مسلم

“যে ব্যক্তি মারা গেল এ অবস্থায় যে, সে জানে ‘আল্লাহ ছাড়া প্রকৃত কোন ‘হক্’ ইলাহ নেই, সে জান্নাতে প্রবেশ করবে।”^{২০৩}

কুরআন ও সহীহ হাদীস থেকে গৃহীত নীতিমালার আলোকে আল্লাহর মা'রিফাত লাভ করা হলো ঈমানের দাবী। আর ইহাই আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আত বা হকুপছীদের স্থির সিদ্ধান্ত। পক্ষান্তরে তথাকথিত সূফীদের নিকট মা'রিফাত ভিন্ন জিনিস। তারা এক্ষেত্রে কুরআন ও হাদীসের প্রতি কোন তোয়াক্বা করে না। তাদের নিকট আল্লাহর মা'রিফাত লাভের উপায় হলো- তথাকথিত কাশফ বা অন্তর্দৃষ্টি। সে কারণে, তারা মিথ্যা কাশফের দাবী করে আল্লাহ সম্পর্কে বিভ্রান্তিতে পতিত হয়েছে।

মানুষ আল্লাহর জাতসত্ত্বাকে আয়ত্ত্ব করতে পারবে না। কুরআন ও সহীহ হাদীছে আল্লাহর নাম ও গুণাবলী সম্পর্কে যেভাবে বর্ণিত হয়েছে, হুবহু সেভাবে মেনে নেয়া ঈমানের দাবী। এক্ষেত্রে যুক্তি ও দর্শনের কোন অবকাশ নেই। যুক্তিবাদী জাহমিয়া, মু'তযিলা, আশা'আরী, মাতুরেদী ও মুশাব্বিহা সম্প্রদায় ও সালাফে সালাহীন কর্তৃক গৃহীত নীতিমালার উপর স্থির না থেকে বিভ্রান্ত হয়েছে। যে কারণে, তাদেরকে আমরা এ গ্রন্থে আহলুস্ সুন্নাহ ওয়াল জামা'আতের নীতিমালা পেশ করেছি, যাতে সরলমতি মুসলিম সম্প্রদায় এ ব্যাপারে সতর্ক থাকতে পারেন।

মনে রাখতে হবে যে, আল্লাহর প্রতি ঈমান মূলতঃ চারটি বিষয়কে অন্তর্ভুক্ত করে। আর তা হচ্ছে:

১। আল্লাহর অস্তিত্বের প্রতি ঈমান।

২। আল্লাহর নাম ও গুণাবলীর প্রতি ঈমান।

৩। আল্লাহর রুব্বিয়ার তথা তার কর্মবিষয়ক গুণের প্রতি ঈমান।

৪। আল্লাহর উলূহিয়াত তথা তিনিই ইবাদতের একমাত্র হকুমদার-এ বিশ্বাস করা ও সেমর্মে 'আমল করা।

আমরা এ গ্রন্থে আল্লাহর অস্তিত্ব প্রমাণে সংক্ষিপ্ত আলোচনার পর আল্লাহর নাম ও গুণাবলী সম্পর্কে কিছুটা বিস্তারিত আলোচনা করেছি। অতঃপর এতদসংক্রান্ত বিভ্রান্তিসমূহের খণ্ডনার্থে কুরআন ও হাদীছ থেকে স্ব-প্রমাণ বক্তব্য পেশ করেছি।

আল্লাহ্ আমাদের এ খিদমতকে কবুল করুন এবং সকল মুসলিমকে 'আক্বীদার বিভ্রান্তি হতে হিফায়ত করুন! আমীন!!

সমাপ্ত ॥

٣ المكتب التعاوني للدعوة و الارشاد و توعية الجاليات بالطائف ، ١٤٣٠ هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

حسين ، محمد هارون
معرفة الله تعالى. / محمد هارون حسين. - الرياض ، ١٤٣٠ هـ

..ص ٤. .سم

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٩٠٠٨٠-٢-٦

(الكتاب باللغة البنغالية)

١- الالهوية ٢- التوحيد أ.العنوان

١٤٣٠/٢٤٠٠

ديوي ٢٤١

رقم الإيداع: ١٤٣٠/٢٤٠٠

ردمك: ٩٧٨-٦٠٣-٩٠٠٨٠-٢-٦

معرفة الله تعالى

من الكتاب والسنة على فهم سلف الأمة

تأليف:

محمد هارون حسين



مكتب الدعوة وتوعية الجاليات بالسلي
هاتف: ٢٤١٤٤٨٨ - ٢٤١٠٦١٥ تحويلة ناسوخ ٢٣٢

معرفة الله تعالى

من الكتاب والسنة
على فهم سلف الأمة



تأليف محمد هارون حسين